बागेश्वर धाम एवं मेहंदीपुर बालाजी के चरणों में समर्पित

दैनिक हिन्दी समाचार पत्र

# संस्कार उजाला

संस्कार उजाला
www.sanskarujala.com
SANSKAR UJALA
सच की हुंकार

sanskarujala@gmail.com

संस्थापक स्व० सुखराम शर्मा एवम शिवकुमार शर्मा, श्री प्रकाशवीर

सच की हुंकार

संस्थापक
स्व. श्री आर. के. शर्मा

गाजियाबाद से प्रकाशित, दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, हरियाणा, सहारनपुर, मेरठ, मुरादाबाद, बरेली, हापुड, बुलंदशहर, मथुरा आगरा, इटावा, कानपुर एंव लखनऊ से प्रसारित

वर्ष : 12 अंक : 142 | शुक्रवार 13 सितम्बर 2024, गाजियाबाद | RNI No-UPHIN / 2013 / 50466 | पेज: 8 मूल्य : 2 रुपया

## शक्ति अभ्यासः दूसरे देशों के पायलटों ने उड़ाए हमारे विमान, दिखाए करतब

### - रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने की तारीफ बोले-हमारी फोर्स दुनिया में नंबर वन

**जोधपुर।**

इंडियन एयर फोर्स की पहली मल्टीनेशनल एयर एक्सरसाइज तरंग शक्ति 2024 जोधपुर के एयरफोर्स स्टेशन पर देखने को मिली। वायुसेना की एयर एक्सरसाइज में भारत सहित आठ देश इसमें भाग ले रहे हैं, जबकि 20 अन्य देश इसे ऑब्जर्व कर रहे हैं। इंडियन एयर फोर्स के इस पहले बहुराष्ट्रीय तरंग शक्ति एक्सरसाइज में विदेशी वायु सेनाओं के चीफ भी शिरकत कर रहे हैं। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह तरंग शक्ति अभ्यास का निरीक्षण करने पहुंचे। इसके साथ ही रक्षा मंत्री ने 12 से 14 सितंबर तक चलने वाली डिफेंस एविएशन एक्सपो का भी उद्घाटन किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत के नए संकल्प के साथ भारतीय रक्षा क्षेत्र तेजी से आगे बढ़ रहा है। सेंसर, रडार और क्षेत्र में भारत काफी हद तक आत्मनिर्भर हो गया है। आज के समय में जहां कई देश युद्ध लड़ रहे हैं वहीं भारत का लक्ष्य एकजुट रहकर एकसाथ आगे बढ़ना है। उन्होंने कहा कि दुनिया बदल रही है और नई चुनौतियां सामने आ रही हैं, ऐसे में हमें अपनी साझेदारी, सहयोग का दायरा बढ़ाना होगा। हमारी वायुसेना, और हमारा रक्षा क्षेत्र आत्मनिर्भर भारत के नए संकल्प के साथ तेजी से आगे बढ़ रहा है। आज हल्के लड़ाकू विमान, सेंसर, राडार और इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर जैसी चीजों में हम बहुत हद तक आत्मनिर्भर हो चुके हैं और इन क्षेत्रों में लगातार आगे बढ़ने के लिए हम प्रयासरत हैं। तरंग शक्ति युद्धाभ्यास के दौरान गुरुवार को रक्षा मंत्री की मौजूदगी में वायुसेना ने हैरतअंगेज करतब दिखाए। भारत सहित आठ देशों के वायुसेना प्रमुखों ने एक-दूसरे के लड़ाकू विमान उड़ाए। यह नजारा देख रक्षा मंत्री ने खूब तारीफ की। उन्होंने कहा कि हमारी फोर्स दुनिया में नंबर वन है।

दैनिक संस्कार उजाला
न्यूज एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें

संस्कार उजाला समाचार पत्र में रिपोर्टर, ब्यूरोचीफ, मार्केटिंग करने वालों लोगों की जरुरत है। तुरंत संपर्क करें।

महेश शर्मा
प्रबंध संपादक
मो.नं:-9911733939

## महाकुंभ 2025: अंतरराष्ट्रीय स्तर के कुल 25 मेगा इवेंट, राष्ट्रपति मुर्मु और पीएम मोदी के कार्यक्रम

### 40 करोड़ के करीब श्रद्धालुओं के आने का अनुमान

**प्रयागराज ।**

महाकुंभ 2025 को वैश्विक स्वरूप देने के लिए तैयारी तेज हुई है। संगम नगरी में दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक जनसमागम में अंतरराष्ट्रीय स्तर के कुल 25 मेगा इवेंट होने है। इसके लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की छह इवेंट कंपनियां तय हो चुकी हैं। कंपनियों को आबद्ध करने के लिए टेंडर की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। इन मेगा इवेंट में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के एक और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दो कार्यक्रम शामिल हैं। राष्ट्रपति महाकुंभ के शुरू होने के बाद आएगी, जबकि प्रधानमंत्री शुरू तथा अंत में आएंगे। राष्ट्रपति भवन और पीएमओ से तिथि के लिए योगी शासन स्तर पर वार्ता शुरू हो गई है। वर्ष 2019 के दिव्य व भव्य कुंभ में भी प्रधानमंत्री मोदी दो बार आए थे। तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद भी परिवार के साथ आए थे। वे रात में रुके भी थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के महाकुंभ के दौरान तीन से चार कार्यक्रम तय हैं। पिछले कुंभ की ही तरह इस बार भी वे अपने कैबिनेट के सहयोगियों के साथ महाकुंभ के अंत में गंगा नहाएंगे। अगले वर्ष 2025 में 13 जनवरी से शुरू होने वाले महाकुंभ की तैयारियां अब काफी तेज हो गई हैं। मेगा इवेंट के लिए बड़े स्तर प्लानिंग भी हो रही है। इन मेगा इवेंट के लिए सिर्फ तारीख ही निर्धारित की जानी है। महाकुंभ मेलाधिकारी विजय किरन आनंद ने कहा कि महाकुंभ के दौरान 25 मेगा इवेंट के लिए तेजी से तैयारी चल रही है। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, विभिन्न प्रदेशों के राज्यपाल, उप्र के मुख्यमंत्री व उनकी कैबिनेट, अन्य राज्यों के मुख्यमंत्रियों, केंद्रीय मंत्रियों के कार्यक्रमों की तैयारी भी है। कुल छह बड़ी इवेंट कंपनियों को आयोजनों के लिए काम दिया जा रहा है। 40 करोड़ के करीब श्रद्धालुओं के महाकुंभ में आने का अनुमान योगी सरकार लगा रही है। 34 हजार करोड़ रुपये महाकुंभ 2025 को लेकर हो रहा निवेश। इतना ही नहीं 06 हजार हेक्टेयर करीब क्षेत्रफल में बसाया जाएगा महाकुंभ मेला। 25 सेक्टर में होगा पूरा मेला क्षेत्र, 30 पांटून पुलों का निर्माण कराया जाएगा। 06 लाख वाहनों की क्षमता वाले 92 पार्किंग स्थल बनाए जाएंगे। 30 स्नान घाट बनाए जाएंगे गंगा किनारे, आठ किमी नदी में बैरीकेडिंग होगी। 1.5 लाख टायलेट्स और 26 हजार स्वच्छता कर्मचारी की तैनात होगी।

**महाकुंभ के शाही स्नान पर्व**

मकर संक्रांति-15 जनवरी 2025
मौनी अमावस्या -29 जनवरी 2025
वसंत पंचमी - 03 फरवरी 2025
महाकुंभ के प्रमुख स्नान पर्व
पौष पूर्णिमा -13 जनवरी 2025
अचला सप्तमी -04 फरवरी 2025
माघी पूर्णिमा -12 फरवरी 2025
महाशिवरात्रि -26 फरवरी 2025

## मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ के घर मोदी के पहुंचने पर हंगामा बरपा

### - 75 साल में पहली बार ऐसा हुआ

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बुधवार को मुख्य न्यायाधीश के घर पहुंचे। महाराष्ट्र की पारंपरिक वेशभूषा में विघ्नहर्ता भगवान गणेश की पूजा अर्चना की। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ महाराष्ट्र के मूल निवासी हैं। अगले कुछ ही महीना में महाराष्ट्र में विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं। आरती करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ट्विटर हैंडल मे फोटो शेयर की गई है। इस फोटो के आने के बाद बड़ा विवाद शुरू हो गया है। सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने इस पर आपत्ति जताई है। इसके अलावा अन्य राजनीतिक दलों की भी तीव्र प्रतिक्रिया देखने को मिली है। सुप्रीम कोर्ट में केंद्र एवं राज्य सरकारों के हजारों मामले लंबित हैं। 75 साल के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है। जब प्रधानमंत्री मुख्य न्यायाधीश के घर गणेश पूजा के लिए पहुंचे। उन्होंने पूजा की फोटो सार्वजनिक की है। इसके बाद से न्यायपालिका और सरकार के बीच संबंधों को लेकर एक नया विवाद शुरू हो गया है। सोशल मीडिया और अन्य माध्यमों में इसको लेकर तरह-तरह की प्रतिक्रिया हो रही है।

## चुनाव से पहले 3 आतंकी ठिकाने मिले

### पेड़ की जड़ में गड्ढा खोदकर रह रहे थे टेररिस्ट; 10 छोटे रॉकेट, 20 ग्रेनेड बरामद

**श्रीनगर ।** सेना ने जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव के 6 दिन पहले कुपवाड़ा, कुलगाम और पुलवामा जिले में गुरुवार को आर्तकियों के 3 ठिकानों को खोज निकाला। कुपवाड़ा से भारी मात्रा में गोला-बारूद और विस्फोटक बरामद किया। वहीं, कुलगाम, पुलवामा में सिर्फ ठिकाने का पता चला। कुपवाड़ा के केरन सेक्टर में आर्तकियों ने यह ठिकाना एक बड़े पेड़ की जड़ में गड्ढा खोदकर बनाया था। जड़ में 5 से 6 फीट जगह मिली। यहां से एके-47 के 100 से ज्यादा कारतूस, 20 हैंड ग्रेनेड और 10 छोटे रॉकेट मिले।

**इलेक्शन ऑब्जर्वेजर से मिली थी जानकारी**

इंटेलिजेंस इनपुट के आधार पर, सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने जॉइंट ऑपरेशन चलाया। सेना को यह खुफिया जानकारी जम्मू-कश्मीर में तैनात एक इलेक्शन ऑब्जर्वेजर से मिली थी। जम्मू-कश्मीर की 90 विधानसभा सीटों पर 3 फेज में 18 सितंबर, 25 सितंबर और 1 अक्टूबर को वोट डाले जाएंगे। रिजल्ट 8 अक्टूबर को आएगा।

## हेलिकॉप्टर लूट ट्रक में लाद ले गए

**मेरठ ।** यूपी के मेरठ में पहली बार हेलिकॉप्टर लूट का मामला सामने आया है। यहां पायलट रवींद्र सिंह ने मेरठ एसएसपी को तहरीर दी। आरोप लगाया कि डॉक्टर भीमराव अंबेडकर हवाई पट्टी पर जबरन 15-20 लोग घुस आए। उन्होंने मारपीट की। इसके बाद हेलिकॉप्टर के पुर्जे खोलने लगे। रवींद्र सिंह ने बताया कि दबंगों ने मुझे धमकाते हुए कहा कि शांत खड़े रहो, वरना तेरी दोनों टांगें काट दूंगा। इसके बाद हेलिकॉप्टर के पार्ट को अलग किया, ट्रक में भरा और लादकर ले गए। 16 टायर ट्रक राजस्थान नंबर का था।

## उपद्रवियों ने स्वास्थ्य केंद्र में आग लगाई

### इंफाल में तनाव के बीच सन्नाटा

**इंफाल ।** मणिपुर के जिरीबाम जिला स्थित बोरोबेक्रा में उपद्रवियों ने बुधवार रात करीब 12.50 बजे एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में आग लगा दी। घटना पुलिस चौकी से महज 150 मीटर दूरी हुई। इसमें किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। घटना के पीछे कुकी समुदाय के लोगों के शामिल होने की आशंका है। दूसरी तरफ, राजधानी इंफाल में पूरे दिन सन्नाटा पसरा रहा। इंफाल ईस्ट और वेस्ट में कर्फ्यू जारी है। मैतेई बहुल 5 जिलों में इंटरनेट बंद है। राज्यपाल एल. आचार्य असम चले गए। उनके पास मणिपुर गवर्नर का अतिरिक्त प्रभार है। इंफाल में 10 सितंबर को सुरक्षाबलों और स्टूडेंट्स में हिंसक झड़प हुई थी। इसमें करीब 100 स्टूडेंट्स घायल हुए थे। इस प्रदर्शन में इंफाल घाटी के 100 से ज्यादा स्कूल-कॉलेजों के बच्चे शामिल थे। सीआरपीएफ डीआईजी का कहना है कि हालात तनावपूर्ण, लेकिन नियंत्रण में हैं।

## कठुआ एनकाउंटर में बड़ा खुलासा.....आंतकियों के पास मिली एम4 कार्बाइन

**श्रीनगर ।** जम्मू कश्मीर के कठुआ में पाकिस्तान की एक बड़ी साजिश सामने आई है। कठुआ एनकाउंटर को लेकर जम्मू कश्मीर पुलिस ने एक बहुत बड़ा खुलासा किया है। एनकाउंटर में मारे गए आर्तकियों के पास से नाटो के हथियार बरामद हुए हैं। आर्तकियों के पास से एम4 कार्बाइन बरामद हुई है। एम4 कार्बाइन का इस्तेमाल नाटो की सेना के द्वारा होता है। पिछले कई दिनों से देखा जा रहा है कि जम्मू कश्मीर में आतंकी वारदातें बढ़ गई हैं। सेना के काफिले पर हमला बढ़ता जा रहा है। अब जब एनकाउंटर में जैश के दो आतंकी मारे गए। उनके पास से जो दो हथियार बरामद हुए हैं, उस लेकर सबसे बड़ा खुलासा हुआ है।

**एम4 कार्बाइन**

एम4 कार्बाइन 1980 के दशक के दौरान अमेरिका में विकसित एक हल्की, गैस-संचालित, पत्रिका-संचालित कार्बाइन है। यह अमेरिकी सशस्त्र बलों का प्राथमिक पैदल सेना हथियार है। एम4 को नजदीकी लड़ाई के लिए डिजाइन किया गया है और यह बहुत ही कुशल है।

**आर्मी ने 2 आतंकी ठोका**

उधमपुर जिले के ऊपरी इलाकों में जारी मुठभेड़ में जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) संगठन से जुड़े दो आतंकवादी मारे गए। घने जंगल में आतंकवादियों के खिलाफ यह पहला सफल अभियान है, जहां पिछले छह महीनों में छह से अधिक मुठभेड़ हो चुकी हैं। गत 28 अप्रैल को मुठभेड़ में एक ग्राम रक्षा रक्षक और 19 अगस्त को एक सीआरपीएफ इंस्पेक्टर की जान चली गई थी।

## अखिलेश के कारण टूटा गठबंधन..... फोन उठाना बंद किया : मायावती

**लखनऊ ।**

बसपा सुप्रीमो और पूर्व सीएम मायावती ने सपा से गठबंधन टूटने को लेकर बड़ा खुलासा किया है। मायावती ने बताया कि अखिलेश यादव के कारण गठबंधन टूट गया है। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव 2019 में महज पांच सीटें मिलीं। इससे दुखी होकर अखिलेश ने उनका फोन भी उठाना बंद कर दिया था। मायावती ने इसका दावा अपनी बुकलेट में किया है। यह बुकलेट उपचुनाव और 2027 विधानसभा के लिए पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को बांटी जा रही है। मायावती ने कहा है कि 2019 लोकसभा चुनाव में सपा को पांच सीटें मिलीं। वहीं बसपा को 10 सीटें जीती थी। उन्होंने कहा कि यही बड़ी वजह बन थी कि जब सपा के वरिष्ठ नेताओं ने फोन उठाना बंद कर दिया था। इस बुकलेट में मायावती ने सपा के साथ दो बार हुए गठबंधन के टूटने की वजह भी जाहिर की है। दरअसल, पिछले दिनों लखनऊ में पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में बसपा सदस्यों को 59 पन्नों की बुकलेट वितरित की गई। इस बुकलेट में मायावती ने अपनी अपील में सपा के साथ गठबंधन को फिर से याद किया, जिसकी शुरुआत 1993 में हुई जब कांशीराम ने मुलायम सिंह यादव के साथ गठबंधन किया था। मायावती ने कहा है कि उस गठबंधन के टूटने वजह लखनऊ गेस्ट हाउस कांड था। मायावती की अपीलों और संदेश को लेकर राजनीति गलियारों में चर्चा है। कहा जा रहा है कि मायावती इस बुकलेट के जरिए 2027 के यूपी विधानसभा चुनाव से पहले पार्टी को मजबूत करना चाह रही हैं। यह एक रणनीतिक कदम के रूप में देखा जा रहा है।

## चार कार, दो करोड़ रुपए की अचल संपति की मालकिन हैं विनेश फोगाट

### कांग्रेस प्रत्याशी ने जुलाना सीट से नामांकन भरा

चंडीगढ़ ।

हरियाणा विधानसभा चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी विनेश फोगाट ने जींद जिले की जुलाना सीट से नामांकन भर दिया है। विनेश ने नामांकन भरते वक्त अपने हलफनामे में अपनी संपति का ब्यौरा दिया है। विनेश के पास तीन चार पहिया वाहन हैं। इनमें से एक का वह लोन भी चुका रही हैं। विनेश के पास 35 लाख रुपए की कीमत वाली वोल्वो एक्ससी 60, ह्यूंडई क्रेटा (12 लाख) और टोयोटा इनोवा (17 लाख) है। इसके अलावा एक स्कूटी भी है। फोगाट इनोवा गाड़ी का 13 लाख रुपए लोन चुकता कर रही हैं। विनेश के पास दो करोड़ रुपए की अचल संपति है, जिसमें सोनीपत में एक प्लॉट भी शामिल है। विनेश ने बताया कि उनके पति सोमवीर राठी के पास 19 लाख रुपए की महिंद्रा स्कॉर्पियो है। उनके पति की कमाई 3 लाख 44 हजार दिखाई गई है। इसके अलावा विनेश के पास ज्वेलरी, निवेश, कैश और बैंक जमा को मिलाकर कुल एक करोड़ 10 लाख रुपये हैं। चुनावी शपथ पत्र में विनेश के मुताबिक उनके पास 35 ग्राम गोल्ड है। बाजार में इसकी कीमत तकरीनब 2 लाख 24 हजार रुपये है। इसके अलावा उनके पास 50 ग्राम चांदी है, जिसकी बाजार में वैल्यू लगभग चार हजार रुपये है। नामांकन दाखिल करने के बाद जुलाना में जनसभा को संबोधित कर विनेश फोगाट ने कहा कि कुश्ती हमें सिखाती है कि दुश्मन को हल्के में नहीं लेना चाहिए। अपनी बहू से ज्यादा जुलाना के लोग मुझे अपनी बेटी मानते हैं। विनेश चरखी दादरी जिले के बलाली से हैं, लेकिन उनका ससुराल जुलाना में है। जुलाना में बख्ता खेड़ा गांव उनके पति सोमवीर राठी का पैतृक गांव है। पहलवानों के विरोध-प्रदर्शनों का जिक्र करते हुए विनेश ने कहा कि उन्हें सड़कों पर संघर्ष करना पड़ा और लाठियां खानी पड़ीं।

## माओवादियों की सेंट्रल कमेटी ने जारी किए देशभर के आंकड़े, लिखा-अब संगठन कमजोर हुआ

### 20 साल में 5249 नक्सली मरे, 3090 जवानों की हत्या

**जगदलपुर ।**

देशभर में साल 2004 से 2024 तक 5249 नक्सलियों की मौत हुई है। इनमें 1000 महिला माओवादी भी शामिल हैं। पुलिस के आक्रामक होने से नक्सली संगठन कमजोर हो गया है। नक्सलियों की केंद्रीय कमेटी ने 25 पेज का बुकलेट जारी कर अपने 20 साल के नफा-नुकसान का जिक्र किया है।

नक्सलियों की केंद्रीय कमेटी ने कहा कि, बस्तर के बुरकापाल, टहकवाड़ा, झीरमघाटी, मीनपा समेत महाराष्ट्र, ओडिशा, झारखंड समेत कई राज्यों में छोटे बड़े कुल 4073 घटनाएं हुई। जिसमें कुल 3090 जवानों की हत्या और 4077 जवानों को घायल किया। जवानों के पास से 2365 आधुनिक हथियार और 1 लाख 19 हजार 682 कारतूस लूटा गया।

**20 साल में 22 बड़े नक्सलियों की गई जान**

20 सालों में उनके 22 बड़े नक्सलियों की जान गई है। इनमें 8 पोलित ब्यूरो मेंबर हैं। इसके अलावा 48 एसजेडसी, एससी सदस्य, 14 आरसी मेंबर, 167 डीवीसी सदस्य, 26 सब जोनल कमेटी सदस्य, 505 एसीएम और पीपीसी सदस्य, 887 पीएलजीए मेंबर और 3596 लड़ाके शामिल हैं। साल 2021 से 2024 के बीच 261 जवानों की हत्या की गई। 516 जवानों को जख्मी किया। 25 आधुनिक हथियार लूटे गए।

**जवान घेराबंदी कर रहे, संगठन की बढ़ी परेशानी**

नक्सलियों की इस बुकलेट के 14वें पेज में लिखा है कि, हमारे इलाके में 1500 से लेकर 3000 और कभी इससे भी ज्यादा जवानों को भेजा जाता है। जवान 20 से 25 गांवों को घेरते हैं। 12 से 15 किमी के दायरे को कैप्चर करते हैं। उन्होंने बताया कि, जवान कार्डन, सर्च और किल का नियम अपना कर काम कर रहे हैं। जिससे नक्सल संगठन को भारी नुकसान हो रहा है। पार्टी के काम में अड़चनें आ रही हैं। खतरा बढ़ गया है।

**नक्सलियों ने माना मजबूती से नहीं कर पाए मुकाबला**

नक्सलियों ने संगठन को हुए नुकसान की समीक्षा भी की है।

साल 2004 से 2011 तक नक्सल संगठन ने जितने हमले किए सभी में सफलता मिली। तब तक वे काफी हद तक मजबूत थे। नक्सलियों की समीक्षा में पुलिस आक्रामक हुई है।

जिससे उनके लाल लड़ाकों ने सरेंडर किया है। पुलिस के आक्रामक होने का मजबूती से मुकाबला न करने का जिक्र किया है। वहीं, 21 सितंबर से 20 अक्टूबर तक संगठन का 20वां स्थापना दिवस मनाने की बात कही है।

# कालचक्र का बदलता स्वरूप- अमेरिका में लगातार बिगड़ती आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति

प्रहलाद सबनानी

**अमेरिका में उच्च आय वाले क्षेत्रों में रोजगार के अवसर लगातार कम हो रहे हैं। अमेरिका में प्रति घंटा औसत मजदूरी की दर वर्ष 1973 से (मुद्रा स्फीति की दर के समायोजन के पश्चात) लगभग नहीं के बराबर बढ़ी है। अमेरिका में आय की असमानता लगातार बढ़ती जा रही है। फे-डरल बजट घाटा अब अरक्षणीय (अनसस्टेनेबल) स्तर पर पहुंच गया है।**

विश्व में कई गतिविधियां एक चक्र के रूप में चलती रहती है। एक कालखंड के पश्चात चक्र कभी नीचे की ओर जाता है एवं एक अन्य कालखंड के पश्चात यह चक्र कभी ऊपर की ओर जाता हुए दिखाई देता है। विदेशी व्यापार के मामले में वर्ष 1750 तक पूरे विश्व में भारत की तूती बोलती रही है, परंतु इसके पश्चात यूरोपीयन देशों ने विस्तारवादी नीतियों के चलते अपने आर्थिक हित साधते हुए विभिन्न देशों पर अपना कब्जा जमा लिया। ब्रिटेन, फ्रांन्स, डच जैसे देशों ने एशियाई देशों एवं कुछ अफ्रीकी भू भाग पर पर अपना कब्जा जमाया तो स्पेन आदि देशों ने अमेरिकी महाद्वीप पर अपना कब्जा जमाया। समय के साथ चक्र कुछ इस प्रकार चला कि वर्ष 1950 आते आते अमेरिका पूरे विश्व में सबसे अमीर देशों की श्रेणी में शामिल हो गया और ब्रिटेन, जिसके बारे में कभी कहा जाता था कि ब्रिटेन की महारानी के राज्यों में सूरज कभी डूबता नहीं है, का आर्थिक दृष्टि से ढलान शुरू हो गया और आज ब्रिटेन के आर्थिक एवं सामाजिक ढांचे की स्थिति हम सभी के सामने है। ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था हाल ही में पूरे विश्व में छठे स्थान पर पहुंच गई है तथा अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी के पश्चात भारत आज विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। जबकि वर्ष 1750 के पश्चात जब ब्रिटेन ने भारत पर अपना कब्जा स्थापित कर लिया था उसके बाद भारत की स्थिति यहां तक बिगड़ी थी कि पूरी विश्व की अर्थव्यवस्था में भारत के विदेश व्यापार की हिस्सेदारी वर्ष 1750 के 32 प्रतिशत से घटकर वर्ष 1947 में 3 प्रतिशत के नीचे आ गई थी। परंतु, एक बार फिर कालचक्र अपना रंग दिखाता हुआ नजर आ रहा है और अमेरिकी अर्थव्यवस्था के साथ ही वहां का सामाजिक ताना बाना भी छिन्न भिन्न होता हुआ दिखाई दे रहा है।

दरअसल, अमेरिका ने पूंजीवादी नीतियों को अपनाकर अपने नागरिकों में केवल आर्थिक उन्नति को ही विकास के एकमात्र मार्ग के रूप में चुना था, इससे वहां के नागरिकों में किसी भी प्रकार से धन अर्जन करने की प्रवृत्ति विकसित हुई एवं सामाजिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ताना बाना छिन्न भिन्न हो गया। परिवार व्यवस्था समाप्त हो गई जिसका परिणाम आज हमारे सामने हैं कि आज अमेरिका में नागरिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजना, मेडीकेयर योजना, मेडीकैड योजना, प्रौढ़ नागरिकों को सुविधाएं एवं केंद्र (फेडरल) सरकार के कर्मचारियों को अदा की जा रही पेंशन, आदि योजनाएं सरकार द्वारा नागरिकों के हितार्थ अमेरिका में चलानी पड़ रही हैं। इन योजनाओं पर खर्च किए जा रहे 2 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर की भारी भरकम राशि का लाभ करोड़ों अमेरिकी नागरिक प्रतिवर्ष उठा रहे हैं। यह राशि अमेरिकी सकल घरेलू उत्पाद का 14 प्रतिशत है। सुरक्षा की मद पर भी अमेरिका द्वारा 70,000

करोड़ अमेरिकी डॉलर का खर्च प्रतिवर्ष किया जाता है। बेरोजगारी बीमा लाभ योजना पर भी भारी भरकम राशि अमेरिकी सरकार द्वारा प्रतिवर्ष खर्च की जाती है। अमेरिका में सेवा निवृत्त हो रहे कर्मचारियों की संख्या लगातार बढ़ रही है जिसके कारण इस मद पर व्यय की जाने वाली राशि में भी बेतहाशा वृद्धि हो रही है, साथ ही लगातार बढ़ रहा सुरक्षा खर्च, स्वास्थ्य सेवाओं पर व्यय की लगातार बढ़ रही राशि के बीच वर्तमान में कर की दरों में वृद्धि नहीं करने के कारण बजटीय घाटे पर दबाव बढ़ता जा रहा है। इकोनोमिक रिपोर्ट आफ द प्रेजीडेंट के अनुसार अमेरिका में वर्ष 2000 में 23,600 करोड़ अमेरिकी डॉलर का बजट आधिक्य था जो वर्ष 2001 में घटकर 12,600 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो गया। परंतु, वर्ष 2002 में एक बार जो 15,800 करोड़ अमेरिकी डॉलर का बजट घाटा प्रारम्भ हुआ तो इसके बाद से वह बढ़ता ही गया है। वर्ष 2009 में तो बजट घाटा बढ़कर 141,300 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो गया, वर्ष 2010 में 129,400 करोड़ अमेरिकी डॉलर, वर्ष 2011 में 130,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर, वर्ष 2012 में 108,700 करोड़ अमेरिकी डॉलर एवं वर्ष 2020 में 313,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर, वर्ष 2021 में 277,000 करोड़ अमेरिको डॉलर एवं वर्ष 2022 में 188,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहा है।

अमेरिका में प्रति परिवार वास्तविक औसत आय वर्ष 1973 में (वर्ष 2015 में डॉलर की कीमत पर) 50,000 अमेरिकी डॉलर थी। अमेरिका के लगभग आधे परिवारों की वास्तविक औसत आय 50,000 अमेरिकी डॉलर से अधिक थी एवं शेष आधे परिवारों की 50,000 अमेरिकी डॉलर से कम थी, जिससे आय की असमानता आज की तुलना में कम दिखाई देती थी। वर्ष 1973 से वर्ष 2015 तक अमेरिका में उत्पादकता में 115 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है जबकि परिवारों की औसत आय (मुद्रा स्फीति के समायोजन के बाद) केवल 11 प्रतिशत ही बढ़ी है। यह भी, इस बीच, अमेरिकी महिलाओं को भारी मात्रा में प्रदान किए गए रोजगार के अवसरों के चलते सम्भव हो पाया है। इस प्रकार, मुद्रा स्फीति के समायोजन के पश्चात, अमेरिका में वर्ष 1973 के पश्चात औसत आय में वृद्धि नगण्य ही रही है। वर्ष 1973 से वर्ष 2007 के बीच अमेरिकी मध्यवर्गीय परिवारों ने उपभोग पर औसत खर्च को दुगने से भी अधिक कर दिया है। जिसके कारण इन परिवारों की बचत दर 10 प्रतिशत से घट कर 2 प्रतिशत हो गई है। बल्कि कई परिवारों को तो अपने मकानों पर ऋण लेकर एवं क्रेडिट कार्ड के माध्यम से ऋण लेकर भी काम चलाना पड़ रहा हैं।

जोसेफ शूम्पटर के अनुसार अमेरिका में कार ने घोड़ा गाड़ी को खत्म कर दिया एवं कम्प्यूटर ने टाइपराइटर को खत्म कर दिया। इसे ह्रचनात्मक विनाशह्व (क्रीएटिव डेस्ट्रक्शन) का नाम दिया गया, क्योंकि इससे उत्पादकता का स्तर बढ़ा था, परंतु रोजगार के लाखों अवसर समाप्त हो गए थे। अमेरिका में आज 5 में से 4 रोजगार के अवसर, सेवा क्षेत्र में उत्पन्न होते हैं, जहां तुलनात्मक रूप से आय कम है। कृषि एवं उद्योग (विनिर्माण सहित) क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बहुत कम मात्रा में उपलब्ध हो पा रहे हैं।

60 वर्ष पूर्व तक अमेरिका विदेशी व्यापार के मामले में आत्मनिर्भर था। अमेरिका में विभिन्न उत्पादों का जितना उपभोग होता था उन लगभग समस्त उत्पादों का उत्पादन भी अमेरिका में ही होता था। बल्कि, विदेशी व्यापार के मामले में तो उस समय अमेरिका के पास विदेश व्यापार आधिक्य शेष रहता था। आज अमेरिका में विभिन्न उत्पादों का जितना उत्पादन होता है उससे कहीं अधिक उपभोग होता है। अमेरिकी नागरिक आज अपनी आय से अधिक व्यय करता हुआ दिखाई देता है। अमेरिका में कई नए शहरों की बसावट के पहिले, समस्त बड़े नगरों में 75 प्रतिशत श्रमिक रेल्वे एवं बसों से यात्रा करते थे। परंतु आज केवल 5 प्रतिशत नागरिक ही पब्लिक वाहनों का उपयोग, एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने जाने के लिए, करते हैं। समस्त नागरिकों के पास अपनी अपनी कार है एवं केवल स्वयं ही उस कार में वे यात्रा करते हुए पाए जाते हैं। इससे पेट्रोल, डीजल एवं गैस की खपत में बेतहाशा बृद्धि दर्ज हुई है। द्वितीय विश्व युद्ध तक अमेरिका कच्चे तेल का एक निर्यातक देश हुआ करता था परंतु आज अमेरिका अपनी कच्चे तेल की कुल आवश्यकता का एक तिहाई भाग आयात करता है।

अमेरिका में वर्ष 2000 में विदेशी व्यापार घाटा 38,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का था जो 2021 में बढ़कर 86,100 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो गया है। 1970 के दशक तक, लगभग प्रत्येक वर्ष, अमेरिका के पास विदेशी व्यापार आधिक्य हुआ करता था। परंतु, इसके पश्चात अमेरिका की स्थिति विदेशी व्यापार के मामले में लगातार बिगड़ती चली गई है।

अमेरिका में उच्च आय वाले क्षेत्रों में रोजगार के अवसर लगातार कम हो रहे हैं। अमेरिका में प्रति घंटा औसत मजदूरी की दर वर्ष 1973 से (मुद्रा स्फीति की दर के समायोजन के पश्चात) लगभग नहीं के बराबर बढ़ी है। अमेरिका में आय की असमानता लगातार बढ़ती जा रही है। फेडरल बजट घाटा अब अरक्षणीय (अनसस्टेनेबल) स्तर पर पहुंच गया है। विदेशी व्यापार घाटा के लगातार बढ़ते जाने से आज अमेरिका 100 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की राशि का ऋण प्रतिदिन ले रहा है। देश में लगातार बढ़ रही गरीबी अब एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी की ओर स्थानांतरित हो रही है। कुल मिलाकर उक्त वर्णित अमेरिकी अर्थव्यवस्था की वर्तमान हालत को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पश्चिमी आर्थिक दर्शन पर टिका पूंजीवादी मॉडल पूर्णतः असफल हो रहा है। इसी कारण से अमेरिकी अर्थशास्त्रियों द्वारा भी अब यह कहा जाने लगा है कि पूंजीवादी मॉडल समाप्ति की ओर अग्रसर हो रहा है अतः साम्यवाद एवं पूंजीवाद के बाद एक तीसरे आर्थिक रास्ते की अब सख्त आवश्यकता है, जो संभवतः केवल भारत ही उपलब्ध कर सकता है।

## संपादकीय

# शांति का रास्ता

कोलकाता के आरजी कर अस्पताल के मुद्दे पर आंदोलनकारी जूनियर डॉक्टर सुप्रीम कोर्ट के अल्टीमेटम के बावजूद अभी तक काम पर नहीं लौटे हैं, जो चिंता की बात है। इस अस्पताल में प्रशिक्षु डॉक्टर के साथ कथित दुष्कर्म और उसकी हत्या को लेकर पिछले 9 अगस्त से डॉक्टरों का आंदोलन जारी है। निसंदेह यह बहुत जघण्य घटना है, जिससे हर व्यक्ति दुखी है, और उससे भी ज्यादा दुखद यह है कि अब तक पीड़िता के परिजनों को न्याय नहीं मिला है। इस मामले को लेकर पीडिता के सहकर्मियों की हड़ताल वैधानिक और न्यायसंगत है। लोकतंत्र में राजनीतिक-सामाजिक संगठनों, व्यक्ति और व्यक्तियों के समूह को अपनी मांगों को लेकर सरकार के खिलाफ शांतिपूर्ण ढंग से विरोध-प्रदर्शन और हड़ताल करने का संवैधानिक अधिकार है। लेकिन हड़ताल की वजह से सैकड़ों किलोमीटर दूर से आए मरीज और उनके तीमारदारों को परेशानियों का सामना करना पड़.रहा है। सरकार ने दावा किया है कि हड़ताल से 23 मरीजों की मौत हो गई है। जाहिर है कि इस पहलू पर मानवीय दृष्टि से विचार करते हुए डॉक्टरों को काम पर लौट आना चाहिए। वस्तुतः प्रशिक्षु डॉक्टर के साथ कथित दुष्कर्म और हत्या के मामले में राज्य की पुलिस और प्रशासन ने जिस तरह से गुमराह और भ्रमित करने वाला रवैया अपनाया उससे डॉक्टरों के साथ आम लोगों में भी निराशा है। पुलिस, प्रशासन और सरकार के ऊपर से सभी का भरोसा उठ गया है। डॉक्टरों के काम पर नहीं लौटने की यह एक बड़ी वजह हो सकती है। मंगलवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आंदोलनकारी डॉक्टरों को वार्ता के लिए राज्य सचिवालय में आमंत्रित किया था लेकिन डॉक्टरों को निमंत्रण की भाषा पर आपत्ति थी। इसलिए उन्होंने इसे ठुकरा दिया। डॉक्टरों का कहना है कि पीड़िता के परिवार को न्याय मिले और कार्यस्थल पर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। जब तक यह नहीं होगा हमारी हड़ताल जारी रहेगी। ये दोनों मांगें जायज हैं और राज्य सरकार को इन्हें तुरंत मानना सुनिश्चित करना चाहिए। राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी स्वयं महिला हैं, और राज्य की मुखिया होने के नाते उनसे अपेक्षा की जाती है कि महिला प्रशिक्षु डॉक्टर को न्याय दिलाने के लिए वह स्वयं पहल करें।

## चिंतन-मनन

# जीवन एक क्रिकेट मैच

प्रांतिकारी संत तरुणसागरजी ने क्रिकेट की व्याख्या करते हुए कहा कि जीवन एक क्रिकेट है, धरती की विराट पिच पर समय बॉलिंग कर रहा है। शरीर बल्लेबाज है, परमात्मा के इस आयोजन पर अम्पायर धर्मराज हैं। बीमारियाँ फील्डिंग कर रही हैं, विकेटकीपर यमराज हैं, प्राण हमारा विकेट है, जीवन एक क्रिकेट है। इस डे-नाइट मैच में हमें रचनात्मकता के जलवे दिखाने हैं और साँसों के सीमित ओवर में सृजन के रन बनाने हैं। गिल्लियाँ उड़ने का अर्थ साँस का टूट जाना है, एलबीडब्ल्यू यानी हार्ट-अटैक। दुर्घटना में मरने वाला रन आउट कहलाता है और सीमा पर शहीद होने वाला कैच आउट कहा जाता है। आत्महत्या का अर्थ हिट विकेट और हत्या स्टम्प आउट हो जाना है।

कभी-कभी कुछ आप्रामक खिलाड़ी जल्दी ही पैवेलियन लौट जाते हैं, लेकिन पारी ऐसी खेलते हैं कि कीर्तिमान बना जाते हैं, सबका अपना-अपना रन रेट है, जीवन एक क्रिकेट है। घर आए अतिथि को भोजन के लिए पूछा करो, भोजन के लिए नहीं पूछ सकते तो पानी के लिए पूछा करो, पानी का नहीं पूछ सकते हैं तो बैठने के लिए आसन दिया करो। बैठने के लिए आसन भी नहीं दे सकते तो दो मीठे बोल बोला करो। दो मीठे बोल नहीं बोल सकते, मुस्कुराहट भी नहीं दे सकते तो चुल्लू भर पानी में डूब मरो। उक्त प्रेरक विचार उन्होंने प्रवचनमाला में व्यक्त किए। हाथों में मोबाइल हो न हो, चेहरे पर स्माइल हर हाल में होना चाहिए। आदमी स्मार्ट मोबाइल से नहीं, मुस्कुराहट से बनता है। हँसना पुण्य है और हँसाना परमपुण्य है। जब आप हँसते हैं तो आप ईश्वर की आराधना करते हैं। जब आप किसी रोते हुए को हँसाते हो तो ईश्वर आपकी आराधना करता है। दुनिया के सामने रोने की आवश्यकता नहीं है। जब पाँच सेकंड मुस्कुराने से फोटो अच्छी आ सकती है तो जिंदगी भर मुस्कुराने से जिंदगी क्यों नहीं अच्छी हो सकती।

# हरियाणा चुनावी मुद्दों से मिल रहे हैं सत्ता-विरोधी संकेत

ललित गर्ग

हरियाणा विधानसभा चुनाव के मतदान की तारीख जैसे-जैसे नजदीक आती जा रही है, राजनीतिक दलों में उठापटक हो रही है, दलबदल का सिलसिला जारी है, गठबंधन टूट रहे हैं जो नये जुड़ रहे हैं। प्रदेश में तीसरी बार सरकार बनाने को आतुर भाजपा के सामने इस बार चुनौतियां कम नहीं हैं, वही कांग्रेस लोकसभा चुनाव में मिली सफलता से अति-उत्साहित दिखाई दे रही है, आम आदमी पार्टी भी सभी सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े कर राजनीतिक समीकरणों को प्रभावित करने में जुटी है। हरियाणा में तू डाल-डाल, मैं पात-पात की कशमकश जोरों से चल रही है। विनेश और बजरंग पहलवान को शामिल करके कांग्रेस खुशियां मना रही थी, लेकिन ह्यआपह्ल से हो रहा समझौता टूटते ही कांग्रेस की खुशियां कुछ हद तक फीकी दिखाई देने लगीं। फिर भी भूपिंदर सिंह हुड्डा के नेतृत्व में कांग्रेस हरियाणा में अपनी बहुमत की सरकार बनाने का दावा कर रही है। भाजपा भी यहां अपनी सरकार बचाने के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है। इस बार हरियाणा के चुनावों पर समूचे देश की नजरे लगी है। हरियाणा विधानसभा चुनावों के लिए विपक्षी इंडिया गठबंधन में शामिल कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच गठबंधन की बातचीत टूटने के बाद से कांग्रेस के जीत के सपनों को सेंध लगी है। आप ने प्रत्याशियों की दो-दो सूची जारी कर दी है, सभी 90 सीटों पर चुनाव लड़ने का एलान भी कर दिया है। फिर भी दोनों दलों में कुछ लोग हैं, जो अभी गठबंधन की उम्मीद छोड़ने को तैयार नहीं हैं, क्योंकि यही गठबंधन कांग्रेस की जीत का बड़ा कारण माना जा रहा है। इस गठबंधन के टूटन से भाजपा की निराशा के बादल कुछ सीमा तक छंटते हुए दिखाई दे रहे हैं। लेकिन भाजपा की जीत अभी भी निश्चित नहीं मानी जा रही है। भले ही ह्यआपह्ल को दूर रखकर हरियाणा कांग्रेस की राज्य इकाई खुश हो रही हो, लेकिन इसका फायदा भाजपा को ही होने वाला है क्योंकि ह्यआपह्ल प्रत्याशियों को जहां भी, जितने भी वोट मिलने वाले हैं, वे जाएंगे कांग्रेस के खाते से ही। इस त्रिकोणीय संघर्ष का फायदा भाजपा को ही मिलेगा।

हरियाणा कांग्रेस एवं उसके नेता प्रारंभ से ही स्वतंत्र चुनाव लड़ने के पक्ष में रहे हैं। प्रदेश कांग्रेस नेताओं के मुताबिक, दस वर्षों की सत्ता-विरोधी लहर के मद्देनजर भाजपा 2019 से कमजोर स्थिति में है, जब उसे 90 सीटों की विधानसभा में 40 सीटें ही मिल पाई थीं। हाल ही में सम्पन्न लोकसभा चुनावों के नतीजे भी संकेत दे रहे हैं जहां पिछली बार की दसों सीटों की जगह उसे सिर्फ 5 सीटें मिलीं। आप को कांग्रेस के साथ गठबंधन में यहां एक लोकसभा सीट पर चुनाव लड़ने का मौका मिला था, लेकिन वह हार गई थी। इसी स्थिति को देखते हुए ही प्रदेश कांग्रेस आप के साथ गठबंधन को पूरी तरह गैर जरूरी मान रहा है। लेकिन कांग्रेस का राष्ट्रीय नेतृत्व राजनीति गणित को देखते हुए आप के साथ गठबंधन को लेकर निरन्तर प्रयास करता रहा। यही कारण दोनों दल गठबंधन के लिए बातचीत की मेज पर बैठे। राहुल गांधी अब लोकसभा में विपक्ष के नेता हैं और उनकी प्राथमिकता यह है कि राष्ट्रीय स्तर पर विपक्ष के इंडिया गठबंधन की एकजुटता और उसकी मजबूती में किसी तरह की कमी न दिखे ताकि केंद्र सरकार और भाजपा पर उसका दबाव बना रहे। हरियाणा में आप पार्टी कोई चमत्कार घटित करने की स्थिति में नहीं है। उसकी भूमिका सत्ता के गणित को प्रभावित करना मात्र है। कुछ सीटें उसके खाते में जा सकती है, जिसका रोल भविष्य की सत्ता की राजनीति में हो सकता है। अरविन्द केजरीवाल के जातीय गणित के कारण ह्यआपह्ल पार्टी कांग्रेस को भारी नुकसान पहुंचा सकता है तो कुछ नुकसान भाजपा का भी कर सकती है। कम वोटों के अंतर से होने वाली जीत-हार में ह्यआपह्ल पार्टी का असर साफ दिखने वाला है। देर से ही सही, हो सकता है कांग्रेस नेतृत्व को यह बात समझ में आ जाए, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी होगी। हालांकि चुनाव परिणाम आने पर ही असल माजरा समझ आएगा, लेकिन यह तय है कि भाजपा को दस साल के राज के बावजूद कमजोर नहीं माना जा सकता। लोकसभा चुनाव में भाजपा की सीटों में आई कमी के बाद विपक्ष को जो थोड़ी धार मिली है, उसका जो मनोबल बढ़ा था, उसके मद्देनजर ये चुनाव अहम माने जा रहे हैं। हरियाणा के बाद महाराष्ट्र और झारखंड में भी चुनाव होने हैं। दिल्ली विधानसभा के चुनाव भी ज्यादा दूर नहीं हैं। ऐसे में हरियाणा विधानसभा चुनाव में अगर इंडिया गठबंधन साथ मिलकर मजबूती से लड़ता और अच्छी जीत दर्ज करा पाता तो उसका असर न केवल आने वाले विधानसभा चुनावों पर बल्कि पूरे विपक्ष के मनोबल पर पड़ने वाला था। इंडिया गठबंधन के कारण सबसे ज्यादा नुकसान भाजपा को ही झेलना पड़ता है। इसलिये इस गठबंधन की मजबूती ही भाजपा के लिये असली चुनौती है। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनावों को याद करें तो इस पर लगभग आम राय है कि वहां कांग्रेस को प्रदेश नेतृत्व के अति आत्मविश्वास का नुकसान हुआ। असल सवाल विपक्षी वोटों के बंटवारे का है। जिस तरह से आप प्रत्याशियों की सूची जारी कर रही है, उससे साफ है कि वह इसी पहलू की ओर इशारा कर रही है कि उसे सीटें भले न आएं, कांग्रेस को कई सीटों का नुकसान तो हो ही सकता है। भाजपा लम्बे समय से हरियाणा में कमजोर बनी हुई है, भले ही सरकार उसी की हो। अपनी लगातार होती कमजोर स्थितियों में सुधार लाने एवं प्रदेश में भाजपा को मज़बूती देने के लिये ही लोकसभा चुनाव से ठीक पहले मनोहर लाल के स्थान पर ओबीसी वर्ग के नायब सिंह सैनी को मुख्यमंत्री बनाकर सत्ता विरोधी कारकों को कम करने की कोशिश की थी, लेकिन भाजपा को उसका पूरा लाभ नहीं मिल सका। इसके मुख्य कारण सत्ता विरोधी वातावरण बना तो किसानों व बेरोजगारों की नाराजगी बड़ी चुनौती बन कर सामने आयी। भाजपा द्वारा पेश किए गए तीन विवादास्पद कृषि कानून हरियाणा में विवाद का मुख्य मुद्दा बने हुए है। राज्य के किसानों ने इन कानूनों का विरोध किया, उनका दावा है कि ये उनकी फसल की बिक्री और आय पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। केन्द्र की अग्निपथ योजना भी इन चुनावों में एक विवादास्पद मुद्दा बनी हुई है। इसने राज्य के युवाओं में चिंता पैदा कर दी है। आलोचकों का मानना है कि यह स्थायी भर्ती से दूर जाने का कदम है, जिससे सैनिकों के लिए रोजगार में अस्थिरता पैदा होती है। इन चुनावों में बेरोजगारी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, राज्य की बेरोजगारी दर राष्ट्रीय औसत से अधिक है। युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने में सरकारी नीतियों पर काफी बहस चल रही है, जिससे यह चुनावों में एक केंद्रीय मुद्दा बन गया है। पहलवानों से जुड़ा मामला और बृज भूषण शरण सिंह पर लगे आरोप भी हरियाणा चुनाव में अहम मुद्दा बन गए हैं। पहलवानों ने सिंह पर उन्हें न्याय और सुरक्षा प्रदान करने में विफल रहने का आरोप लगाया है, जिससे हरियाणा में राजनीतिक परिदृश्य में एक नया आयाम जुड़ गया है।

# दिल्ली में यमुना : निर्मल होने का रास्ता चुनौतीपूर्ण

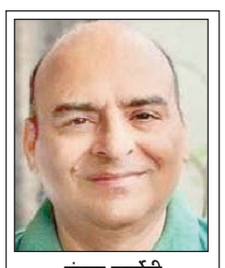

पंकज चतुर्वेदी

सावन बीत गया, भादों भी आधा निकल गया दिल्ली और उसके आसपास यमुना नदी के जल-ग्रहण क्षेत्र कहलाने वाले इलाकों में पर्याप्त पानी बरसा, लेकिन न नदी में पानी दिखा और न ही पानी से शहर की मुक्ति। जिस समय नदी में पानी लबालब होना चाहिए था, तब कम से कम दो बार दो इसमें अमोनिया की मात्रा अधिक हो गई। कई हजार करोड़ के खर्च, ढेरों वादों और योजनाओं के बाद भी लगता नहीं है न कि दिल्ली में यमुना को 2026 तक निर्मल बना देने का लक्ष्य पूरा हो पाएगा। समझना होगा कि यमुना पर लाख एसटीपी लगा कर नालों के पानी को शुद्ध कर लें लेकिन जब तक यमुना में नदी का पानी अविरल नहीं आएगा, तब तक इसके हालात तो सुधरने से रहे।

दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) की रिपोर्ट के अनुसार जुलाई में यमुना में ऑक्सीजन की मात्रा शून्य पाई गई जबकि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। यमुना की सफाई के लिए केंद्र सरकार ने दिल्ली सरकार को 8,500 करोड़ रुपये दिए लेकिन नतीजा शून्य है। असल में दिल्ली में यमुना को साफ-सुथरा बनाने की जो भी नीति हैं, उनका मूल यह है कि दिल्ली में यमुना, गंगा और भूजल से 1,900 क्यूसेक पानी प्रति दिन प्रयोग में लाया जाता है। इसका 60 फीसद यानी करीब 1,100 क्यूसेक सीवरेज का पानी एकत्र होता है। यदि यह पानी शोधित कर यमुना में डाला जाए तो यमुना निर्मल रहेगी और दिल्ली में पेयजल की किल्लत भी दूर होगी। लेकिन हर समय नजरंदाज किया जाता है कि नदी में बाकी जल कहां से आएगा?

ईमानदारी की बात तो यह है कि यमुनोत्री से निकलने वाली जल-धारा, जो मैदान में आ कर गंगा की सबसे बड़ी सखी-सहेली कहलाती है, पहाड़ से उतरने के पहले ही लुप्त हो जाती है। दिल्ली तक जो भी जल आता है वह अधिकांशतः हरियाणा की छोटी नदियों और कारखानों के उत्सर्जन का हिस्सा होता है। बरसात के मौसम के पचहत्तर फीसद दिन बीत जाने के बाद भी दिल्ली में एक भी बार बाढ़ नहीं आई। बाढ़ नदी में जीवन बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पहाड़ों से बह कर आया पानी अपने साथ कई उपयोगी लवण लेकर आता है। वहीं नदी के जल-मार्ग में कूड़े-मलबे के कारण धारा अवरुद्ध होती है, बाढ़ उसे स्वतः साफ कर देती है। इस तरह नदी में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है, जो मछलियों और जीवों की प्रजातियों को अनुकूल परिवेश प्रदान करती है।

दिल्ली में यमुना की शुद्धि के मशीनी उपायों से कहीं ज्यादा जरूरी है कि यहां तसल्ली से बाढ़ आए। आखिर, दिल्ली में बाढ़ क्यों नहीं आई? कारण खोज लें तो यह भी समझ आ जाएगा कि मल-जल को साफ करने के उपाय क्यों असफल ही रहते हैं। यमुना की आत्मा सभी नदियों के मानिंद उसके फ्लड प्लेन अर्थात कछार में है। जब नदी यौवन पर हो तो जमीन पर जहां तक उसका विस्तार होता है, वह उसका कछार या फ्लड प्लेन है। अब दिल्ली में तो नदी को फैलने की जगह ही नहीं बची। हजारों निजी और सरकारी निर्माण और नदी के बीचोंबीच खड़े किए गए खंभे यमुना को दिल से बहने ही नहीं देते। सुनिश्चित करने की जरूरत है कि नदी के फ्लड प्लेन को पूरी तरह से खाली रखा जाए। नदियों में आने वाली बाढ़ एक नये जीवन का निर्माण करती है, और एक तरह से जरूरी भी है। बाढ़ से नदी का जलीय जीवन भी बेहतर होता है।

दिल्ली तक यमुना का अवरोध चाहने वाले दिल्ली से हरियाणा और फिर उससे ऊपर पहाड़ तक भी हैं, जिनने अवैध बालू खनन के लिए कई-कई जगह नदी के रास्ते रोके हुए हैं, या अनैतिक तरीके से इसके मार्ग को ही बदल दिया है, ऐसे लोगों की मंशा की पूर्ति के लिए पहाड़ पर ही नदी को बांधने के सरकारी प्रयास भी कम नहीं हैं। देहरादून के कालसी विकास खंड में यमुना नदी पर 204 मीटर ऊंचे बांध की लखवार व्यासी परियोजना 1972 में शुरू हुई। फिर इस पर काम बंद हो गया। 2014 में काम फिर शुरू हुआ और अब यमुना पहाड़ से नीचे उतरने से पहले यहीं घेर ली जाती है। जाहिर है कि जब पहाड़ में ही यमुना का भाव नहीं है तो हथिनी कुंड से वजीराबाद तक यह एक बरसाती नदी ही है। पहाड़ पर इतने बड़े बांध और कई सुरंगों

के जरिए पानी के मार्ग को बदलने से महज जल-प्रवाह ही कम नहीं हो रहा है, बल्कि इतने निर्माण का मलबा भी बह कर नीचे आ रहा है, जो नदी को उथला बना रहा है। दिसम्बर 21 के आखिरी हफ्ते में जब व्यासी जलविद्युत परियोजना की एक टरबाइन को प्रयोग के तौर पर खोला गया तो यमुना की धारा लगभग लुप्त हो गई थी। इससे स्पष्ट हो गया था कि इस परियोजना के कारण दिल्ली तक यमुना का रास्ता अब बंद हो गया है।

जब व्यापक निर्माण के कारण पहाड़ों पर जम कर जंगल काटे जाएं तो पारिस्थितिकी हानि के कुप्रभाव से नदी भी नहीं बच सकती। महज सिंचाई और बिजली के सपने में यमुना हरियाणा में आने से पहले ही हार जाती है। इधर, दिल्ली जिस नदी को निर्मल करने के लिए बजट बढ़ाती है, वास्तव में उस नदी का अस्तित्व है ही नहीं।

# सोनू की हत्या का सुलासा दो जनपदों की पुलिस टीम ने मिलकर किया, प्रेम प्रसंग के चलते हुई सोनू की हत्या।

संस्कार उजाला

**संवाददाता सलीम खान/आसिम अजीज**

**रामपुर।** थाना सैफनी जनपद रामपुर क्षेत्रान्तर्गत बैरूआ पुल के पास जंगल मे ईख खेत मे एक बिना सिर के शव पडा मिला । जिसकी शिनाख्त सैफनी पुलिस द्वारा करायी गयी तथा आस पास के थानो मे सूचना दी गयी तो थाना बिलारी पर दर्ज गुमशुदगी के सम्बन्ध मे साबिर व उसके परिजनो को मौके पर ले जाकर पहचान करायी गयी तो साबिर उपरोक्त द्वारा शव की पहचान अपने पुत्र सोनू के रूप मे की गयी । दिनांक 11-09-2024 को मृतक सोनू के पिता साबिर की तहरीर के आधार पर थाना बिलारी पर मु0अ0स0-590/2024 धारा 103(1)/238 बीएनएस बनाम 1.मेहनाज पुत्री इस्माईल नि0 मौ0 मजरा कस्बा व थाना सैफनी जनपद रामपुर 2.सद्दाम पुत्र इस्माईल नि0मौ0 मजरा कस्बा व थाना सैफनी जनपद रामपुर व अन्य के विरूद्ध पंजीकृत किया गया । थाना बिलारी पर पंजीकृत गुमशुदगी से संबंधित गुमशुदा का शव जनपद रामपुर में मिलने पर जनपद रामपुर पुलिस एवं थाना बिलारी पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा हत्या की घटना का सफल अनावरण करते हुए 03 आरोपियों को गिरफ्तार कर कब्जे से आलाकत्ल व मोबाईल फोन किये बरामद । अवगत कराना है कि दिनांक 11-09-2024 को साबिर पुत्र रफीक निवासी मौ0 गढी रूस्तमनगर सहसपुर थाना बिलारी जनपद मुरादाबाद ने थाना बिलारी पर सूचना दी कि उनका पुत्र सोनू दिनांक 09-09-2024 को समय करीब 07.00 बजे से लापता है । जिसको काफी तलाश किया परन्तु कहीं नही मिला जिस सम्बन्ध मे थाना बिलारी पर गुमशुदगी दर्ज की गयी । उक्त हत्या की सनसनीखेज घटना होने पर अभियुक्तगण की शीघ्र गिरफ्तारी हेतु वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, मुरादाबाद एवं पुलिस अधीक्षक,रामपुर के निर्देशन में थाना बिलारी एवं थाना सैफनी/एसओजी की टीम गठित की गयी । आज दिनांक 12-09-2024 को थाना सैफनी/एसओजी एवं थाना बिलारी पुलिस की टीम द्वारा मुकदमा उपरोक्त में नामजद अभियुक्त सद्दाम पुत्र इस्माईल अन्सारी निवासी मौ0 मजरा कस्बा व थाना सैफनी जनपद रामपुर की गिरफ्तारी की गयी तथा अभियुक्त सद्दाम की निशाहदेही पर मृतक सोनू उपरोक्त की हत्या की घटना का सफल अनावरण करते हुए हत्या मे प्रयुक्त एक छुरी एवं मृतक की चप्पल, मृतक का मोबाइल फोन व एवं दो मोबाइल फोन, मृतक सोनू उपरोक्त का कटा हुआ सर डम्पिंग ग्राउण्ड सैफनी से बरामद हुआ तथा विवेचना से मुकदमा उपरोक्त में रिजवान पुत्र अख्तर अली निवासी मौ0 मजरा कस्बा व थाना सैफनी जनपद रामपुर का नाम प्रकाश में आया । विवेचना के क्रम में अभियुक्त 2-मेहनाज पुत्री इस्माईल नि0 मौ0 मजरा कस्बा व थाना सैफनी जनपद रामपुर 3- रिजवान पुत्र अख्तर अली नि0 मौ0 मजरा कस्बा व थाना सैफनी जनपद रामपुर को गिरफ्तार किया गया । अन्य आवश्यक विधिक कार्यवाही प्रचलित है ।

## पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल की संस्तुति पर अफजल चौधरी को मुलायम सिंह यूथ ब्रिगेड राज्य कार्यकारिणी का सचिव मनोनीत करने पर सपाइयों में दौड़ी खुशी की लहर

संस्कार उजाला

हापुड़/उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल की संस्तुति पर समाजवादी पार्टी के कर्मठ जुझारू सिपाही अफजल चौधरी पुत्र रफीक चौधरी निवासी ग्राम देहरा तहसील धौलाना जिला हापुड़ को मुलायम सिंह यादव यूथ ब्रिग्रेड की राज्य कार्यकारिणी में सचिव के पद पर मनोनीत करने पर सपाइयों में दौड़ी खुशी की लहर।

## वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक इटावा के निर्देशन में जनपद के समस्त थाना प्रभारी/थानाध्यक्ष व चौकी प्रभारियों द्वारा थाना क्षेत्रान्तर्गत बैंकों/वित्तीय संस्थानों का किया गया निरीक्षण।

संस्कार उजाला

**संवाददाता (मनोज पाठक विशेष इटावा)**

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक इटावा श्री संजय कुमार के निर्देशन में जनपद के समस्त थाना प्रभारी/थानाध्यक्ष व चौकी प्रभारियों द्वारा थाना क्षेत्रान्तर्गत पड़ने बाले बैंकों में पहुंचकर चेकिंग अभियान चलाया गया। चैकिंग के दौरान बैंक के बाहर एवं अंदर आने-जाने एवं अन्य आवश्यक स्थानों पर सीसीटीवी कैमरा एवं अन्य सुरक्षा उपायों की पूर्ति करने के लिए संबंधित को निर्देशित किया गया, साथ ही बैंक एवं आसपास किसी भी प्रकार की संदिग्ध गतिविधि अथवा अपराधिक प्रवृत्ति के लोगों की उपस्थिति की जानकारी मिलने पर तत्काल पुलिस को सूचना देने को कहा गया।

## संक्षिप्त डायरी

### गांव तिगरी में गोकशी की घटना करने वाले बदमाशों से पुलिस की मुठभेड़, तीन घायल सहित चार बदमाश गिरफ्तार एक फरार

संस्कार उजाला रिपोर्टर भूपेंद्र वर्मा

**गढ़मुक्तेश्वर/**सिंभावली क्षेत्र के गांव धनपुरा में बृहस्पतिवार की सुबह गोकशी करने वाले बदमाश और पुलिस के बीच हुई मुठभेड़। पुलिस की जवाबी फायरिंग में तीन बदमाश गोली लगने से घायल हो गए। इसके बाद पुलिस ने तीन घायल बदमाश सहित चार बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया। वही एक अंधेरे का फायदा उठाकर मौके से फरार हो गया। एडिशनल एसपी विनीत भटनागर ने बताया कि 26 अगस्त की रात को गांव तिगरी में गोकशी की घटना की गई थी। इसके बाद पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर बदमाशों की सरगर्मी से तलाश में जुटी हुई थी। इसी क्रम में बृहस्पतिवार की सुबह चेकिंग के दौरान गांव धनपुरा के जंगल में दो बाईकों पर सवार पांच लोग आते दिखाई दिए जिनको रुकने का इशारा किया तो उन्होंने पुलिस टीम पर जान से मारने की नीयत से फायरिंग शुरू कर दी।उसके बाद पुलिस ने आत्मरक्षार्थ में फायरिंग की जिसमें दो बदमाशों की टांग में और एक बदमाश के हाथ में गोली लगने से तीन बदमाश घायल हो गए। इसके बाद पुलिस ने तीन घायल सहित चार बदमाशों को मौके से गिरफ्तार कर लिया। वहीं एक साथी अंधेरे का फायदा उठाकर मौके से फरार हो गया। गिरफ्तार घायल बदमाशों ने पुलिस पूछताछ में अपने नाम गुलवीर उर्फ गुल्लू पुत्र बलजीत सिंह, नकुल पुत्र करण सिंह निवासी खिलवाई, सिन्नू पुत्र यामीन, निवासी अठसैनी थाना गढ़मुक्तेश्वर,आसिफ पुत्र कय्यूम निवासी मोहल्ला सिकंदर गेट टंकी के पास हापुड़ नगर बताएं है।घायल तीनों बदमाशों को उपचार हेतु अस्पताल में भर्ती कराया गया। बदमाशों के कब्जे से चार तमंचे मय खोखा कारतुस ,दो छुरी दो मोटरसाइकिल दो रस्सी सहित गोकशी करने का अन्य सामान बरामद किया है। पकड़े गए बदमाशों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर अग्रिम वैधानिक कार्रवाई की जा रही है। चारों बदमाश शातिर किस्म के गौकश है। जिसमें गुलवीर उर्फ गुल्लू पर 4,आसिफ पर 3 सिन्नू पर 20 नकुल पर 2 मुकदमे सहित गौवध अधिनियम गुंडा एक्ट जैसे संगीन आपराधिक मामले दर्ज हैं।

### आरएसके इंटर कॉलेज में जिला वॉलीबॉल अध्यक्ष डॉ राजेंद्र सिंह औलख ने फीता काटकर बहु प्रतीक्षित प्रतियोगिता 2024 का किया शुभारंभ

संस्कार उजाला

**जिला प्रभारी अमित शर्मा**

**गढ़मुक्तेश्वर/**जनपद की तहसील गढ़मुक्तेश्वर के सिंभावली ब्लॉक के अंतर्गत हिम्मतपुर रोड पर स्थित शिक्षा के मंदिर के रूप में अग्रणीय आर एस के इंटर कॉलेज में वॉलीबॉल जिला अध्यक्ष डॉ राजेंद्र सिंह औलख के द्वारा वॉलीबॉल 2024 बहुप्रतिक्षित प्रतियोगिता का फीता काट कर शुभारंभ किया गया। बता दें कि आरएसके इंटर कॉलेज में 12 सितंबर को सिंभावली हापुड़ में पूर्व निर्धारित एवं बहुप्रतीक्षित जनपदीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता 2024 संपन्न हुई। जिसका शुभारंभ जनपदीय वॉलीबॉल जिला अध्यक्ष डॉ राजेंद्र सिंह औलख के द्वारा फीता काटकर किया गया। और आयोजित प्रतियोगिता को विशिष्ट अतिथि संदीप सिंधु विद्यालय प्रबंधन समिति प्रबंधक, चौधरी शीशपाल सिंह प्रधानाचार्य डॉक्टर राजीव कुमार गोहित के द्वारा संपन्न कराया गया। आरएसके इंटर कॉलेज में आयोजित प्रतियोगिता में बालिका वर्ग की अंडर-19 अंडर 17 एवं अंडर 14 का आरएसके इंटर कॉलेज सिंभावली हापुड़ एवं एकेपी इंटर कॉलेज हापुड़ की टीम ने प्रति भाग किया। जिसमें अंडर-19 अंडर 14 में कीड़ा प्रभारी सुरेंद्र त्यागी के नेतृत्व वाली आरएसके इंटर कॉलेज की टीम विजय रही। बालिका वर्ग की अंडर 17 में श्रीमती वीरेंद्री मैडम के नेतृत्व वाली एकेपी इंटर कॉलेज हापुड़ की टीम विजय रही। वही प्रतियोगिता में विजय रहने वाली टीम के खिलाड़ियों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए कहा की युवा वर्ग के खिलाड़ी हमारे देश की शान है।

## झमाझम बारिश में गिर गया गरीब का आशियाना तीन घायल

संस्कार उजाला

**गढ़मुक्तेश्वर/**जनपद की तहसील गढ़मुक्तेश्वर के थाना बहादुरगढ़ क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले गांव लुहारी में झमाझम बारिश के चलते ढह गया गरीब का आशियाना पत्नी बेटा बेटी हुए घायल। बता दें कि बहादुरगढ़ थाना क्षेत्र के गांव लुहारी में 24 घंटे से लगातार हो रही झमाझम बारिश के चलते गरीब इकरामुद्दीन का आशियाना गिरकर हुआ जमींदोज जिसमें पत्नी मीना 58 वर्ष,बेटा फैजान 9वर्ष, बेटी अफसाना 6 वर्ष, घायल हो गए। वहीं घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंचे। पुलिस क्षेत्राधिकारी जितेंद्र शर्मा, थाना प्रभारी अरविंद चौधरी, हल्का लेखपाल साकिब के साथ क्षतिग्रस्त मकान का मौका मुआयना करते हुए घायलों का हाल-चाल जाना और उपचार हेतु अस्पताल भिजवाया गया। और उन्हें आर्थिक मदद कराने की सांत्वाना देते हुए रिपोर्ट उच्च अधिकारियों को प्रेषित की गई है।

## वाह रे स्वास्थ्य विभाग भ्रष्टाचार में लिप्त कर्मचारियों पर कार्यवाही करना सीखे तो हापुड़ स्वास्थ्य विभाग से मात्र ट्रांसफर करके कार्यवाही की हो जाती है इतिश्री

संस्कार उजाला

**जनपद हापुड़** के स्वास्थ्य विभाग में भ्रष्टाचार चरम सीमा पर पहुंचने के बावजूद भी स्वास्थ्य विभाग के आला अधिकारियों के द्वारा भ्रष्टाचार में लिप्त कर्मचारियों पर कार्यवाही के नाम पर ट्रांसफर कर की जा रही है लीपापोती। विदित रहे कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सिखेड़ा से संबंधित तीन सप्ताह के अंतराल में भ्रष्टाचार से जुड़े दो मामले प्रकाश में आए हैं। जिसमें 23 अगस्त की रात्रि में आसिफ हत्याकांड में घायल मृतक के भाई का मेडिकल हल्का भारी करने के नाम पर ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक के द्वारा ₹10000 की मांग की गई थी। जिसका वीडियो सोशल मीडिया की सुर्खियां बना था। वही दूसरा मामला प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बक्सर से प्रकाश में आया है। जिसमें 4 सितंबर को हिम्मतपुर निवासी साजिद की पत्नी शहजादी को प्रसव के दौरान मृत नवजात शिशु पैदा हुआ था। जिसमें ड्यूटी पर तैनात मेडिकल ऑफिसर एवं स्टाफ नर्स के द्वारा नवजात शिशु का शव पीड़ित परिजनों को देने के एवरेज में ₹2500 की मांग की गई थी। पीड़ित परिजनों के द्वारा अस्पताल में टाइम पर पैसे नहीं होने की असमर्थता जताने पर ड्यूटी पर तैनात स्वास्थ्य महिला कर्मी के द्वारा ₹2500 का भुगतान ऑनलाइन कराया गया था। जिसको लेकर भारतीय किसान यूनियन के द्वारा अस्पताल में पहुंचकर हंगामा करने पर स्वास्थ्य कर्मियों ने हालांकि पैसे वापस कर दिए गए थे। स्वास्थ्य कर्मियों के द्वारा मृत नवजात शिशु के शव देने के

ऐवज में रुपए मांगने की खबर समाचार पत्रों में प्रकाशित होने पर जिलाधिकारी प्रेरणा शर्मा के द्वारा इस मामले का गहनता से संज्ञान लिया गया। जिसकी जांच के लिए टीम गठित की गई। और टीम के द्वारा जांच रिपोर्ट जिला मुख्य चिकित्सा अधिकारी को सौंपी गई। जिसमें स्वास्थ्य विभाग के आला अधिकारियों ने भ्रष्टाचार में लिप्त स्वास्थ्य कर्मियों के विरुद्ध कार्यवाही के नाम पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बक्सर से महिला मेडिकल ऑफिसर को हटकर उसके मूल अस्पताल मुदाफरा तैनाती कर दी गई। तो वहीं स्टाफ नर्स को बहादुरगढ़ में तैनाती देकर लीपा पोती करने की कार्यवाही की गई है। जिसको लेकर स्थानीय नागरिकों में रोज व्याप्त है।

## सिंभावली शुगर मिल के गन्ना क्रय केंद्रों की जगह अन्य मिलों के गन्ना क्रय केंद्र स्थापित करने की मांग को लेकर गन्ना आयुक्त के नाम सौपा ज्ञापन

संस्कार उजाला

**गढ़मुक्तेश्वर/**सिंभावली शुगर मिल से जुड़े किसानों के बकाया गन्ना भुगतान और समय से पर्चियां नहीं मिलने एवं किसानो की अन्य समस्याओं को लेकर किसान डिग्री कॉलेज में मिल प्रतिनिधियों के साथ एक बैठक आयोजित की गई। जिसमें क्षेत्रीय किसानों ने अपनी समस्याओं की आवाज को प्रमुखता से उठाते हुए गन्ना सचिव राकेश पटेल को गन्ना आयुक्त के नाम ज्ञापन सौपा। बता दे कि सिंभावली शुगर मिल के द्वारा क्षेत्रीय किसानों के बकाया गन्ने के भुगतान को समय से नहीं करने पर पीड़ित किसानो ने आगामी गन्ना पेराई सत्र में गन्ना आवंटन हेतु सिंभावली शुगर मिल के गन्ना क्रय केंद्रों के स्थान पर बाहरी मिलो के गन्ना क्रय केंद्र स्थापित करने की मांग की है। जिसको लेकर किसान डिग्री कॉलेज में सहकारी गन्ना विकास समिति लिमिटेड की वार्षिक सभा शुगर मिल प्रतिनिधियों के साथ आयोजित की गई।आयोजित सभा का संचालन हंगामेदार होने के चलते क्षेत्रीय किसानों ने सिंभावली शुगर मिल के द्वारा किसानों के गन्ने का बकाया भुगतान समय से नहीं करने एवं पर्चियां नहीं मिलने से त्रस्त पीड़ित क्षेत्रीय किसानों ने सिम्भावली शुगर मिल के गन्ना क्रय केन्द्रों को क्षेत्र से हटाकर अन्य मिलों के गन्ना क्रय केंद्र स्थापित करने की मांग को प्रमुखता से उठाते हुए सहकारी गन्ना विकास समिति लिमिटेड गन्ना सचिव राकेश पटेल को गन्ना आयुक्त के नाम ज्ञापन सौंप कर किसानों की समस्याओं का समाधान करने की मांग की है। आयोजित बैठक में बब्बू चेयरमैन, राजीव दादू, संजीव त्यागी, अमरपाल सिंह चौधरी मनवीर सिंह एवं मिल के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

## घटना स्थल के निरीक्षण में नहीं मिले भेड़िया के पगचिन्हः डीएफओ

संस्कार उजाला

**डॉ0सै0अब्दुल खबीर**

**बहराइच ।** प्रभागीय वनाधिकारी बहराइच ने बताया कि तहसील महसी व थाना खैरीघाट अन्तर्गत ग्राम-कोरियनपुरवा, दाखिला भवानीपुर, पोस्ट-गरेठी गुरुदत्त सिंह में 11 सितम्बर 2024 को रात्रि लगभग 10:30 बजे श्रीमती पुष्पा पत्नी प्रताप आयु लगभग 50 वर्ष को किसी अज्ञात जानवर द्वारा घायल किये जाने की सूचना प्राप्त हुई है। घायल महिला का सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, महसी में उपचार के पश्चात जिला अस्पताल बहराइच रेफर कर दिया गया है। डीएफओ ने बताया कि उक्त घटना के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त होने पर क्षेत्रीय वनाधिकारी, बहराइच द्वारा तत्काल मौके का स्थलीय निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान मौके पर कहीं भी भेड़िया का पगचिन्ह नहीं पाया गया। जो पगचिन्ह पाया गया वह भेड़िया के पगचिन्ह से मेल नहीं खाता है। इस सम्बन्ध में डब्लू.टी.आई. के विशेषज्ञ शहीर खान ने भी बताया कि प्राप्त पदचिन्ह भेड़िया का पगचिन्ह नहीं है। घटना स्थल व आसपास के क्षेत्र का ड्रोन से निरीक्षण करने पर कोई जानवर नहीं पाया गया। डीएफओ ने बताया कि 11/12 को महसी तहसील अन्तर्गत घाघरा नदी के कछारी क्षेत्रों में उपद्रवी भेड़िया के सक्रियता प्रभावित क्षेत्र को निगरानी की दृष्टि से 03 सेक्टरों में बॉटकर सेक्टर प्रभारियों को तैनात किया गया है। जिनके नेतृत्व उपद्रवी भेड़िया को रेस्क्यू करने हेतु रेस्क्यू टीमों द्वारा 04 थर्मल ड्रोनों की सहायता से उपद्रवी भेडिया को ग्रामीणों द्वारा बताये गये स्थानों पर खोजने की कार्यवाही की गयी तथा संवेदनशील क्षेत्रों में भी ड्रोन चलाकर उपद्रवी भेड़िया को खोजने की कार्यवाही की गयी, किन्तु उपद्रवी भेड़िया ड्रोन कैमरों द्वारा लोकेट नहीं हो सका। डीएफओ ने बताया कि रेस्क्यू टीमों द्वारा कैमरा ट्रैपस को संवेदनशील क्षेत्रों में स्थापित कर उपद्रवी भेड़िया के आवागमन को खोजने की कार्यवाही की गयी, किन्तु उपद्रवी भेडिया कैमरा ट्रैपस द्वारा लोकेट नहीं हो सका। गश्ती टीमों द्वारा पैदल चलकर उपद्रवी भेड़िया के पगमार्क खोजने की कार्यवाही की गयी, परन्तु उपद्रवी भेड़िया के पगमार्क नहीं मिल सके। डीएफओ ने बताया कि जन जागरूता टीमों द्वारा गाँवों में पोस्टर व बैनर लगाकर संगोष्ठी/बैठकों के माध्यम से ग्रामीण जनों को उपद्रवी भेडिया से बचाव हेतु जागरूक करने की कार्यवाही की गयी। इसके अलावा प्रभाग स्तर पर स्थापित कमांड सेंटर द्वारा दिवारात्रि टीमों एवं गश्ती दलों से सूचनाओं को प्राप्त कर वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराते हुए उनसे प्राप्त दिशा निदेशों को गश्ती टीमों को अनुपालनार्थ प्रेषण की कार्यवाहियों की गयी। वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा भी उपद्रवी भेड़िया के सक्रियता प्रभावित क्षेत्र का दिवारात्रि गश्त करने की कार्यवाही की गयी। गश्ती टीमों द्वारा अति संवेदनशील प्रभावित ग्रामों के बाहरी क्षेत्रों में पटाखों को दगाकर उपद्रवी भेड़िया के गाँवों में प्रवेश से रोकने की कार्यवाही के साथ-साथ जन जागरूकता के तहत प्रभावित क्षेत्रों के समस्त ग्रामवासियों को रात्रि में अपने घरों के अन्दर दरवाजा बन्द करके सुरक्षित सोने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

## मैं तुम्हारी आरती का दीप बनता जा रहा हूं मैं तुम्हारे प्रणय ग्रंथ का प्रष्ट बनता जा रहा हूं/कवि रामआसरे गोयल

संस्कार उजाला

रिपोर्टर भूपेंद्र वर्मा

**गढ़मुक्तेश्वर/**जनपद की तहसील गढ़मुक्तेश्वर क्षेत्र के जनप्रिय कवि रामआसरे गोयल लखनऊ में आयोजित कवि सम्मेलन में हुए शामिल। बता दें कि लखनऊ में रायबरेली काव्य रस साहित्य मंच द्वारा 8 सितम्बर को अखिल भारतीय विराट लखनऊ काव्य संगम का आयोजन किया गया।जिसमें सिंभावली के रहने वाले कवि रामआसरे गोयल शामिल हुए। जिसमें उन्होंने अपनी कविताओं को पढ़कर श्रोताओं को हंसाते हुए खूब तालियां बटोरी। कवि रामआसरे गोयल ने बताया कि लखनऊ में आयोजित हुए कवि सम्मेलन में शामिल होने का मौका मिला।कार्यक्रम में उन्होंने ₹मैं तुम्हारी आरती का दीप बनता जा रहा हूं,मैं तुम्हारे प्रणय ग्रन्थ का पृष्ठ बनता जा रहा हूं।कविता पढ़ने पर श्रोताओं ने जमकर तालियां बजाकर हौसला अफजाई किया। और कार्यक्रम समापन पर संस्था की तरफ से उनको शाल ओढ़ाकर प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इससे पूर्व में भी कवि राम आसरे गोयल को कई स्थानों पर हुए कवि सम्मेलन में सम्मानित किया जा चुका है।

## जिला औरैया के DM इंद्रमणि त्रिपाठी है, काश सभी लोग इतनी धनी मानसिकता के होते, सोशल मीडिया पर एक किस्सा वायरल हो रहा है,

संस्कार उजाला

**संवाददाता (मनोज पाठक विशेष इटावा)**

डीएम कार्यालय में एक पीड़ित व्यक्ति जो मजदूर था अपनी समस्या DM साहब से बताने लगा तो डीएम साहब ने पूछा कहां से आ रहे हो, तो उसने दूर गांव का पता बताया तो डीएम साहब को चिंता हुई और कहा कितना किराया लगता है और बिना कुछ खाए निकले होंगे आप, तो उस व्यक्ति ने कहा कि नहीं साहब परांठे बांध कर लाए हैं तो साहब बोले खिलाओगे वो व्यक्ति एक दम हैरान रह गया और बोला साहब हम गरीब लोग हैं, आप मेरा कहां खाओगे डीएम साहब बोले नहीं खिलाओगे तो तुम्हारा काम नहीं करूंगा, उसने झोला से परांठे निकाले और सिर्फ दिखाए उसे कहां कल्पना की थी कि डीएम साहब खायेंगे, डीएम साहब ने तुरंत उससे पराठा लिया और सबके सामने ही खा लिया, वहां पर बैठे सभी लोग अचंभित हो गए और उस व्यक्ति का खुशी का ठिकाना नहीं रहा उसे अपने काम से ज्यादा खुशी साहब का उसका घर का बना पराठा खाने से हुआ

## गणेश चतुर्थी महोत्सव के पर्व पर हर्षोल्लास के साथ किया शुभारम्भ

संस्कार उजाला

**जिला प्रभारी अमित शर्मा**

**हापुड़/**गढ़मुक्तेश्वर के प्राचीन गंगा मंदिर पर द्वितीय गणेश चतुर्थी के शुभ अवसर पर भगवान गणेश की सात दिवसीय मूर्ति को बड़े ही हर्षोल्लास प्यारी प्यारी झांकियां के साथ पूजा के साथ। महोत्सव बनाया गया जिसमें समस्त नगरवासी/समाज सेवी सम्मिलित रहे। पुजारी पण्डित प्रेम नारायण ने बताया की गणेश चतुर्थी का पर्व हर साल भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को मनाया जाता है। सात दिवसीय मूर्ति स्थापित कर भगवान गणेश चतुर्थी मनाई जाती है।इस दिन लोग अपने घरों में भगवान गणेश की प्रतिमा की स्थापना करते हैं और विधिपूर्वक पूजा-अर्चना करते हैं। यह पर्व गणेश उत्सव के दिनों की शुरूआत का भी प्रतीक है।भगवान गणेश अपने भक्तों की हर कष्ट से रक्षा करते हैं और हर कार्य के विघ्न और बाधाओं को दूर करते हैं। भगवान गणेश को बुद्धि के देवता माना जाता है और उनकी पूजा करने से बुद्धि तेज होती है। भगवान गणेश की मूर्ति स्थापित कर प्राचीन गंगा मंदिर गढ़मुक्तेश्वर के समस्त समाजसेवी/नगरवासियों ने बड़े ही धूमधाम के साथ पर्व को मनाया।जिसमे उपस्थित मंदिर के पुजारी पंडित प्रेम नारायण,अमित शर्मा,निकुंज शर्मा,अनोखी शर्मा उर्फ(ताशु),लक्की कौशिक, हनी शर्मा, काशी शर्मा, तुषार शर्मा,वरुण कौशिक, वंश शर्मा,सोनू कौशिक,सुमित शर्मा(टेकू),गोल्डी कौशिक,तरुण ठाकुर, बबलू शर्मा,राहुल शर्मा , प्रशांत मलिक,सत्ते शर्मा,राज, क्रिश, देव,पर्व शर्मा,आदि मौजूद रहे।

## संक्षिप्त डायरी

### हरे भरे पेड़ों का दिनदहाडे हुआ कटान मौके पर नहीं पहुंचे वन अधिकारी

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।
सरकार के द्वारा जहां करोड़ों रुपए खर्च करके वृक्षारोपण अभियान चलाया जा रहा है।वहीं दूसरी तरफ धरातल पर वन विभाग के जिम्मेदार अपनी जेबों का वजन बढ़ाने के उद्देश्य से लकड़ी माफियाओं से साठ-गांठ काटकर सरकार की मंशा को तार-तार करने पर लगे हुए हैं। जिले के सिधौली क्षेत्र में वन विभाग के बीट प्रभारी व लकड़ी माफियाओं की मिली भगत से प्रतिबंधित पेड़ो पर खुलेआम आरा चला कर प्रतिबंधित पेड़ों को दिनदहाड़े धराशाई करके हरियाली को नष्ट किया गया। पूरा मामला सिधौली कोतवाली इलाके के छाजन गांव हैं।जहां पर बेखौफ वन माफियाओं के द्वारा जामुन के पेड़ों को काट कर मौके से लकड़ी गायब कर दी गई। समय रहते लकड़ी काटन की सूचना ग्रामीणों के द्वारा वन विभाग सहित पुलिस को को दी गई। वन विभाग के अधिकारी क्षेत्र में मौजूद रहे लेकिन मौके पर जाना उचित नहीं समझा। जनता का भारी दबाव बनता देख,वन विभाग ने वन माफियाओं पर दिखवा कर कार्यवाही करने की बात कही है। सिधौली क्षेत्र में अगर ऐसे ही वन विभाग की लापर वाही रही तो ज्यादा समय नहीं लगेगा क्षेत्र की हरियाली वन विभाग की मेहरबानी से जल्द से जल्द नष्ट हो जाएगी। और सरकार के द्वारा चलाया जा रहा वृक्षारोपण अभियान सिर्फ कागजों पर ही सिमट कर रह जाएगा। आखिर क्यों वन विभाग व राजस्व विभाग ऐसे लोगों पर ठोस कार्रवाई नहीं कर पा रहा हैं। ऐसे में तो सरकार का अर्थिक नुकसान हो ही रहा है। प्रतिबंधित वृक्षों के कटान को लेकर जब वीट प्रभारी मनोज यादव को जानकारी दी गई तो उनके द्वारा अंजान बन कर मौका दिखाने की बात कही गई वन विभाग के अधिकारियों का इस तरह बात करना ही लोगों के मन में प्रश्न चिन्ह खड़े करने लगता है?

### वायरल बुखार से बचाव को लेकर अधीक्षक लहरपुर ने लोगों को किया जागरूक ।

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय। जिले में बढ़ रहे वायरल फीवर को देखते हुए लहरपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अधीक्षक डॉ० अरविंद बाजपेई ने वायरल बुखार से बचने के लिए जनमानस से अपील की। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र लहरपुर के अधीक्षक डॉ० अरविंद बाजपेई ने बताया है कि बरसात के मौसम में प्राय: वायरल फीवर के बढ़ते मामलों को देखा गया है। उन्होंने वर्तमान समय में बढ़ रहे वायरल फीवर को देखते हुए नागरिकों से सतर्क रहने और जरूरी सावधानियां बरतने को कहा है। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के अधीक्षक ने बताया कि वायरल बुखार से बचने के लिए कुछ सावधानियां बेहद महत्वपूर्ण हैं, जिन्हें प्रयोग में लाकर सुरक्षित बचा जा सकता है। उन्होंने कहा कि सभी को यह सुनिश्चित करना होगा कि वह अपने घर में तथा आस पास साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें। नमी और गंदगी न होने दें, वहीं मच्छरों से बचाव के लिए फुल आस्तीन के कपड़े पहने सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग करें तथा अन्य मच्छर रोधी उपायों का प्रयोग करें। व्यक्तिगत साफ सफाई पर विशेष ध्यान दें। प्रदूषित जल का सेवन ना करें। बारिश के कारण जल स्रोतों में प्रदूषण बढ़ जाता है, जिसके कारण वायरल फीवर हो सकता है। वायरल फीवर के सामान्य लक्षण जैसे तेज बुखार सर दर्द बदन दर्द गले में खराश थकान सर्दी या खांसी होना हैं। यह लक्षण मालूम होने पर तुरंत अपने नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों पर जाकर डॉक्टर से परामर्श लेकर जांच कराए। वायरल बुखार के लक्षण महसूस होने पर नजर अंदाज ना करें। अधिक से अधिक शुद्ध पानी का सेवन करें, शरीर को डिहाइड्रेट ना होने दें। अपने हाथों को बार -बार साबुन से धोएं तथा सड़े गले फलों का सेवन न करें। पर्याप्त आराम करें तथा ताजा खाना खाएं। आप इन उपायों को अपना कर अपने सहित अपने परिवार के सदस्यों को वायरल बुखार से बचाव कर सकते हैं।

### प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण की नई नीति पर हुआ जागरूकता कार्यशाला का आयोजन।

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय। प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के लिए जारी नहीं नीति पर जागरूकता कार्यशाला का आयोजन जिले के खण्ड विकास हरगांव के सभागार में किया गया। इस कार्यशाला में क्षेत्र के प्रधान,बीडीसी व जन प्रति निधि शामिल हुए।प्रधान मंत्री आवास योजना ग्रामीण के लिए खण्ड विकास अधिकारी आत्म प्रकाश रस्तोगी ने प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण की नई नियमावली के सम्बन्ध में विस्तार से ग्राम प्रधानों क्षेत्र पंचायत सदस्यों जिला पंचायत सदस्यों को जानकारी दी,और भविष्य में आने वाले प्रधानमंत्री आवास योजना का ठीक ढंग से वितरण हो पात्र व्यक्ति वंचित न रहने पाए। इस बाबत कई प्रधानों की शंका का निस्तारण भी किया। इस अवसर पर ब्लॉक प्रमुख का प्रतिनिधित्व कर रहे कमलेश वर्मा ,जिला पंचायत सदस्य अमित भार्गव, एडीओ पंचायत वीर सेन, एडीओ कोऑपरेटिव राम निवास राणा, प्रधान दीपक यादव , अंकित सिंह पचेहरा, सिद्धू सिंह, मनोज यादव अनुपम सिंह, विजय प्रधान,पंकज शुक्ल,अंकुल गांधी,धीरेंद्र सिंह,बंटन अवधेश वर्मा,श्याम सुंदर उस्मान खां आदि मौजूद रहे।

### भगवान राधा कृष्ण के विभिन्न स्वरूपों की भव्य सजीव झांकियों का मंचन देख भाव विभोर हो उठे श्रृद्धालु ।

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय। जिले की लहरपुर तहसील मुख्यालय के प्रसिद्ध छन्नू लाल द्वारिका प्रसाद मन्दिर में राधा अष्टमी के पावन अवसर पर बुधवार देर शाम मंदिर प्रांगण में आयोजित भजन संध्या में लखीमपुर से आए गायक शक्ति सिंह व उनकी पार्टी के द्वारा प्रस्तुत भजनों पर देर रात तक श्रृद्धालु झूमते रहे। इस मौके पर भगवान राधा कृष्ण के विभिन्न स्वरूपों की भव्य सजीव झांकियों का मंचन भी किया गया जिसे देखकर दर्शक भाव विभोर हो उठे श्री लाडली जू के पांच हजार दो सौ बावनवें प्रकटोत्सव को लेकर मंदिर प्रांगण में आयोजित संगीत मय भजन संध्या में लखीमपुर से आए भजन गायक शक्ति सिंह व उनकी पार्टी द्वारा श्री राधा जी के भजनों का सुंदर प्रस्तुती करण किया गया। इस मौके पर उनके द्वारा गाए गए भजन राधे राधे जपो चले आएंगे बिहारी, मनिहारी का भेष बनाया श्याम चूड़ी बेचने आया, सांवली सूरत पे मोहन दिल दीवाना हो गया आदि भजनों को सुनकर उपस्थित श्रृद्धालु भाव विभोर होकर झूमने लगे। इस मौके पर श्री राधा कृष्ण की सजीव झांकियों का भी मनोहारी मंचन किया गया जिसे देखकर श्रृद्धालुओं द्वारा सराहा गया। देर रात तक चले कार्यक्रम में भारी संख्या में महिलाएं, बच्चे और श्रद्धालु उपस्थित रहे।श्री लाडली जू के प्रकटोत्सव पर एक विशाल भण्डारे का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से वीरेंद्रपुरी,श्री नारायण मल्होत्रा, हरीश रस्तोगी, सौरभ पुरी,आशीष रस्तोगी, गौरव पुरी,पंकज पुरी, अनमोल पुरी,सौरभ पुरी सहित भारी संख्या में श्रृद्धालुओं व महिलाएं उपस्थित थे।

## फरेबी निकला फेसबुकिया आशिक रामदेव। कुटुंब ऐप पर दोस्ती विधवा महिला को पड़ी भारी, शादी का झांसा देकर होटल, धर्मशालाओं में बनाया हवस का शिकार, गर्भवती बनाकर छोड़ा।

लिव-इन रिलेशनशिप में रहने के बाद विधवा महिला को गर्भवती बनाकर 'फरेबी आशिक' ने शादी से किया इंकार ।

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय। 'वो कुटुंब ऐप पर प्यार करके साजिश की जाल में फंसकर वो लिव-इन रिलेशनशिप में रहकर लुट गई किसने उसे अटूट प्रेम के सब्जबाग दिखाए थे, दो माह की गर्भवती बनाकर फरेबी आशिक अचानक गायब हो गया। बंद कमरो में आशिकी की मार खाने के बाद अब वो विधवा महिला अपने फरेबी आशिक को इधर-उधर ढूंढ रही है ताकि धोखेबाज आशिक को सबक सिखा सके उसे जेल की सलाखों के पीछे भेज सके। उत्तर प्रदेश के जनपद शाहजहांपुर निवासी एक शादी शुदा शख्स ने एक विधवा महिला से कुटुंब ऐप पर दोस्ती कर शादी का झांसा देकर उससे शारीरिक सम्बन्ध बनाता रहा।पीड़िता ने बताया कि इस दौरान आरोपी शख्स ने अश्लील वीडियो भी बनाकर उसे ब्लैक मेल किया। गत दिनों पूर्व आरोपित ने जिले के जेल रोड स्थित धर्म शाला सेठ खूबचंद नंदराम में काफी बार बुलाकर फिर महिला के साथ यौन शोषण किया बताने के अनुसार विरोध करने पर आरोपित युवक ने उसे मारा पीटा और धमकी देकर रफू-चक्कर हो गया। पीड़िता ने शख्स से आजिज होकर अपने साथ हुए घटनाक्रम की लिखित तहरीर सीतापुर पुलिस को दी है। पीड़िता के मुताबिक राम देव पुत्र श्यामा चरन निवासी ग्राम टाह थाना बंडा जनपद शाहजहांपुर ने कुछ माह पहले कुटुंब ऐप के जरिए उसकी दोस्ती रामदेव पता उपरोक्त से हुई थी शख्स ने शादी का झांसा देकर उसके साथ होटल व धर्मशालाओं में रहकर कई बार शारीरिक सम्बन्ध बनाए। इस दौरान आरोपी शख्स ने उसका अश्लील वीडियो भी बनाया। इधर,विधवा महिला गर्भ वती होने पर समाज के डर से आरोपी शख्स से शादी करने के लिए कहने पर भड़के आरोपी रामदेव ने शादी से इन्कार करते हुए विधवा महिला को उसके अश्लील वीडियो व फोटो वायरल करने की धमकी दे डाली। तहरीर के अनुसार महिला का आरोप है कि शख्स से जब पीड़िता शादी की बात करती है तो विपक्षी शख्स शादी से इंकार करते हुए दो माह का गर्भ गिरवाने की बात करता है हालांकि पीड़िता ने पुलिस अधीक्षक सीतापुर समेत उच्च अधिकारियों से शिकायत करते हुए आरोपी शख्स पर कठोर कार्रवाई की मांग की है। इस सम्बन्ध में सीतापुर नगर कोतवाली प्रभारी से जब जानकारी की गयी तो उनके द्वारा बताया गया कि आईजीआरएसस के माध्यम से शिकायत प्राप्त हुई है, जिसकी जांच की जा रही है, जांचोपरांत विधिक कार्यवाही की जाएगी।

## राजकीय कन्या इंटर कॉलेज में व्यायामशाला बनाने की कवायद

नगर पंचायत ओबरा के ईओ ने किया मुआयना।

संस्कार उजाला
क्राईम ब्यूरो विकास कुमार हलचल।
सोनभद्र । राजकीय कन्या इंटर कॉलेज में पौधरोपण करते नगर पंचायत के ईओ मधुसूदन जायसवाल, पूर्व नप अध्यक्ष दुर्गावती देवी, विद्यालय की प्रधानाचार्य डॉ भावना शुक्ला ओबरा-स्थानीय राजकीय कन्या इंटर कॉलेज में व्यायामशाला बनाने की कवायद शुरू की गयी है। गुरुवार को विद्यालय पहुंचे ओबरा नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी मधुसूदन जायसवाल ने विद्यालय परिसर का मुआयना किया। इस दौरान पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष दुर्गावती देवी भी उपस्थित रही। विद्यालय की प्रधानाचार्य डॉ भावना शुक्ला ने नगर पंचायत के ईओ का स्वागत करते हुए उन्हें विद्यालय की तमाम बुनियादी समस्याओं से अवगत कराया। बताया कि विद्यालय का संचालन वर्ष 1982 से हो रहा है जिसमे अध्ययनरत छात्राओ की संख्या 861 है। लेकिन यहाँ आज भी छात्राओं के समग्र विकास में महत्वपूर्ण व्यायामशाला नहीं है।ऐसे में विद्यालय में इनडोर और आउटडोर जिम हॉल बनाने में नगर पंचायत के सहयोग की आवश्यकता है। बताया कि विद्यालय की भूमि लगभग एक एकड़ हैं लेकिन सुरक्षा कारणों से पौधरोपण और बागवानी के लिए अपेक्षित स्थिति नहीं है। विद्यालय परिसर में पथ वे लाइट लगाने सहित विद्यालय परिसर के व्यापक जीर्णोद्धार की नगर पंचायत ओबरा से अपेक्षा है जिससे विद्यालय में समग्र गतिविधियों में बढ़ावा मिल सके। विद्यालय प्रशासन द्वारा नगर पंचायत को प्रस्ताव पत्र भी सौंपा गया। इस दौरान विद्यालय परिसर में पौधारोपण भी किया गया। अधिशासी अधिकारी ने विद्यालय प्रशासन को हर संभव मदद का आश्वासन दिया। मौके पर जलपुरुष रमेश सिंह यादव, खेल शिक्षक सोनी सिंह, रोली त्रिपाठी, विष्णुदेव पाण्डेय एवं श्याम बिहारी सहित तमाम शिक्षक और छात्र मौजूद रहे।

## मार्ग दुरुस्तीकरण एवं अन्य समस्याओं के समाधान हेतु मुख्य विकास अधिकारी को फौजी ने लिखा पत्र।

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।
सुरसा की भांति ग्रामीण अंचल में समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं इन समस्याओं को लेकर छोटे- छोटे नौनिहालों एवं बुजुर्गों को खासी परेशानी से गुजरना पड़ता है। देश के देश के भावी कर्णधारों एवं बुजुर्गों की परेशानी से व्यथित होकर देश की सुरक्षा में लगे फौजी ने जिले के मुख्य विकास अधिकारी को पत्र लिखकर समस्या के तुरंत समाधान की मांग की है। जानकारी के अनुसार देश की सुरक्षा में लगे फौजी के घर का मार्ग इन दिनों बड़ी बदहाल स्थिति में है।घर के मुख्य मार्ग पर बरसात के दिनों में इतना कीचड़ जमा हो जाता है कि बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। जिस कारण देश के भावी कर्णधार मासूम बच्चों की शिक्षा में बाधा उत्पन्न हो रही है। बताते हैं कि समस्या के समाधान हेतु ग्राम प्रधान से लेकर ब्लॉक तक फरियाद लगाकर थके हारे फौजी ने अब जिले की मुख्य विकास अधिकारी को पत्र भेजा है। विकास खण्ड परसेंडी के कंजा शरीफपुर निवासी फौजी निसार अहमद वर्तमान में भारत की सीमा पर लद्दाख में तैनात होकर देश की सुरक्षा कर रहे हैं। फौजी ने मुख्य विकास अधिकारी निधि बंसल को भेजे गये पत्र में गांव की बदहाल मार्ग व्यवस्था का उल्लेख किया है।इनका दावा है कि कीचड़ भरे रास्तों से बच्चों का स्कूल जाना मुश्किल हो गया है।आमजन से जुड़े कार्य भी बाधित हो रहे हैं।मार्ग दुरुस्तीकरण किया जाना आवश्यक है। फौजी ने जिम्मेदार अधिकारी से तत्काल मार्ग दुरुस्त करा कर अन्य सामयिक समस्याओं का निदान कराने की गुहार लगाई है।

## ढोल नगाड़े व डीजे के साथ धूमधाम से किया गया भगवान गणेश की प्रतिमा का विसर्जन

संस्कार उजाला
क्राईम ब्यूरो विकास कुमार हलचल।
सोनभद्र। चोपन में दो स्थानों पर गणेश पूजा के मौके पर स्थापित प्रथम पूज्य भगवान श्रीगणेश की प्रतिमा का विसर्जन धूमधाम के साथ बीते गुरुवार देर संध्या को किया गया. चोपन सोनभद्र. चोपन बैरियर रामलीला मैदान में स्थानों पर गणेश पूजा के मौके पर स्थापित प्रथम पूज्य भगवान श्रीगणेश की प्रतिमा का विसर्जन धूमधाम के साथ बीते गुरुवार देर संध्या को किया गया. मौके पर रामलीला मैदान के समीप स्थापित गणेश जी की प्रतिमा को सजाकर रथ पर रखा गया. इसके उपरांत बड़ी संख्या में बाजार वासियों ने ढ़ोल, बेंजो, डीजे पर भक्ति गीत बजाते हुए नाचते, गाते गणपति बप्पा मोरया, जय गणेश आदि जयकारा लगाते हुए बैरियर चौक, सिन्दूरीया मार्ग, थाना मोड़, बाजार आदि का भर्मण कराते हुए देर रात नम आंखों से श्रद्धालुओं ने आरती एवं स्तुति के बाद भगवान श्रीगणेश की प्रतिमा को विसर्जित किया. लाखन वीर स्थानों के बगल में पोखरे में विसर्जन जुलूस निकाल गणेश जी की प्रतिमा को विसर्जित किया गया. इस मौके पर शांतिपूर्ण ढंग से विसर्जन कराने एवं किसी भी अप्रिय घटना से निपटने चकाई पुलिस जुलूस के साथ चल रही थी तथा अपने देख रेख में प्रतिमा का विसर्जन करवाया. मौके पर आर्यन दुबे, शिवम शर्मा, छोटू, सामू, नितेश, राज हर्ष अग्रहरि, अप्पू, अजय, बबलू सिंह, रंजीत गुप्ता, गौरव गुप्ता, अमन गुप्ता, लाल केसरी, सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु विसर्जन जुलूस में के साथ चल रहे थे।

# हरगांव क्षेत्र में विद्युत व्यवस्था चरमराई।

नए उप खण्ड अधिकारी के सामने अनेकों चुनौतियां मुंह बाए खड़ीं। ,रोस्टर प्रणाली ने ग्रामीणों का जीना किया हराम विद्युत अधिकारी जेबें भरने में मस्त

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।
जिले की आदर्श नगर पंचायत हरगांव क्षेत्र के अन्तर्गत इन दिनों विद्युत व्यवस्था चरमरा सी गई है। चौबिस घंटों में मात्र दो चार घंटे के लिए क्षेत्र में बिजली के दर्शन होते हैं।ऊपर से रोस्टर प्रणाली के अन्तर्गत ग्रामीण अंचल के साथ भेद भाव पूर्ण रवैया पावर कापोर्रेशन के द्वारा अपना कर ग्रामीण अंचल में बिजली चौबिस घंटे में मात्र दो घण्टे कभी वह भी नहीं मिल पाती है।यह समस्या विद्युत उपकेन्द्र हरगांव में नव नियुक्ति पर आए नए उप खण्ड अधिकारी के लिए चुनौती बनी हुई है।ऊपर से उच्चाधिकारियों के द्वारा विद्युत वितरण व्यवस्था में शासन से मिलने वाली भारी भरकम धनराशि की बंदरबांट से होने वाली क्षतिग्रस्त लाइनो की स्थित में सुधार का न हो पाने से कहीं ना कहीं जनता के चेहरे पर चिंता की लकीरें जरूर है। प्राप्त जानकारी के अनुसार जिले के हरगांव क्षेत्र में इन दिनों विद्युत सप्लाई व्यवस्था पूर्ण रूपेण चरमरा सी गई है।ऊपर से पावर कापोर्रेशन की रोस्टर प्रणाली ने शहर व ग्रामीण में अन्तर पैदा कर दिया है।ग्रामीण अंचल में जहां चौबिस घंटे में नौ घंटे की रोस्टर के अन्तर्गत कटौती तथा फाल्ट के नाम पर घंटों की कटौती होती है वहीं तैंतिस हजार लाइन का अक्सर फेल होना व घंटों बंद रहना यह सब ग्रामीण अंचल के परेशानी का सबब बने हुए है। वहीं शहरो की विद्युत व्यवस्था बगैर रोस्टर के हिसाब से अनवरत चलती रहती है।फाल्ट के नाम पर शहरों में मात्र तीस मिनट से साठ मिनट तक ही विद्युत सप्लाई प्रभावित रहती है।हरगांव विद्युत उपकेंद्र पर नवनियुक्ति में आए नए उप खण्ड अधिकारी विनीत वर्मा के सामने ग्रामीण अंचल से शहर कस्बा तक अनेकों चुनौतियां मुंह बाए खड़ी हैं।ऊपर से शासन से मेंटिनेंस के नाम पर भारी भरकम धनराशि का विद्युत विभाग के उच्चाधिकारियों में बंदर बांट होकर छोटी बड़ी सभी लाइनें जस की तस अपनी बदहाली पर आंशू बहाती रहती है। वहीं ग्रामीण अंचल के उपभोक्ता कष्टमय जीवन जीने को बाध्य हैं। पावर कापोर्रेशन से लेकर विद्युत विभाग के अधिकारी गण मुख्यमंत्री योगी सरकार को पलीता लगाने में मस्त हैं।

## विधायक, डीएम, एसपी द्वारा द्वारा सलैया बुजुर्ग बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को दिये गये आवश्यक दिशा निर्देश

संस्कार उजाला
उरई(जालौन)। माधौगढ़ विधायक मूलचंद निरंजन, जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय व पुलिस अधीक्षक डॉ.दुर्गेश कुमार ने जनपद की कोंच तहसील क्षेत्र के सलैया बुजुर्ग बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण कर सम्बंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान जिलाधिकारी द्वारा तहसील कोंच के संभावित बाढ़ प्रभावित ग्राम सलैया बुजुर्ग का भ्रमण कर निरीक्षण किया तथा ग्रामीणों से स्थिति की जानकारी ली। जिलाधिकारी ने कहा कि संभावित बाढ़ को देखते हुए पर्याप्त संख्या में नावों की व्यवस्था व एसडीआरएफ टीम तैनात कर दी गई है, जिससे आवश्यकता पड़ने पर बाढ़ प्रभावितों को सुगमता से सुरक्षित स्थल पर बनाई गई राहत शिविर उच्च प्राथमिक विद्यालय में विस्थापित किया जा रहा है। जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिए कि ग्रामीणों को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो इसके लिए स्वास्थ्य शिविर लगाया जाए, राहत शिविर पर आवश्यकता अनुसार चिकित्सा टीम तैनात कर दी जाए तथा यहां प्रयाप्त मात्रा में सभी आवश्यक दवाइयां उपलब्ध रहें, आवश्यकतानुसार लोगों को सुविधा उपलब्ध कराई जाए। ग्रामीणों को बेहतर से बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा सरकार द्वारा दी जा रही विभिन्न सेवाओं का सुगमता से पहुंचाना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। गांव के प्रभावित व्यक्तियों को राहत शिविर में पहुंचा जा रहा है उनके खाने-पीने का इंतजाम की व्यवस्था के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। पशुओं को भी सकुशल सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया है उनके समुचित व्यवस्था जैसे भूसा, चारा, घास आदि की व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया। जिलाधिकारी ने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि वह अपने-अपने क्षेत्र में लगातार भ्रमण करते रहें। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व संजय कुमार, उप जिलाधिकारी कोंच ज्योति सिंह, क्षेत्राधिकारी अर्चना सिंह ग्राम प्रधान कल्लू शिवहरे,डी, एन, शिवहरे,सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

## बारिश का पानी जमा होने से ग्रामीण परेशान,पांच साल से नहीं हुआ विकास

संस्कार उजाला
सीतापुर राकेश पाण्डेय।
जिले के विकास खण्ड बिसवां की ग्राम पंचायत महमदापुर के मुख्य रास्ते पर जलभराव की समस्या काफी समय से है। ग्राम पंचायत के वाशिंदे पंचायत प्रशासन व प्रधान की अनदेखी से परेशान हैं। ग्रामीणों ने बताया कि गाँव के मुख्य रास्तों में गंदगी का अंबार लगा हुआ है। आम रास्ते पर कीचड़ होने से जीना दूभर हो गया है। रास्ते में जगह-जगह कीचड़ फैला हुआ है। गंदगी होने से मच्छर पनप रहे है। इससे लोगों मे बीमारी फैल रही है। आम रास्ते के बीचों-बीच कीचड़ जमा होने से लोग फिसलकर चोटिल हो जाते हैं वही पर बारिश में लोगो का बुरा हाल है। रास्ता बारिश के पानी से लबालब भर जाता है। इससे निकलना मुश्किल हो जाता है।छोटे छोटे बच्चों का खेलना व घूमना बंद हो जाता है वही पर छोटे छोटे बच्चों का स्कूल जाने के लिए बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है आम रास्ते में गंदगी व जल भराव से लोग काफी परेशान हैं। ग्राम पंचायत की समस्या से परेशान होकर राम शंकर मिश्र,दया शंकर मिश्र, जगदीश कुमार यादव, विवेक कुमार,नवल किशोर, डॉ हरिकिशन मिश्र ने कहा कि अब इस समस्या को लेकर जिले के जिला अधिकारी से मिलकर शिकायत करेंगे। तब हो सकता है कि समस्या समाधान के लिए अधिकारी ध्यान दे दें।जनप्रतिनिधि से आखिर कब तक उपेक्षा की जाती रहेगी वही पर ग्रामीणों ने बताया ग्राम प्रधान को पांच साल पूरे हो रहे है पर आज तक महमदापुर को मुड़ कर नहीं देखा और न ही कोई विकास कार्य कराया है जब ग्रामीण विकास कार्य की प्रधान से बात कहते है तो प्रधान के द्वारा उसको टाल दिया जाता है लोगों की सोच है कि आखिर कब होगा महमदापुर मे विकास कार्य। ग्राम के प्रबुद्ध नागरिकों ने विकास खंड कार्यालय से लेकर जिले के अधिकारियों से ग्राम पंचायत में विकास कार्य करवाए जाने की मांग की है।

## संक्षिप्त डायरी

### बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति के खिलाफ लगातार पिछले दो हफ्ते से आंदोलन, शीट बढ़ोतरी को लेकर छात्राओं का फूटा गुस्सा



**संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा**
पंडित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय बांदा में बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति की प्रतिमात्मक अर्थी लेकर शव यात्रा पूरे महाविद्यालय में निकालने का काम किया जिसके तत्पश्चात महाविद्यालय परिसर के गेट में कुलपति की प्रतीकात्मक अर्थी को रखकर आक्रोश जताने का काम किया व छात्रों ने अंतिम विदाई दी लगातार पिछले दो हफ्ते से आंदोलन को छात्राएं गति दे रहे हैं इसके बावजूद भी बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा महाविद्यालय की सीट नहीं बढ़ाई गई जो कि उनके हक की प्रवेश सीट है जिसके कारण गरीब छात्राओं में भारी आक्रोश है उनका भविष्य संकट में है वहीं कुलपति की प्रतीकात्मक यात्रा अर्थी एवं शव यात्रा का नेतृत्व करने वाले छात्र नेताओं में लव सिन्हा ,शैलेंद्र कुमार वर्मा, यशराज गुप्ता, देवेश मोनू, दीपक गुप्ता, योगेंद्र पाल ने रहकर कुलपति के प्रतिमात्मक पुतले को कंधा देते हुए अंतिम विदाई कर नेतृत्व का काम किया वही शिवा शुक्ला ने अंतिम रीति रिवाज ब्राह्मण के रूप में निभाने का काम किया व छात्र-छात्राओं ने दाग लिया वहीं मौजूद अनुराग गुप्ता ने कहा आज कुलपति की अंतिम यात्रा निकालते हुए उनकी आत्मा से विनती करते हैं कि वह गरीब छात्राओं की आह: न ले उनके दर्द को समझने का काम करे वह जल्द से जल्द सीट बढ़ाएं। वहीं दूसरी तरफ छात्र नेता सुंदरम ठाकुर ने कहा कुलपति होश में नहीं है इसलिए मजदूर, किसानों ,गरीब छात्र और उनके परिजनों की आवाज नहीं सुन पा रहे हैं मौजूद शैलेंद्र वर्मा ने कहा शायद अंतिम विदाई के बाद कुलपति की आत्मा हमारी मांगे पूरी कर सकें तभी आज छात्रों ने आक्रोश और दर्द बयां किया है इस मौके पर बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के छात्र नेता लव सिन्हा, स्टूडेंट यूनियन जिला अध्यक्ष शैलेंद्र कुमार वर्मा ,भाजपा युवा मोर्चा नगर अध्यक्ष यशराज गुप्ता ,दीपक गुप्ता ,योगेंद्र, शिवा शुक्ला, सार्थक पटेल ,सुंदरम, सचिन कुमार ,देवेश मोनू ,उदय प्रताप हर्षित सेन ,मोनू यादव, दिव्यांश द्विवेदी ,सचिन कुमार, अरविंद ,मिथिलेश ,रिचा काजल, पल्लवी ,ज्योति वर्मा, अंशिका सिंह, सपना गुप्ता, सुधा यादव आदि बड़ी संख्या में छात्राएं मौजूद रहे।

### क्षेत्राधिकारी गवेन्द्र पाल गौतम के विदाई समारोह का किया गया आयोजन

**संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा**
**बांदा** में गुरुवार को पुलिस लाइन सभागार में क्षेत्राधिकारी अतर्रा गवेन्द्र पाल गौतम का जनपद खीरी स्थानान्तरण होने पर विदाई समारोह का आयोजन किया गया। गवेन्द्र पाल गौतम दिनांक 17 .06 .2022 को जनपद बांदा में नियुक्त हुए थे । लगभग 27 माह का कार्यकाल पूर्ण कर उनका स्थानांन्तरण जनपद खीरी हुआ है। बांदा में नियुक्त रहते हुए उन्होने क्षेत्राधिकारी नगर, क्षेत्राधिकारी सदर, क्षेत्राधिकारी अतर्रा, क्षेत्राधिकारी लाइन, क्षेत्राधिकारी यातायात आदि के पदों को बखूबी निर्वहन किया। समारोह में पुलिस अधीक्षक बांदा अंकुर अग्रवाल द्वारा उनके कार्यकाल की सराहना करते हुए नवीन पोस्टिंग की शुभकामनाएं दी गई। समारोह में सभी क्षेत्राधिकारीगण, प्रतिसार निरीक्षक पुलिस लाइन, समस्त थाना प्रभारी आदि उपस्थित रहे।

### एसपी ने निरंतर पैदल गस्त करने तथा प्रभावी जनसुनवाई के दिए निर्देश

**संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा**
**बांदा** में गुरुवार को पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल द्वारा पुलिस लाइन सभागार में जनपद के सभी राजपत्रित अधिकारियों व थाना प्रभारियों के साथ मासिक अपराध समीक्षा बैठक की गई। समीक्षा बैठक में पुलिस अधीक्षक द्वारा जनपद में अपराधों की रोकथाम व शांति एवं कानून व्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। पुलिस अधीक्षक द्वारा निर्देशित किया गया कि आने वाले त्यौहारों के दृष्टिगत भीड़भाड़ वाले स्थानों में पर्याप्त संख्या में पुलिस बल लगाया जाए साथ ही इन स्थानों पर बड़ी संख्या में महिला पुलिस कर्मियों को भी लगाया जाए तथा कुछ पुलिस बल सादे वस्त्रों में विभिन्न स्थानों पर भ्रमणशील रहें। इसके साथ ही एंटी रोमियो स्क्वायड तथा मिशन शक्ति मोबाइल टीम लगातार ऐसे स्थलों पर भ्रमणशील रहकर सतर्क दृष्टि बनाए रखें। पुलिस अधीक्षक द्वारा समस्त थाना प्रभारियों को निर्देशित किया गया कि हिस्ट्रीशीटर, ईनामिया, टॉप टेन अपराधियों, अवैध मादक पदार्थों की तस्करी करने वाले तथा अवैध शस्त्रों का निर्माण संग्रहण व बिक्री करने वाले अपराधियों पर त्वरित एवं कड़ी कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए। पुलिस अधीक्षक द्वारा सभी राजपत्रित अधिकारियों एवं थाना प्रभारियों को निर्देशित किया गया कि सभी अपने-अपने कार्यालयों एवं थानों पर प्रभावी जनसुनवाई सुनिश्चित करें तथा आने वाले फरियादियों की समस्याओं को सुन उनका त्वरित निस्तारण किया जाये। अपराध की रोकथाम में पैदल गस्त की भूमिका पर जोर देते हुए उन्होने निर्देशित किया किया सभी भीड़भाड़ वाले तथा संवेदनशील स्थानों पर नियमित पैदल गस्त करें साथ ही रात्रि गस्त पार्टी को भी प्रभावी तरीके से क्रियाशील करें।

### नदी में डूबने से दंपति की हुई मौत

**संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा**
**बांदा** जनपद से एक नया मामला प्रकाश में आया है, आपको बता दे कि बांदा के तिंदवारी थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम भिरोड़ा निवासी राजा बाई (45 वर्ष) पत्नी राजाराम (50 वर्ष) जोकि चिल्ला थाना क्षेत्र के महेदू की गौशाला में कार्य करते थे, बुधवार को घर न पहुंचने पर परिजनों और रिश्तेदारों ने दोनो की खोजबीन शुरू कर दी लेकिन दंपति का कही भी पता नही चला। क्षेत्राधिकारी ने जानकारी देते हुए बताया कि आज उक्त दंपति का शव नदी से बरामद कर लिया गया है, घटना के संबंध में बताया गया कि दंपति गौशाला में कार्य करते थे जोकि वापिस लौटते समय नदी में डूब गए होंगे, जिनका शव बरामद कर पंचनामा भरकर कार्यवाही की जा रही है। वहीं परिजन का रो रोकर बुरा हाल है तथा आस पास के क्षेत्र में शोक व्याप्त है।

## उ0प्र0 कृषि निर्यात निति 2019 के अंतर्गत जिला स्तरीय क्लस्टर सुविधा इकाई की बैठक संपन्न



**संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा**
**बांदा** में गुरुवार को अपर जिलाधिकारी न्यायिक की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार बाँदा मे उ०प्र० कृषि निर्यात निति 2019 (वथा संशाधित) के अंतर्गत जिला स्तरीय क्लस्टर सुविधा इकाई की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में इसविन्द कुमार, जेष्ठ कृषि विपणन निरीक्षक जनपद बाँदा द्वारा कृषि निर्यात निति 2019 (यथा संशोधित) के सम्बंध में एजेण्डानुसार संक्षिप्त परिचय देते हुए जनपद स्तर पर प्रगति की जानकारी सभी को प्रदान की गयी तथा नीति से सम्बंधित समस्त हितधारको यथा किसानी / एफ०पी०ओ०/ निर्यातको / अन्य को कृषि निर्यात नीति 2019 के अर्न्तगत दिये जाने वाले निर्यात आधारित प्रोत्साहन जैसे की निर्यात उन्मुक्त क्लस्टर निर्माण एवं निर्यात की दशा में 50 हेक्टेयर क्षेत्रफल के क्लस्टर हेतु 10 लाख की धनराशि तथा क्षेत्रफल 50 हेक्टेयर बढ़ने की दशा में 06 लाख रुपए का अतिरिक्त प्रोत्साहन धनराशि प्रदान किया जायेगा, इसके साथ ही निर्यात उन्मुख क्लस्टर के निकट स्थापित नवीन प्रसंस्करण इकाईयों के लिए कुल प्रसंस्कृत उत्पाद के 40 प्रतिशत निर्यात करने पर निर्यातक के टर्नओवर का 10 प्रतिशत अथवा 25 लाख जो भी कम हो पाँच वर्षों तक देय होगा। तथा निर्यात हेत परिवहन अनुदान कुल भाड़े का 25 प्रतिशत अथवा अधिकतम 20 लाख रुपए प्रति निर्यातक/ फर्म देय होगा। उक्त के अतिरिक्त कृषि निर्यात/पोस्ट हार्वेस्ट प्रबंधन और प्रोधौगिकी में डिग्री/डिप्लोमा सर्टिफिकेट कोर्स संचालित किये जाने पर राजकीय संस्थानों मे इनके बार्षिक फीस का 50 प्रतिशत अथवा रु० 50000 प्रति छात्र दिया जायेगा। एवं राजकीय संस्थानों को कोर्स संचालित करने पर 50 लाख का अनुदान एक मुस्त दिया जायेगा। निर्यात क्लस्टर में अच्छी कृषि पद्धत्तियो अथवा समकक्ष प्रमाणीकरण हेतु ब्यय का 50 प्रतिशत अथवा अधिकतम 1.50 लाख प्रति वर्ष की व्यय प्रतिपूर्ति किया जाना प्राविधानित है। इसके साथ ही जैविक/प्राकृतिक / समकक्ष प्रमाणीकरण हेतु कुल ब्यय का 50 प्रतिशत अथवा एक वित्तीय वर्ष में रू० 01 लाख की ब्यय प्रतिपूर्ति की जायेगी। इसके अतिरिक्त कृषि व कृषि प्रसंस्कृत उत्पाद के नमूनों का आयातक देशों के एम०आर०एल० मानको के अनुसार परीक्षण हेतु कुल ब्यय का 50 प्रतिशत अथवा एक वित्तीय वर्ष में अधिकतम 01 लाख रुपए की व्यय प्रतिपूर्ति किये जाने का प्राविधान है। बैठक में उप निदेशक कृषि विजय कुमार द्वारा कृषि विश्वविधालय को डिग्री/डिप्लोमा वेवम सर्टिफिकेट कोर्स संकलित किये जाने हेतु पत्राचार के सम्बंध में अपेक्षा की गयी जिसमे सदस्य सचिव द्वारा गत वर्ष 2023 में पत्राचार किये जाने के सम्बंध में अवगत कराया गया। इस संबंध में अपर जिलाधिकारी न्यायायिक द्वारा अनुस्मारक प्रेषित किये जाने के निर्देश दिये गये। उपकृषि निदेशक द्वारा जनपद से मिलेट्स (ज्वार, बाजर, इत्यादि) पर क्लस्टर निर्माण की सम्भावना व्यक्त की गयी जिसमे एफ०पी०ओ० को प्रेरित कर क्लस्टर निर्माण कराये जाने पर चर्चा की गयी।

## जल अभिनंदन कार्यक्रम का जलशक्ति मंत्री ने किया शुभारंभ

**संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा**
प्रदेश के जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह की अध्यक्षता में बुधवार को विशिष्ट अतिथि/ राज्य मंत्री, जल शक्ति विभाग उत्तर प्रदेश रामकेश निषाद, जिला पंचायत अध्यक्ष सुनील सिंह पटेल तथा जिलाधिकारी नगेंद्र प्रताप की उपस्थिति में ग्राम सहूरपुर विकासखंड तिंदवारी में जल अभिनंदन कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने कहा कि आज का दिन जनपद बांदा एवं ग्राम सहूरपुर के लिए ऐतिहासिक दिन है। आज इस दूरस्थ गांव में हर घर नल जल योजना के अंतर्गत सभी घरों में जल पहुंचाने का कार्य किया गया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी की परिकल्पना थी कि बुंदेलखंड में सुदूर क्षेत्र में महिलाओं को दूर से पानी लाना पड़ता है उसको दृष्टिगत रखते हुए यह योजना प्रारंभ की गई। उन्होंने कहा कि जल, वृक्ष, पोखर और नदियों को सुरक्षित रखें। नदियों में गंदा पानी व गंदगी नहीं जाने दे। उन्होंने कहा कि जल संचय करें तथा जल को व्यर्थ न जाने दें। सभी लोग एक होकर जल संरक्षण में भागीदारी करें। गांव में सभी लोग जल की देखभाल एक साथ करें तथा जल आंदोलन का कार्यक्रम जल संचयन हेतु करें। हर खेत का पानी खेत में तथा हर मेड पर पेड़ लगाए, जिससे जल संचयन करने में में अत्यंत लाभ होगा। उन्होंने कहा कि केन - बेतवा परियोजना के प्रारंभ होने से सभी नहरे में में 24 घंटे पानी उपलब्ध रहेगी जिससे इस क्षेत्र के लोगों को अत्यंत लाभ होगा। उन्होंने कहा कि हर घर व खेत तक पानी पहुंचने के लिए यह प्रयास किया जा रहा है' उन्होंने कहा कि हर नल जल योजना से शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है। प्रधानमंत्री द्वारा 2014 में स्वच्छता अभियान के अंतर्गत शौचालय तथा हर घर नल योजना से हर घर में पेयजल की व्यवस्था की गई है। उन्होंने कहा कि बुंदेलखंड में तेजी से सड़कों का चौड़ीकरण, नहर निर्माण तथा अन्य विकास कार्यों को तेज गति से किया जा रहा है। प्रदेश के जल शक्ति राज्य मंत्री रामकेस निषाद ने इस अवसर पर कहा की बुंदेलखंड में तेजी से विकास हो रहा है तथा हर घर नल जल योजना के अंतर्गत पेयजल की व्यवस्था की गई है। उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2014 में बुंदेलखंड एवं बिन्द क्षेत्र में पानी की कमी को देखते हुए जल उपलब्ध कराने की परिकल्पना की थी, उसी कल्पना के अनुसार आज हर घर जल योजना के अंतर्गत इस ग्राम में जल अभिनंदन का शुभारंभ किया गया है। उन्होंने कहा कि इस ग्राम में निर्मित की गई पानी की टंकी से आसपास के कई गांव ग्राम पलरा, सहूरपुर , नरी, बरेली कला, बंसी डेरा, पाही डेरा आदि गांव में शुद्ध पेयजल की सुविधा मिलेगी। उन्होंने कहा कि 45000 करोड़ से केन बेतवा लिंक को परियोजना इस क्षेत्र के लिए मील का पत्थर साबित होगी। कार्यक्रम में संबोधित करते हुए ब्रजराज सिंह, अधिशासी निदेशक, राज्य परियोजना स्वच्छता मिशन ने बताया कि इस योजना में उत्तर प्रदेश देश में प्रथम स्थान पर है और प्रदेश में हर घर नल जल योजना के अंतर्गत दो करोड़ 26 लाख घरों में शुद्ध पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। उन्होंने बताया कि योजना के अंतर्गत 10 वर्षों तक इसकी मरम्मत का अनुबंध भी संबंधित कार्य संस्था से किया गया है और सड़कों का मरम्मत कार्य भी पूर्ण कराया जा रहा है। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष सुनील सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि हर घर नल जल योजना महत्वपूर्ण योजना है। इस अवसर पर संतोष गुप्ता, बलराम कुशवाहा, अजय सिंह, वंदना गुप्ता, ग्राम प्रधान रामदयाल, शिवचरण निषाद तथा अन्य लोग उपस्थित रहे।

## पूर्व एसपी समेत कई बड़े अधिकारियों पर गाज!

**संस्कार उजाला**
**लखनऊ।** रामपुर में शत्रु संपति हड़पने के लिए किए गए फर्जीवाड़े के मामले से पूर्व मंत्री आजम खान का नाम निकालने को लेकर शासन ने पूर्व एसपी अशोक शुक्ला के विरुद्ध उच्च स्तरीय जांच के आदेश दिए हैं। इस संबंध में गृह विभाग ने जांच के लिए दो सदस्यीय कमेटी का गठन किया है। कमेटी में अलीगढ़ की मंडलायुक्त चैत्रा वी तथा पुलिस महानिरीक्षक सतर्कता मंजिल सैनी को शामिल किया गया है। दोनों अधिकारी मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय परिसर के अंतर्गत आने वाली शत्रु संपत्ति को हड़पने के मामले में विवेचना बदलने और आजम का नाम हटाने की जांच करेंगी।

## बारिश के मद्देनजर विभिन्न जगहों का निरीक्षण कर डीएम ने दिए निर्देश



**संस्कार उजाला**
**बांदा** जिलाधिकारी नगेन्द्र प्रताप ने पिछले दो दिनो से मध्य प्रदेश में बारिश होने से केन नदी का जल स्तर बढने के कारण सम्भावित बाढ की स्थित होने के सम्बन्ध में प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करते हुए निरीक्षण किया। उन्होंने पैलानी तहसील के अन्तर्गत ग्राम सिंधनकला, समेराडेरा, शिवरामपुर के बरेहटा रपटा तथा समरा डेरा रपटा का निरीक्षण करते हुए सिंधनकला गॉव के रास्ते में पडने वाले रपटे में जल स्तर बढ जाने के कारण उप जिलाधिकारी को सड़क के दोनों ओर पुलिस की व्यवस्था कराये जाने एवं नॉव की व्यवस्था कराये जाने के साथ सम्बन्धित कर्मियों की ड्यूटी भी लगाये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने अमरा संम्पर्क मार्ग के रपटे में भी जल स्तर बढने से लोगों को सतर्क करते हुए रपटे में नही जाने तथा पुलिस की व्यवस्था कराये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने उप जिलाधिकारी को निर्देशित किया कि तहसील के अन्तर्गत बाढ़ प्रभावित सम्भावित स्थानों पर लोगों को जागरूक करते हुए जानकारी दी जाए कि अधिक जल स्तर बढने पर सुरक्षित स्थान/बाढ चैकियों पर जायें। उन्होंने बचाव हेतु सभी आवश्यक व्यवस्थायें किये जाने एवं रात में भी बाढ से सम्बन्धित क्षेत्रों में कर्मचारियों की ड्यूटी लगाते हुए निगरानी रखने के निर्देश दिये। उन्होंने आरईएस के अधिशाषी अभियंता से बरेहटा रपटा की मरम्मत हेतु पूर्ण विवरण सहित स्टीमेट तैयार करने के निर्देश दिये। निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 राजेश कुमार, मुख्य विकास अधिकारी वेद प्रकाश मौर्य, उप जिलाधिकारी पैलानी शशि भूषण, खण्ड विकास अधिकारी जसपुरा उपस्थित रहे।

## आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत के संबंध में जिला जज की अध्यक्षता में आहूत हुई बैठक



**संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा**
राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली व राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के निदेर्शानुसार आगामी दिनांक 14 सितम्बर, 2024 दिन शनिवार को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाना हैं। इस परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय लोक अदालत में अधिक से अधिक वादों के निस्तारण हेतु जिला जज/अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बांदा डा० बब्बू सारंग की अध्यक्षता में उनके विश्राम कक्ष में वार्ता बैठक आहूत की गयी। जिला जज द्वारा मनदीप सिंह, अधिशाषी अभियन्ता शहरी / ग्रामीण, विद्युत वितरण खण्ड, बांदा तथा शंकर जी सिंह-आर.टी.ओ., बांदा को अधिक से अधिक वादों का निस्तारण कराये जाने के निर्देश दिये तथा यह भी कहा गया कि वे पक्षकारों से सम्पर्क स्थापित करें जिससे कि वादों के निस्तारण की सम्भावना को बढ़ाया जा सकें। नगर पालिका परिषद्-बांदा से उपस्थित आयी नीलम चौधरी अधिशाषी अधिकारी को जन्म व मृत्यु के वादों तथा प्रमोद कुमार-बी०सी०, उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन, बांदा को भी वादों का अधिकाधिक निस्तारण कराये जाने के निर्देश दिये गये। अपर जिला जज/नोडल अधिकारी राष्ट्रीय लोक अदालत बांदा निरन्जन कुमार द्वारा भी सुदर्शन बांट माप निरीक्षक, नवीन तिवारी-श्रम कार्यालय बांदा, राहुल-प्रबन्धक कैनरा बैंक, विजय त्रिपाठी-श्रीराम इंश्यारेन्स बांदा, दिवाकर साहू-सोनाटा फाइनेन्स बांदा को भी ज्यादा से ज्यादा वादों के निस्तारण हेतु निर्देशित किया गया। इस बैठक में चन्द्रपाल द्वितीय, अपर जिला जज-प्रथम, छोटेलाल यादव, अपर जिला जज (ई०सी० एक्ट), श्रीपाल सिंह, अपर जिला जज/सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण-बांदा व आलोक कुमार वर्मा, अपर सिविल जज-जू०डि०, बांदा उपस्थित रहें। इस राष्ट्रीय लोक अदालत में बैंक वसूली वाद, किरायेदारी वाद, मोबाइल फोन व केबल नेटवर्क संबंधी प्रकरण, आयकर, बैंक व अन्य वित्तीय संस्थाओं से सम्बंधित प्रकरण दीवानी वाद, उत्तराधिकार वाद, पारिवारिक वाद, मोटर दुर्घटना प्रतिकर वाद, चेक बाउंस के मामले, जनउपयोगी सेवाओं तथा वाणिज्य कर से सम्बन्धित प्रकरण, राजस्व/चकबन्दी/श्रम वाद, चालानी वाद व शमनीय प्रकृति के लघु आपराधिक वाद आदि मामलों का निस्तारण आपसी सुलह-समझौते के आधार पर किया जाएगा। साथ ही यातायात सम्बन्धी चालानों [illegible] का निस्तारण लोक अदालत के माध्यम से किया जायेगा। राष्ट्रीय लोक अदालत की अध्यक्षता मान्नीय जनपद न्यायाधीश डा० बब्बू सारंग द्वारा की जावेगी। उक्त के सम्बन्ध में समस्त वादकारी जनता, विधि व्यवसायियों एवं अन्य संबंधित व्यक्तियों से अपील है कि आप अपने-अपने वादों के निस्तारण हेतु अधिक से अधिक संख्या में दिनांक 14 सितंबर 2024 दिन शनिवार को आयोजित की जा रही राष्ट्रीय लोक अदालत में वादों को नियत कराते हुए जरिये सुलह-समझौता निस्तारण कराकर इस अवसर का लाभ उठावें।

## चल रहे अनशन में जेडीयू पदाधिकारियों को मिला छात्रों का समर्थन

**संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा**
**बांदा** में गुरुवार को पंडित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय के छात्रों के द्वारा अशोक लाट पर चल रहे अनशन में जेडीयू पदाधिकारियों व समाजसेवी शालिनी सिंह पटेल व साथ में रवींद्र कुमार भारतीय प्रदेश अध्यक्ष जनता दल यूनाइटेड श्रमिक प्रकोष्ठ उत्तर प्रदेश, जिला अध्यक्ष उमाकांत सविता जेडीयू बांदा जिला महासचिव जेडीयू अर्जुन सिंह, तहसील अध्यक्ष अतर्रा जदयू दिलीप गुप्ता, जिला सचिव जदयू जयप्रकाश निगम आदि लोगों ने मुलाकात कर समर्थन पत्र दिया। पंडित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय बांदा के छात्रों द्वारा मांगों को लेकर अशोक लाट परिसर में चल रहे क्रमिक अनशन में छात्रों की समस्याओं को देखते हुए छात्र हित को मध्य नजर रखते हुए समाजसेवी नेत्री शालिनी सिंह पटेल ने भी छात्रों की प्रमुख मांगो को लेकर समर्थन दिया है। इस दौरान मांग की गई कि पंडित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय बांदा में नवीन सत्र प्रवेश में सीट वृद्धि की जाए जिससे अधिकतम छात्र-छात्राओं को प्रवेश मिल सके। वर्षों से बंद पड़ा महिला छात्रावास चालू किया जाए जिससे अध्यनरत छात्राओं को कम शुल्क में अध्ययन कर सकें। अभिलंब ही छात्र नेता सनी पटेल के नेतृत्व में चल रहे प्रदर्शनकारियों की मांग महाविद्यालय प्रशासन तत्काल पूरी करें हम छात्रों के मांगों का समर्थन करते हैं। अगर पंडित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय बांदा प्रशासन एवं बुंदेलखंड यूनिवर्सिटी के कुलपति ने इन छात्रों की मांगे पूरी नहीं की गई तो समाजसेविका शालिनी पटेल सभी समर्थकों के साथ स्वयं सड़कों पर उतरने का काम करेंगी।

## महायोगी संत अवैधनाथ की गौ रक्षा समिति ने मनाई पुण्यतिथि

**संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा**
**बांदा** जनपद में गुरुवार को राष्ट्र संत ब्रम्हलीन महायोगी महंत अवैद्यनाथ महाराज जी की 10वी पुण्यतिथि विश्व हिंदू महासंघ गौ रक्षा समिति के तत्वाधान में मनाई गई। कार्यक्रम का आयोजन नगर क्षेत्र के लोहिया पुल के समीप कान्हा कुंज गेस्ट हाउस में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रसंत महंत अवैद्यनाथ महाराज जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर तथा फूल माला पहनाकर किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महाराज श्री हरिनारायण सिंह प्रदेश मंत्री रहे। मुख्य अतिथि विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रदेश मंत्री श्रीमती अर्चना शुक्ला दीपक शुक्ला मंडल प्रभारी एवं उपस्थित पदाधिकारीगण एवं मात्रशक्तियो द्वारा पूज्य अवैधनाथ जी के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। कार्यक्रम में समिति के नवनियुक्त पदाधिकारियों को नियुक्ति पत्र मुख्य अतिथि श्री हरि नारायण सिंह प्रदेश मंत्री के द्वारा प्रदान किया गया। इस दौरान राष्ट्रसंत महंत अवैद्यनाथ महाराज के विचारो को याद करते हुए उनके द्वारा सामाजिक हित में किए गए कार्य एवं उनके द्वारा लोगो को एक पथ प्रदर्शक की भांति रास्ता दिखाने के कार्यों को याद करते हुए उनको नमन किया गया तथा याद किया गया। कार्यक्रम का आयोजन गौ रक्षा समिति के जिलाध्यक्ष महेश कुमार प्रजापति के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के साथ साथ समिति के तमाम पदाधिकारी लोग मुख्य रूप से श्रद्धा गुप्ता, विनीता कौशल, रीना कश्यप, जिला अध्यक्ष दीपक शुक्ला अधिवक्ता प्रकोष्ठ, जिला प्रभारी सुरेश कान्हा, जिला महामंत्री राकेश कुमार त्रिपाठी, जिला उपाध्यक्ष महेश कुमार धुरिया, जिला उपाध्यक्ष राघवेंद्र द्विवेदी, जिला उपाध्यक्ष महेश, आलोक प्रजापति, जिला सहसंयोजक संतोष कुमार त्रिपाठी, जिला उपाध्यक्ष नंदू चतुर्वेदी, जिला उपाध्यक्ष कृष्ण चंद्र प्रजापति, जिला मंत्री अरुण कुमार मिश्रा, जिला मंत्री महेश गुप्ता, जिला मीडिया प्रभारी मितेश कुमार, तहसील अध्यक्ष पैलानी पवन कुमार द्विवेदी, तहसील अध्यक्ष नारायणी सोनू करवरिया, तहसील अध्यक्ष बबेरू प्रभंजन गुप्ता, ब्लॉक अध्यक्ष महुआ पुष्पेंद्र यादव, ब्लॉक अध्यक्ष बड़ोखर ब्लॉक सत्यम मिश्रा, नगर अध्यक्ष बृज किशोर द्विवेदी, सदर तहसील अध्यक्ष विनय कुमार प्रजापति सहित तमाम पदाधिकारी उपस्थित रहे।

# मुख्य अभियंता सुनील कुमार अग्रवाल सहारनपुर का बिजली उपभोक्ताओं के लिए संदेश

संस्कार उजाला
सहारनपुर

जैसा की आप जानते है बारिश का मौसम हो रहा है अतः इस संबंध में आमजन से अपील की जाती है की बिजली जनित हादसे से बचने हेतु निम्न सावधानियां बरतें:-
1. बिजली के खंभों को नहीं छुए।
2. बिजली के खंभों से अपने मवेशियों को ना बांधे।
3. बिजली लाइनों के नीचे कोई भी प्रोग्राम ना करे।
4. नए भवनों से बिजली लाइनों की उचित दूरी बनाए रखें।
5. खेत की मेड पर/खेत में यदि बिजली खंभा लगा है तो उचित दूरी रख कर ही जुताई करे।
6. बिजली खंभे पर यदि स्पार्किंग हो रही हैं तो तुरंत संबंधित फीडर इंचार्ज, जेई सब स्टेशन पर सूचना दें।
7. यदि बारिश में खंभे पर स्पार्क हो रही है और आस पास पानी भरा हुआ है तो उस रास्ते से या पानी में जाने से बचे व दूसरों को भी सावधान करें।
8. यदि बिजली के तार किसी पेड़ के निकट से गुजर रहे हो तो किसी भी स्थिति में उस पर चढ़ने से बचे।
9. ट्रांसफार्मर, लाइनो पर बम्बू से या किसी और चीज से कुंडी नहीं डाले, हेवी लाइनों पर रिसाव होने से व ग्राउंड होने से बड़ा हादसा हो सकता है।
10. किसी भी बड़े वाहन की छत पर यात्रा न करे ।
11. यदि बारिश की वजह से कोई लाइन ढीली पड़ गई हो या सड़क के ऊपर से नीची हो तो तुरंत अपने फीडर इंचार्ज, जेई या फिर सब स्टेशन पर सूचना दे ताकि समय पर सुधार हों सके।
12. बिजली खंभों को चार दिवारी या बाउंडीवाल में अतिक्रमण ना करें, हादसा होने पर भारी नुकसान हो सकता है।
13. घर में उपकरण अच्छी क्वालिटी के ही उपयोग करें।
14. घर के अंदर बिजली फिटिंग में अर्थिंग जरूर कराएं व अपने उपकरण को उससे जोड़े
15. अपने सभी स्विच, एमसीबी, इएलसीबी उच्च कोटि की ही लगायें
16. बगैर जानकारी के किसी भी उपकरण को छुने या खोलने से बचे ।
17. बारिश के मौसम में वायु/जमीन में नमी के कारण करंट लगने की संभावना ज्यादा होती है इसलिए ट्रासफॉर्मर/पोल/लाइन/स्टे तार से दूर रहे।
18. बिजली चमकने/गडगडाने पर बाहर खुले आसमान में नहीं जाए। बिजली तार/उपकरण को नहीं छुएं।
29. यदि कोई व्यक्ति बिजली के संपर्क / गिरफ्त में आ गया हो तो तुरंत उसे बचाने हेतु निम्न कार्य करे।
30 फीडर की बिजली बंद कराए व अपने आपको किसी सुखी जगह पर होना सुनिश्चित करें।
31 यह सुनिश्चित करें कि आपके जूते भीगे ना हो, ना ही उसमें किसी प्रकार का कोई भी धातु लगा हो, इसके पश्चात किसी इंसुलेटेड डंडे (प्लास्टिक, लकड़ी जो सुखा हो) से व्यक्ति को छुड़ाने का प्रयास करे।
32 यदि शोक/झटका घर के अंदर लगा है तो तुरंत मेन स्विच ऑफ करे।
33 व्यक्ति को तुरंत नजदीकी अस्पताल ले जाए।
34 देश और समाज के हित में बिजली बचाएं और समय पर अपना बिजली का बिल जमा कराएं।
जनहित में जारी

# बिजली का करंट लगने से वन गुर्जर के आठ पशुओं की हुई दर्दनाक मौत

पीड़ित वन गुर्जर करंट के जबरदस्त झटका लगने से हुआ गंभीर रूप से घायल

संस्कार उजाला
**मिजार्पुर-सहारनपुर** थाना मिजार्पुर क्षेत्र के गांव रायपुर अपना डेरा डालकर जीवनी गुजर बसर कर रहे! वन गुर्जर मीर हमजा गुरुवार की सुबह अपने डेरे से आठ पशुओं में करीब 6 भैंस एक कटिया व एक गाय को चराने के लिए जैसे ही रायपुर के काले पुल की नदी के पास पंहुचा तो विद्युत विभाग की घोर लापरवाही से विद्युत पोल के पास बंधे बिजली के तार में दौड़ रहे हाई वोल्टेज करंट की चपेट में आकर अपने पशुओं को चरा रहे वन गुर्जर अमीर हमजा करंट के तेज झटके लगने से मौके पर ही गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया है! जबकि चार चर रहे उसके आठ पशुओं की करंट की चपेट में आकर मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई है! हादसे की सूचना मिलते ही घटनास्थल पर पहुंची थाना मिजार्पुर पुलिस ने मामले में कार्रवाई शुरू कर दी है! जबकि घटना स्थल पर जमा हुई ग्रामीणों की भारी भीड़ मैं विद्युत विभाग के लापरवाही का आरोप लगाते हुए विद्युत विभाग के खिलाफ अपना रोष प्रकट किया है!

## संक्षिप्त डायरी

### मतदेय स्थलों की आलेख्य सूची तैयार,17 सितम्बर तक नि:शुल्क निरीक्षण कर आपत्ति एवं सुझाव कर सकते है प्रस्तुत

संस्कार उजाला ब्यूरो
**सहारनपुर**, जिला निर्वाचन अधिकारी श्री मनीष बंसल ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निदेर्शानुसार जिला सहारनपुर के अन्तर्गत 01-बेहट, 02-नकुड, 03-सहारनपुर नगर, 04-सहारनपुर, 05-देवबन्द, 06-रामपुर मनिहारान (अ०जा०) एवं 07-गंगोह विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र की मतदेय स्थलों की आलेख्य सूची तैयार हो गई है, जो समस्त निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों, उप जिलाधिकारियों एवं समस्त सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों, तहसीलदारों के कार्यालयों तथा जिला निर्वाचन कार्यालय, सहारनपुर में जनसाधारण के नि:शुल्क निरीक्षणार्थ 11 सितम्बर 2024 से 17 सितम्बर 2024 तक प्रत्येक कार्यदिवस को कार्यालय समय में उपलब्ध रहेगी। श्री मनीष बंसल ने कहा कि इस अवधि में कार्यालय समय के अन्तर्गत आलेख्य सूचियों का निरीक्षण किया जा सकता है। यदि किसी व्यक्ति को उस पर कोई आपत्ति या सुझाव देना हो तो वह सम्बन्धित तहसील कार्यालय अथवा जिला निर्वाचन कार्यालय में अपनी आपत्ति या सुझाव लिखित में प्रस्तुत कर सकते है।

### आरक्षण में वर्गीकरण की फैसले को उत्तर प्रदेश में लागू करने की मांग को लेकर वाल्मीकि समाज का प्रदर्शन

संस्कार उजाला
**भवानी सैनी बेहट,संवाददाता।** आरक्षण में वर्गीकरण के फैसले को उत्तर प्रदेश में लागू किए जाने की मांग को लेकर बृहस्पतिवार को राष्ट्रीय वाल्मीकि क्रांतिकारी मोर्चा से जड़े समाज के लोगों ने प्रदर्शन कर मुख्यमंत्री के नाम प्रेषित एक ज्ञापन एसडीएम को सौपा। राष्ट्रीय वाल्मीकि क्रांतिकारी मोर्चा (अराजनैतिक) के तत्वाधान में सैकड़ो महिला पुरुष शाकंभरी मार्ग पर स्थित राजदेव धर्मशाला में एकत्र हुए। यहां से माननीय सुप्रीमकोर्ट आभार प्रकट कर नारेबाजी करते हुए जुलूस के रूप में तहसील मुख्यालय पहुंचे। जहां उन्होंने प्रदर्शन किया। इस मौके पर मोर्चा के प्रदेश सचिव दीपक कागड़ा ने कहा कि अनुसूचित जाति आरक्षण का लाभ एक दो विशेष जातियों को ही प्राप्त हो रहा है। वाल्मीकि समाज एवं अन्य दलित जातियां आरक्षण के लाभ से आज भी वंचित है। 2001 में बीजेपी की सरकार ने अति दलित और अति पिछड़ों को आरक्षण उत्तर प्रदेश में लागू किया था, लेकिन उसपर वर्ष 2004 में रोक लगा दी गई थी। जिसके चलते वाल्मीकि समाज को शैक्षिक आर्थिक रोजगार एवं राजनैतिक क्षेत्र में भागीदारी नहीं मिल पा रही है। उन्होंने ज्ञापन के माध्यम से सुप्रीम कोर्ट द्वारा आरक्षण के वर्गीकरण के फैसले को उत्तर प्रदेश में शीघ्र लागू करने की मांग की है। इस मौके पर गुलशन भारती मंडल महामंत्री, नाथीराम खरे जिला उपाध्यक्ष, राजेश कांगड़ा जिला उपाध्यक्ष, पुलकित कुमार जिला महामंत्री सहित समाज के सैकड़ो महिला एवं पुरुष मौजूद रहे।

## संक्षिप्त डायरी

### पूर्व विधायक नरेश सैनी ने क्षेत्र में तूफानी दौरा करते हुए लोगों को पार्टी सदस्यता ग्रहण कराई

संस्कार उजाला
भवानी सैनी
**बेहट।** भाजपा के पूर्व विधायक नरेश सैनी ने क्षेत्र के दर्जनों गांव में तूफानी दौरा करते हुए भाजपा हाईकमान द्वारा संचालित सदस्यता अभियान में बहुत से लोगों को पार्टी के टोल फ्री नंबर 88 00 00 20 24 पर मिस कॉल कराते हुए पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराई।इस तूफानी दौरे के दौरान सबसे पहले उन्होंने भाजपा मंडल सढौली कदीम के गांव शाहपुर बांस में जाहरवीर गोगाजी के मेले का फीता काटकर उद्घाटन किया और फिर वहीं पर कैंप लगाकर लोगों को पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराई इसके बाद उन्होंने क्षेत्र के वरिष्ठ भाजपा नेता अखिलेश बंसल के रायपुर स्थित आवास पर पहुंचकर उनकी कुशल अक्षेम कभी जानकारी ली। और फिर उन्होंने खरा कॉलोनी, बाद शाही बाग, शफीपुर, कासमपुर आदि दर्जनों गांवों में लोगों से जनसंपर्क करते हुए उनकी समस्याएं सुनी और उनके समाधान हेतु सम्बंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए शीघ्रता से समाधान करने को कहा है। उन्होंने उपस्थित जनसमूह को वर्तमान केन्द्र और प्रदेश सरकार द्वारा किए गए जनकल्याणकारी कार्यों के बारे में जानकारी देते हुए भाजपा के साथ जुड़ने का आवाहन किया तथा बहुत से लोगों को पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराई है।इस दौरान उनके साथ पूर्व ब्लाक प्रमुख हंसराज गौतम, मुल्की राज सैनी, संजय सैनी, भाजपा मंडल अध्यक्ष विजय सैनी पत्रकार, महामंत्री एवं आईटी विभाग संयोजक अश्वनी राणा, अनुज सैंन, शोशल मीडिया वर्कर शिवम् सैनी, अनुसूचित मोर्चा मंडल अध्यक्ष डॉ धर्मवीर सिंह, मंडल मंत्री प्रदीप राणा, सैक्टर संयोजक प्रदीप शर्मा, डॉ राजेश शर्मा, बलवीर सिंह राणा, प्रधान सुनील सैनी एडवोकेट, जनार्दन सैनी, मास्टर कदम सिंह सैनी,सतीश कश्यप प्रधान, राजकुमार प्रधान, सुरेंद्र पंवार, बूथ अध्यक्ष सोनू गुप्ता, प्रिंस पाल, जगदीश राणा, जमशेद चौधरी आदि बहुत से लोग शामिल रहे हैं।

### राष्ट्रीय विद्यापीठ इंटर कॉलेज में थाना फतेहपुर पुलिस द्वारा छात्र-छात्राओं को साइबर क्राइम के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई

संस्कार उजाला
सहारनपुर छुटमलपुर
नगर के राष्ट्रीय विद्यापीठ इंटर कॉलेज छुटमलपुर में थाना फतेहपुर पुलिस प्रशासन द्वारा छात्र-छात्राओं को साइबर क्राइम के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। इस दौरान थाना प्रभारी धर्मेंद्र कुमार द्वारा छात्र-छात्राओं को सोशल मीडिया पर चल रही सभी प्रकार की अपराधिक गतिविधियां आपसी झगड़े तथा स्वयं की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। तथा सभी छात्र-छात्राओं को ऐसे अपराधिक मामलों में अपनी सुरक्षा के लिए 1930 नंबर नोट कराया गया। एस आई रोशनी के द्वारा भी छात्राओं को उनकी सुरक्षा के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां दी गई तथा वूमेंस टोल फ्री नंबर 1090 भी नोट कराया गया जिससे भविष्य में कोई भी समस्या का सामना न करना पड़े कार्यक्रम में उपस्थित थाना फतेहपुर थाना प्रभारी धर्मेंद्र कुमार कस्बा इंचार्ज सौरभ यादव मय फोर्स स्कूल प्रशासक भूपेंद्र सिंह राणा प्रधानाचार्य अलका शर्मा अनुप्रिया मोहम्मद वसीम जगमोहन मांगेराम दीपक मैनपाल सिंह, समस्त स्कूल स्टाफ व सभी छात्र छात्राएं उपस्थित रहे '

# जिलाधिकारी ने लेबर कालोनी स्थित आयुष्मान आरोग्य मंदिर का किया औचक निरीक्षण

### आवश्यक जीवन रक्षक दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित कराने के निर्देश

✦टीकाकरण एवं नि:शुल्क जांच की सूची की जाए प्रदर्शित - जिलाधिकारी

संस्कार उजाला ब्यूरो
**सहारनपुर** जिलाधिकारी श्री मनीष बंसल द्वारा लेबर कालोनी स्थित आयुष्मान आरोग्य मंदिर का औचक निरीक्षण किया गया निरीक्षण के दौरान प्रभारी चिकित्साधिकारी के अनुपस्थित पाए जाने पर जिलाधिकारी ने नाराजगी व्यक्त करते हुए स्पष्टीकरण जारी करने के निर्देश दिए। उन्होने चिकित्सालय में मानक

के अनुसार जीवन रक्षक औषधियों की उपलब्धता कम पाए जाने पर अवगत कराया गया कि औषधियों की डिमाण्ड सीएमओ कार्यालय से की गयी है। इसके लिए जिलाधिकारी ने सीएमओ से आख्या उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए। श्री मनीष बंसल ने लैब टैक्नीशियन के अप्रशिक्षित पाए जाने पर मुख्य चिकित्साधिकारी को इनकी ट्रेनिंग कराने को कहा। स्टाक रजिस्टर को अद्यतन रखने के निर्देश दिए। उन्होने बच्चों को लगाए जाने वाले टीकों की सूची एवं लैब स्थल पर यह प्रदर्शित किया जाए कि कौन सी जांचे नि:शुल्क की जाती है जिससे आमजन को पारदर्शिता के साथ सही जानकारी एवं स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो सके। इस अवसर पर एसीएमओ सहित चिकित्सालय के कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

# नागल में किसान यूनियन की मासिक बैठक का आयोजन

### विभिन्न मांगों के साथ दिया ज्ञापन

संस्कार उजाला
नागल सहारनपुर
भारतीय किसान यूनियन रक्षक की मासिक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें किसानों की विभिन्न समस्याएं से संबंधित एक ज्ञापन खंड विकास अधिकारी को दिया गया। बैठक में बोलते हुए प्रदेश अध्यक्ष जितेंद्र चौधरी ने कहा कि भारतीय किसान यूनियन रक्षक हर किसान मजदूर व्यापारी की आवाज बुलंद करता उन्होंने कहा कि किसान को गन्ने का भाव 600 रुपए प्रति कुंतल मिलना चाहिए। बैठक में बोलते हुए तहसील अध्यक्ष मोहम्मद फैयाज मलिक ने कहा कि आज किसान की हालत बहुत खराब है और किसानों को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है भारतीय किसान यूनियन रक्षक किसान मजदूर और व्यापारियों के विभिन्न समस्याओं को समझते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी वीरेंद्र सिंह के नेतृत्व में तेजी से आगे बढ़ रही है ,उन्होंने कहा कि किसी भी किसान को कोई भी समस्या होगी उसकी

समस्या का समाधान तुरंत कराया जाएगा किसान अपने आप को अकेला ना समझे हर किसान के साथ रक्षक पूरे ताकत के साथ खड़ी हुई है।भारतीय किसान यूनियन के ब्लॉक अध्यक्ष राहुल फौजी ने कहा कि अगर किसान एक हो जाए तो हर समस्या का समाधान एक पल में हो जाएगा। किसान की एकता ही उनकी ताकत है। किसान यूनियन रक्षक किसानों की ताकत को एकजुट करते हुए किसानों के लिए संघर्ष कर रही है ' किसान नेता पप्पल चौधरी ने कहा कि किसान यूनियन रक्षक किसानों के हर मुसीबत का सामना करने के लिए तैयार है, हर भ्रष्टाचार के खिलाफ और किसान की समस्याओं को अधिकारियों और प्रशासन के सामने रखने का कार्य कर रही है,और आंदोलन से भी पीछे नहीं हटेगी बैठक में बलकार सिंह, उदित नारायण, धर्मवीर, सूबे सिंह मलिक, हैप्पी चौधरी, कुलदीप विपिन हांडा, संजीव विश्वकर्मा, बिल्लू त्यागी, अनिल स्वामी, अनुज, सतपाल, संदीप सैनी, शमशाद, आबिद, रोहित जाट, निखिल कुमार, नसीम, रियाज, मोहम्मद कुर्बान, सत्तार, अजीत सैनी, रविंद्र सैनी, रोहित, राजीव त्यागी, अंकुश चौधरी, समीम मोहम्मद नवाब खतौली, अनीस, रईस, ऋषिपाल, रामेश्वर, राजपाल सिंह, सुखपाल सिंह, अयूब अहमद, रिजवान अहमद, नवाब अहमद, संदीप त्यागी, राजकुमार, साजिद के अलावा सैकड़ों कार्यकर्त्ता मौजूद रहे।

**ज्ञापन में की गई मांग....**
1. बढ़ेड़ी में तालाबों की खुदाई।
2.साधारणसीर में सड़क निर्माण।
3.बजाज शुगर मिल से गन्ने का बकाया भुगतान ।
4. निराश्रित गोवंश को गौशाला में छुड़वाया जाना।
5. नागल से शमशान घाट तक संपर्क मार्ग
6 खटोली में तालाब का सौंदर्य कारण एवं सीसी निर्माण

### अधिसाशी अधिकारी एवं नगर चैयरमेन को श्री महाकाली ग्रुप द्वारा पदयात्रा व भंडारे में शामिल होने का दिया निमंत्रण। दिनेश शर्मा अन्य गणमान्य नागरिक भी रहेंगे उपस्थित।

संस्कार उजाला
**रामपुर मनिहारान।** श्री महाकाली ग्रुप के सौजन्य से श्री शाकुम्भरी देवी धाम के लिए १४ सितम्बर को पदयात्रा व भंडारे का आयोजन मौहल्ला इकराम गुर्जर समाज की चौपाल पर किया जाएगा। जिसके उपलक्ष में नगर पंचायत के सभासद श्री नितिन (काला) व शिवसेना मंडल सचिव श्री दिनेश शर्मा जी एवं अन्य मान्य लोगों ने

नगर पंचायत कार्यालय रामपुर मनिहारान में पहुंच कर अधिसाशी अधिकारी माननीया सविता वर्मा एवं चैयरमेन प्रतिनिधि श्री कुलदीप बालियान जी देवी माता जी की फोटो भेंट कर पदयात्रा व भंडारे के कार्यक्रम में शामिल रहने के लिए निमंत्रण दिया। श्री दिनेश शर्मा मंडल सचिव शिवसेना ने बातचीत में बताया कि मौहल्ला इकराम, गुर्जर समाज की चौपाल पर १४ सितम्बर को दिन में महाकाली ग्रुप द्वारा भंडारे का आयोजन किया जा रहा है। तत्पश्चात शाकुम्भरी देवी धाम के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु पदयात्रा के लिए संगीत सहित ढोल पार्टी एवं डी जे के साथ भजनों व जयकारों की गूंज के साथ हर्षोल्लास से रवाना होंगे। अतः भंडारे व पदयात्रा का कार्यक्रम एक दिन १४ सितम्बर को ही सम्मिलित सम्मान सहित किया जाना तय है। इस शुभ अवसर पर नगर व ग्रामीण क्षेत्रों से गण मान्य लोग शामिल होंगे। श्री महाकाली ग्रुप द्वारा सभी लोगों से भंडारे में प्रसाद ग्रहण करने की व उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने की अपील की गई है। नगर पंचायत कार्यालय रामपुर मनिहारान में अधिसाशी अधिकारी माननीया सविता वर्मा एवं चैयरमेन प्रतिनिधि श्री कुलदीप बालियान जी को निमंत्रण देने के मौके पर मंडल सचिव शिवसेना श्री दिनेश शर्मा जी, श्री अजय कुमार जी (शिवपुरी कालोनी),श्री नितिन चौधरी सभासद नगर पंचायत रामपुर मनिहारान,श्री राणा जी,श्री वीर सेन चौधरी व श्री महाकाली ग्रुप के अनेकों सदस्य उपस्थित रहे।

### डीएम ने किया मेला गुघाल का स्थलीय निरीक्षण

विद्युत सुरक्षा के लिए झूला स्वामियों को लेनी होगी एनओसी, जमा करना होगा शपथ पत्र

जल भराव की समस्या का करें शीघ्र निस्तारण - डीएम

खाद्य सामग्री बनाने वाली दुकानों में किया जाए टीन शेड का प्रयोग

संस्कार उजाला ब्यूरो
**सहारनपुर**, जिला मजिस्ट्रेट श्री मनीष बंसल ने 13 सितम्बर से 05 अक्टूबर तक आयोजित होने वाले मेला गुघाल का स्थलीय निरीक्षण किया। श्री मनीष बंसल ने निर्देश दिए कि खाद्य सामग्री की दुकानों को स्थान चिन्हित

कर एक ही जगह लगाया जाए और सुनिश्चित किया जाए कि किसी भी दुकान पर प्लास्टिक के तिरपाल का प्रयोग न हो। खाद्य सामग्री बनाने वाली दुकानों में टीन शेड का प्रयोग किया जाए। प्रसाद के विक्रेताओं को सवास्थ्य के दृष्टिगत प्रसाद को ढककर रखने के निर्देश दिए। उन्होने कहा कि दुकान का स्थान चिन्हित करते हुए यह भी ध्यान दिया जाए कि आपातकाल स्थिति में अग्निशमन सहित अन्य वाहनों की पंहुच आसानी से हो सके। जिला मजिस्ट्रेट ने निर्देश दिए कि मेले में झूला लगाने के लिए स्वामी के द्वारा विद्युत विभाग से विद्युत सुरक्षा के दृष्टिगत शपथ पत्र उपलब्ध कराते हुए एनओसी लेना अनिवार्य होगा। निरीक्षण के दौरान कुछ स्थलों पर जल भराव की स्थिति पाई गयी जिस पर उन्होने नाराजगी व्यक्त की और पीडब्ल्यूडी एवं नगर निगम के अधिकारियों को निर्देशित किया कि त्वरित रूप से कार्यवाही करते हुए इस समस्या का निस्तारण किया जाए। उन्होने कहा कि दुकानों के बीच उचित गैप रखा जाए। श्री मनीष बसंल ने मेला परिसर में सीसीटीवी कैमरे, बिजली, पेयजल, मजबूत बैरिकेटिंग, साफ-सफाई की बेहतर व्यवस्था रखने के निर्देश दिए। उन्होने कहा कि सभी विभाग सौंपी गयी जिम्मेदारियों का भली प्रकार से निर्वहन करना सुनिश्चित करें। नाले एवं नालियों की साफ-सफाई के साथ ही फॉगिंग एवं एंटी लार्वा का छिड़काव सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि पार्किंग की उचित व्यवस्था की जाए। मेले में सुरक्षा के दृष्टिगत पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती की जाए। निरीक्षण के दौरान एसपी सिटी अभिमन्यु मांगलिक, अपर नगर आयुक्त राजेश यादव, उप जिलाधिकारी सदर युवराज सिंह सहित वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे।

### नगर में 15सितंबर को होगा, कश्यप सम्मेलन जुटेंगे भाजपा के दिग्गज नेता।, कश्यप सम्मेलन ऐतिहासिक होगा ..... बिजेंद्र कश्यप

संस्कार उजाला
सहारनपुर छुटमलपुर
नगर छुटमलपुर में आगामी 15 सितंबर को कश्यप सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। कश्यप सम्मेलन को सफल बनाने के लिए सम्मेलन के संयोजक ओबीसी मोर्चा के प्रदेश मंत्री बिजेंद्र कश्यप बेहट विधानसभा के विभिन्न गांव गणेशपुर, धौला कुआं, खुशहालीपुर सतपुरा, कुरान खेडा,

जैतपुर, मिजार्पुर, बड़वाला चोली आदि गांवों में तूफानी जनसंपर्क किया जा रहा है,इस अवसर पर सम्मेलन के संयोजक ओबीसी मोर्चा के प्रदेश मंत्री बिजेंद्र कश्यप ने पत्रकारों को जानकारी देते हुए बताया कि आने वाली 15 सितंबर 2024 को कस्बे के रुड़की रोड स्थित देवरत्ना पैलेस में कश्यप समाज का एक बडा सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष एवं राज्य मंत्री नरेंद्र कश्यप एवं लोक निर्माण विभाग राज्य मंत्री कुंवर बृजेश, औद्योगिक मंत्री जसवंत सैनी, क्षेत्रीय अध्यक्ष सत्येंद्र सिसोदिया, जिला पंचायत अध्यक्ष मांगेराम चौधरी, जिला अध्यक्ष समेत कहीं बड़े दिग्गज नेता शामिल होंगे। बिजेंद्र कश्यप ने बताया समाज के जिम्मेदार लोगों को आमंत्रित करते हुए सम्मेलन में समाज के लोगों को लेकर पहुंचने की जिम्मेदारी दी जा रही है इस दौरान उन्होंने कहा कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं। इस दौरान उनके साथ मुख्य रूप से प्रवीन कश्यप, सुशील कश्यप, सेवाराम कश्यप, मुकेश कश्यप, बाबूराम कश्यप, नीतू कश्यप, दादाराम कश्यप मांगेराम कश्यप, श्याम लाल कश्यप सौरभ कश्यप, भारत सिंह कश्यप, अशोक कश्यप, कालूराम कश्यप, विजय कश्यप आदि समाज के गणमान्य लोग साथ में मौजूद रहे।

### कस्बे में अपना दस्तरख्वान होटल पर,फुड विभाग के अधिकारियों ने पुलिस बल के साथ की छापेमारी करते हुए किया बंद

संस्कार उजाला
**सहारनपुर छुटमलपुर** देर रात फुड विभाग के अधिकारियों ने नगर में अपना दस्तरख्वान नाम के एक होटल पर थूक लगाकर रोटियां सेकने वाले युवक के विडियो वायरल होने पर तुरंत संज्ञान लेते हुए थाना फतेहपुर पुलिस बल को साथ लेते हुए छापेमारी की होटल को बिना

लाईसेंस चलते हुए पाया गया इस दौरान खाने के सामान आटा चाय की पत्ती धनिया मिर्च के सेम्पल भी लिए जिस पर तुरंत कार्यवाही करते हुए होटल को बंद करने की कार्यवाही की गई इस दौरान जिला फूडअधिकारी धनंजय कुमार शुक्ला ने पत्रकारों को जानकारी देते बताया कि अगर कोई कस्बे में बिना लाइसेंस के दस्तरख्वान पाया गया तो उसके खिलाफ उसके कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी इस दौरान छापा मारने वाली टीम में जिला फुड अधिकारी धनंजय कुमार शुक्ला तहसील फुड अधिकारी कुलदीप सिंह पवन कुमार सुमन पाल एव थाना फतेहपुर प्रभारी धर्मेंद्र कुमार कस्बा इंचार्ज सौरभ यादव मय पुलिस बल के साथ मौजूद रहे

# गड्ढों और तालाब में तब्दील हुई सड़क

संस्कार उजाला

**माधौगढ़ जालौन।** जहां एक ओर योगी सरकार के नेता चहुंमुखी विकास की बात करते हैं वहीं रामपुरा ब्लॉक के कस्वा गांव से होते हुए पूरनपुरा, खराला, सिलाउआ को जोड़ती हुई डामर रोड पूरी तरह से गड्ढो में तब्दील हो चुकी है। स्कूली बच्चे व ग्रामीण घुटनों तक पानी में घुसकर निकलने को मजबूर हैं ग्रामीणों का कहना है कि कई बार स्कूल की वैन भी इस दलदल भरी सड़क में फस गई तब उसे ग्रामीणों की सहायता से बाहर निकाला गया। सड़क की डामर व छोटी गिट्टी पूरी तरह से खत्म हो चुकी, सडक में वाहनों के टायर वाली जगह पर गहरी लीखें बन गई हैं जिनमें पैदल, साइकिल या मोटरसाइकिल से चलना बहुत मुश्किल हो गया है। सबसे ज्यादा तकलीफ गर्भवती महिलाओं को अस्पताल या बाजार ले जाते वक्त होती है इन बड़े बड़े गड्ढो की वजह से गर्भपात होने की संभावना बनी रहती है सड़क की मरम्मत को लेकर ग्रामीणों ने कई बार स्थानीय नेताओं प्रतिनिधियों से मांग की है लगभग एक महीने पूर्व जालौन की हकीकत दैनिक समाचार पत्र ने भी इस संदर्भ में खबर छापी थी पर अभी तक किसी भी संबोधित अधिकारी या कर्मचारी ने सड़क की सुध नही ली।

# डी. बी. ए. सोनभद्र की मांग अधिवक्ता सुरक्षा कानून लागू किया जाए।

संस्कार उजाला

**अरविंद गुप्ता ब्यूरो चीफ सोनभद्र। सोनभद्र ।** 12 सितंबर 2024 डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन सोनभद्र की एक बैठक अधिवक्ता भवन कक्ष संख्या एक में डी बी ए के अध्यक्ष श्याम बिहारी यादव एड की अध्यक्षता में संपन्न हुआ !इस दौरान अधिवक्ता सुरक्षा कानून लागू करने की मांग की गई। एड पवन कुमार सिंह पूर्व वरिष्ठ उपाध्यक्ष डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन सोनभद्र ने कहा कि बुद्धिजीवियों में अग्रणी अधिवक्ताओ के जीवन रक्षा की नैतिक जिम्मेदारी सरकार की है, जिसके लिए अधिवक्ता संरक्षण अधिनियम को लागू किया जाना जरूरी है। अध्यक्ष श्याम बिहारी यादव एडवोकेट ने कहा कि न्याय पालिका हमारे जीवंत लोकतंत्र का सबसे महत्वपूर्ण आधार हैं। लोगों को न्याय दिलाने तथा संविधान में दिए गए मूल एवं विधिक अधिकारों की रक्षा में अधिवक्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। समाज को न्याय दिलाने वाले अधिवक्ताओं की सुरक्षा की गारंटी सरकार की ओर से सुनिश्चित की जानी चाहिए। मांग की कि अधिवक्ता सुरक्षा कानून लागू किया जाए। अधिवक्ताओं एवं उनके परिवार को आयुष्मान योजना से जोड़ा जाए। युवा अधिवक्ताओं को तीन वर्ष तक पांच हजार प्रति माह किताब आदि के लिए दिए। इस मौके पर विनीत कुमार श्रीवास्तव एडवोकेट, रियाज खान एडवोकेट, बीपी सिंह एडवोकेट, कामता प्रसाद यादव एडवोकेट, रामगोपाल दुबे, मनोज कुमार चौबे एडवोकेट, अनिल कुमार सिंह एडवोकेट, सुरेश सिंह कुशवाहा एडवोकेट आदि अधिवक्ता उपस्थित रहे।

## संक्षिप्त डायरी

### गणपति का भव्य तरीके से पांच दिन बाद किया विसर्जन

संस्कार उजाला

**विंध्याचल** – मिजार्पुर जनपद के विंध्याचल में संगीता उपाध्याय के द्वारा बहुत ही हसोर्लास के साथ गणपति जी को अपने घर में विराजमान कराया गया पांच दिन गणेश जी का आरती पूजन एवं कीर्तन भजन किया गया पांचवे दिन भंडारे का आयोजन किया गया संगीता उपाध्याय ने बताया की मुझे बहुत खुशी हुई की मैं गणेश जी को बहुत ही हसोर्लास के साथ लाई और पांच दिन तक प्रभु हमारे घर में विराजमान रहे पांचवे दिन भंडारे के साथ जिसमे हजारों की संख्या में लोग पहुंचकर प्रसाद को ग्रहण किया उसके डीजे व बाजे के साथ गणेश जी का विसर्जन किया गया इस अवसर पर अपर्णा उपाध्याय अदिति उपाध्याय शैलेश उपाध्याय आयुष उपाध्याय झुल्लन ज्योति मिश्रा निष्ठा मिश्रा अमृता मिश्रा रंजिता मिश्रा सोनी मिश्रा शर्मिला मिश्रा सुप्रिया मिश्रा सोनी मिश्रा सुमन मिश्रा विक्रम मिश्रा अमन सफल आदि भक्त गण उपस्थित रहे।

### पन्नूगंज पुलिस द्वारा चोरी की मोटर साइकिल के साथ एक नफर अभियुक्त को किया गया गिरफ्तार।

संस्कार उजाला

**अरविंद गुप्ता ब्यूरो चीफ सोनभद्र। सोनभद्र ।** पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में जनपद सोनभद्र में चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाने व चोरी की घटनाओं का शीघ्र अनावरण व उसमें संलिप्त अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना पन्नूगंज पुलिस द्वारा कर्मनाशा नदी पुल बार्डर से चेकिंग के दौरान एक नफर अभियुक्त विकाश कुमार मोदनवाल पुत्र रामविलास निवासी ग्राम नगाव थाना रायपुर जनपद सोनभद्र उम्र लगभग 22 वर्ष को चोरी की मोटर साइकिल के साथ गिरफ्तार किया गया। बरामद मोटर साइकिल के सम्बन्ध में थाना रॉबर्ट्सगंज पर मु0अ0सं0-470/24 धारा 379 बनाम अज्ञात पंजीकृत है।

गिरफ्तारशुदा अभियुक्त का विवरण-

विकाश कुमार मोदनवाल पुत्र रामविलास निवासी ग्राम नगाव थाना रायपुर जनपद सोनभद्र उम्र लगभग 22 वर्ष।

बरामदगी का विवरण-

एक अदद चोरी की मोटर साइकिल ।

गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम का विवरण-

1. उ0नि0 कुंवर सिंह थाना पन्नूगंज, जनपद सोनभद्र।
2. का0 बृजेश कुमार सिंह थाना पन्नूगंज, जनपद सोनभद्र।
3. का0 अमृतलाल थान पन्नूगंज, जनपद सोनभद्र।
4. का0 शिवशंकर सिंह थाना पन्नूगंज जनपद सोनभद्र।

### मांची पुलिस द्वारा धारा 109,118(2),117(2)बी0एन0एस0 मे वांछित 02 नफर अभियुक्तो को किया गया गिरफ्तार।

**अरविंद गुप्ता ब्यूरो चीफ सोनभद्र। सोनभद्र ।** पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में अपराध पर प्रभावी रोकथाम लगाने व वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक ऑपरेशन सोनभद्र व क्षेत्राधिकारी सदर के आदेश के क्रम में थाना मांची पुलिस द्वारा थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0-41/24 धारा-109,118(2),117(2) बी0एन0एस0 में वांछित 02 नफर अभियुक्त क्रमशः

01. शिव प्रसाद पुत्र स्व0 दुख्खन निवासी ग्राम सोहदाग थाना मांची जनपद सोनभद्र 02. अमरनाथ पुत्र शिवप्रसाद निवासी ग्राम सोहदाग थाना मांची जनपद सोनभद्र को उनके घर से नियमानुसार गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही की गयी।

गिरफ्तारशुदा अभियुक्तों का विवरण-

01. शिव प्रसाद पुत्र स्व0 दुख्खन निवासी ग्राम सोहदाग थाना मांची जनपद सोनभद्र।

02. अमरनाथ पुत्र शिवप्रसाद निवासी ग्राम सोहदाग थाना मांची जनपद सोनभद्र।

गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम-

1. उ0नि0 संजय सिंह चौकी प्रभारी पनौरा थाना मांची जनपद सोनभद्र ।
2. हे0का0 महेन्द्र प्रताप सिंह चौकी पनौरा थाना मांची जनपद सोनभद्र ।
3. का0 आलोक रमन मिश्रा चौकी पनौरा थाना मांची जनपद सोनभद्र ।

### मोहित दोहरे ने ली माधौगढ़ ब्लाक प्रमुख की शपथ

**माधौगढ़ जालौन:-** बुधवार को निर्विरोध चुने गये मोहित दोहरे ने ब्लाक प्रमुख पद की शपथ ली। मोहित दोहरे को ब्लॉक प्रमुख पद की शपथ उपजिलाधिकारी माधौगढ़ सुरेश कुमार पाल ने दिलाई। इस शपथ ग्रहण समारोह में क्षेत्र के तमाम प्रतिष्ठित लोग व जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे पूरा प्रांगण सैकड़ों लोगों की उपस्थिति से खचाखच भरा रहा। शपथ ग्रहण समारोह में आए हुए लोगों को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय विधायक मूलचंद निरंजन ने अपने सात वर्षों में किए गए विकास कार्यों को गिनाया तो वहीं दूसरी तरफ पूर्व संसद व केंद्रीय मंत्री रहे भानु प्रताप वर्मा ने अपने जीवन के तमाम उतारा चढ़ाव बताते हुए मोदी और योगी सरकार की विकासवादी नीतियां गिनाईं। मंच का कुशल संचालन कर रहे पूर्व मंडल अध्यक्ष शत्रुघन सेंगर ने जब नवनिर्वाचित ब्लॉक प्रमुख मोहित दोहरे को बोलने के लिए हाथ में माइक दिया तो वो अपने पिता को याद करके भावुक हो गए एवं समारोह में आए हुए सभी अतिथियों, बीडीसी संघ एवं क्षेत्रीय जनता का आभार प्रकट करते हुए सभी बुजुर्गों को अपने पिता तुल्य बताते हुए कहा कि आप सभी के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन में क्षेत्र के विकास के हर संभव प्रयास करूंगा। इस समारोह में मंच की शोभा बढ़ाने वाले अतिथियों में पूर्व क्षेत्रीय संसद व केंद्रीय मंत्री भानु प्रताप वर्मा, क्षेत्रीय विधायक मूलचंद निरंजन, पूर्व जिलाध्यक्ष बृजभूषण सिंह मुन्नू, पूर्व जिलाध्यक्ष जगदीश तिवारी, संजीव उपाध्याय, उपजिलाधिकारी माधौगढ़ सुरेश कुमार पाल, रमेश चन्द्र शर्मा खंड विकास अधिकारी माधौगढ़, ए डी ओ पंचायत महावीर शरण गुप्ता,जिलाउपाध्यक्ष हरेंद्र विक्रम सिंह, पूर्व कमिश्नर एवं बुंदेलखंड बोर्ड के सदस्य शम्भूदयाल अहिरवार, जेपी गौतम, विधायक प्रतिनिधि महेश सिंह,माधौगढ़ चेयरमैन राघवेंद्र व्यास, रामपुरा चेयरमैन गायत्री वर्मा, पूर्व चेयरमैन शैलेंद्र सिंह, राजकिशोर गुप्ता, बीडीसी संघ की मंडल अध्यक्ष पुष्पा सिंह राजावत, नुक्कड़ सभा के जिला संयोजक प्रबल प्रताप सिंह अटागांव, पूर्व ब्लॉक प्रमुख सुदामा दीक्षित, विधायक प्रतिनिधि महेश सिंह, पूर्व मंडल अध्यक्ष अमित बादल, बब्लू सिंह डिकौली, जिला मंत्री ज्योतिष, सतेन्द्र सिंह भदौरिया,मंडल अध्यक्ष कमलापति कुशवाहा, भरत भदौरिया, पूर्व मंडल अध्यक्ष सतेंद्र भदौरिया , दिलीप प्रजापति, राहुल राठौर, धर्मेंद्र काक्का, मोहित गुप्ता बेटू अहेता, बन्धन द्विवेदी, दीपक दोहरे, शिवम सिंह हरौली, विकास सिंह हरौली,सचिव, एवं,प्रधान एवं,बी,डी,सी आदि लोग मौजूद रहे।

# बसकटवा-कुरूहुल सम्पर्क मार्ग को निर्माण को लेकर जिलाधिकारी को सौपा ज्ञापन।

## बर्षो से गड्ढे एंव जर्जर अवस्था मे पड़े सम्पर्क मार्ग पर दो बार ग्रामीणो के धरना-प्रदर्शन के वाबजूद नही हुआ समस्याओ का सामाधान।

संस्कार उजाला

**क्राईम ब्यूरो विकास कुमार हलचल। पटवध सोनभद्र।** चोपन विकास खण्ड के ग्राम पंचायत पटवध में वर्षो से गड्ढे एंव जर्जर बसकटवा- कुरूहुल सम्पर्क मार्ग को निर्माण को लेकर बुधवार के दिन सामाजिक चिन्तक आशुतोष गुप्ता के नेतृत्व मे रहवासियों ने कलेक्ट्रेट पहुंच कर जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपकर अविलंब पटवध स्थित बसकटवा - कुरूहुल/सलखन सम्पर्क मार्ग निर्माण की मांग की है। सामाजिक चिन्तक आशुतोष गुप्ता का कहना था की इस मार्ग से कुरूहुल एवं करगरा, गुरदह, भभाईच, बघनारी, बेलकप, चिरहुली, रजधन, अदलगंज, कोटिया, गंगटी, पईका के ग्रामों से उक्त रोड पर से लोगो को आवागमन प्रतिदिन नित्य होता है जिनमें दो पहिया वाहन से लेकर चार पहिया वाहन से लेकर चारपहिया एवं विद्यालय की बसों का आवागमन होता है किंतु उक्त मार्ग के कुछ हिस्सो मे सड़क पानी से भरे गड्ढे में तब्दील हो चुकी है, जिस पर पैदल चलने वालों को कमर तक पानी तथा बाईक सवारों को पहिये डूब जा रहा है और किचड़ युक्त पानी में से पार हो रहे है। उक्त स्थान पर प्रतिदिन दुर्घटनायें भी हो रही है तथा कई बार ग्रामीणों द्वारा सड़क निर्माण हेतु पानी में बैठकर धरना-प्रदर्शन भी किया गया परन्तु किसी को उपरोक्त किचड युक्त जमे जलजमाव रोड की सुधि नहीं हुई। जिससे लगभग 13-14 गावों की जनता आवागमन के दुर्दशा के शिकार हो रहे है। लोक निर्माण विभाग के ठेकेदार द्वारा तीन माह पूर्व खानापुर्ती कर मार्ग की मरम्मत कराया गया था किंतु वह पहले ही बरसात मे धराशाई हो गया। जनहित में सी०सी० रोड एवं बगल में कवर्ड नाली का निर्माण कराया जाना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। जिला पंचायत सदस्य-पटवध सुनील सिंह गोंड का कहना था की दिनांक 05.03.2024 को तथा 31.08.2024 को सड़क पर उतर कर अपना विरोध किया गया। दिनांक 31.08.2024 को विरोध प्रदर्शन के दौरान प्रभारी निरीक्षक चोपन एंव व खण्ड विकास अधिकारी चोपन मौके पर पहुँच कर ग्रामीणों को आश्वस्त किये कि 48 -72 घण्टे में सड़क पर जमा पानी का निकासी की व्यवस्था कर दी जाएगी परन्तु ऐसा नही हुआ सैकडो बार बार-बार संबधित लोक निर्माण विभाग को अवगत कराने के वाबजूद समस्याओ का सामाधान नही हो रहा है। जिससे ग्रामीण एंव मार्ग पर आवगमन करने वालो मे गहरा आक्रोश व्याप्त है। इस मौके पर अश्वनी कुमार, शिवमूरत गुप्ता,राजू साहनी, राहुल यादव, सुनील साहनी, शिवकुमार केवट, रमाशंकर मिश्रा, पवन अग्रवाल, बबलू सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

### विकास खंड रॉबर्ट्सगंज में ब्लॉक प्रमुख अजित रावत और खंड विकास अधिकारी नितिन कुमार द्वारा पोषण माह के अंतर्गत हरी झंडी दिखा कर पोषण रैली का किया गया आयोजन ।

**क्राईम ब्यूरो विकास कुमार हलचल। सोनभद्र ।** जिलाधिकारी महोदय एवं मुख्य विकास अधिकारी महोदय के पहल के पश्चात जिला कार्यक्रम अधिकारी विनीत सिंह के निर्देशन में विकास खंड रॉबर्ट्सगंज में आज खंड विकाश अधिकारी नितिन कुमार एवं बाल विकास परियोजना अधिकारी सुभास मौर्य के अध्यक्षता में पोषण रैली का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान ब्लॉक सभागार में सभी आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों को खंड विकास अधिकारी द्वारा सम्बोधित करते हुए बताया गया की कुपोषण मुक्त समाज बनाने के लिए पोषण से युक्त खाद्य सामग्री के माध्यम से सभी जन समुदाय सहित सभी लाभार्थियों को पोषण युक्त खान पान से होने वाले लाभ के बारे में संपूर्ण जानकारी प्रदान करते हुए जन जन की भागीदारी सुनिश्चित की जाय । उक्त कार्यक्रम में बाल विकास परियोजना अधिकारी सुभाष मौर्य द्वारा बताया गया की ग्राम पंचायत स्तर पर बच्चों का अन्नप्रासन एवं गर्भवतियों की गोंद भराई संस्कार कर पोषण मेला का आयोजन किया जाय एवं समस्त लाभार्थियों को टीकाकरण से लाभ एवं गर्भवती स्त्री एवं बच्चों के देख भाल एवं उचित खान पान के बारे में बताया जाय साथ ही नीति आयोग की सहयोगी संस्था पिरामल फाउंडेशन से जनपद प्रतिनिधि वीरेंद्र पाण्डेय द्वारा पोषण माह में विभाग से दी जा रही योजनाओं के लाभ समेत आगामी दिनों मे जन जागरूकता हेतु सभी बिभागों से समन्यवय स्थापित कर किये जाने कार्यों पर विस्तृत चर्चा किया गया उक्त कार्यक्रम में सहायक विकाश अधिकारी पंचायत महिपाल लकड़ा, अनिल सिंग मुख्य सेविका श्री पत्ति ,अशोक,सावित्री पिरामल फाउंडेशन से सृस्टि भुजेल समेत समस्त अंगनवाड़ी उपस्थित रहीं ।

# पूर्व राष्ट्रपति डा.राधाकृष्णन वर्तमान युग के शिक्षकों के हैं चर्मोत्कर्ष

संस्कार उजाला

**माधौगढ (जालौन)** । शिक्षक दिवस पर आयोजित एक परिचर्चा को संबोधित करते हुए ऋषभ पब्लिक जूनियर हाईस्कूल के संचालक एडवोकेट अखिलेश सविता एवं मनोज शिवहरे ने कहा कि यूं तो प्रत्येक व्यक्ति हर क्षण सीखता और सिखाता है। इसलिए सभी मनुष्य शिक्षक के दायरे में आ जाते हैं, परंतु आचार्यों, संतों और महात्माओं ने हिमालय से लेकर समुद्र तक अपनी पदयात्राओं के माध्यम से जो ज्ञान बांटा है उनकी ताकत सम्राटों, सेनापतियों और धनकुबेरों से भिन्न है। इसीलिए भारतीय गुरुशिष्य की परम्परा अभी भी कालातीत नहीं बनी हुई है। वस्तुत वर्तमान शिक्षक दिवस प्राचीन गुरुपूर्णिमा का ही नया स्वरूप है। अँग्रेजों के आने से पूर्व गांव और नगरों में गुरुकुल थे, जहां निशुल्क शिक्षा गुरुग्रहों में दी जाती थी यथा गुरुग्रह गये पढ़न रघुराई, अल्पकाल विद्या सब आई। प्रत्येक मनुष्य श्रमिक है। धरती, धूप, हवा, पानी, आग, आकाश उसकी कच्ची सामग्री है। जिसका उपयोग करते हुए वह अपने आदर्शों के अनुरूप दुनिया को ढालता रहता है। परन्तु जानवर चेतनारहितदुनिया में रहने को और प्राकृतिक रूप से स्वयं अपने को विकसित करने के लिए मजबूर है। यही फर्क है मनुष्य और जानवर में। मनुष्य अपने को परिपूर्ण बनाने के लिए आकाश के तारों तक को तोड़कर धरती को सुंदर बनाने में जरा भी कोताही नहीं क्योंकि करता। ज्ञान विज्ञान का कोई सीधा राजमार्ग सपाट नहीं है। इसको चमकीली चोटियों पर वही पहुंच पाते हैं जो ढालू रास्तों की थका देने वाली चढ़ाई से नहीं डरते। इस प्रसंग में अत्यन्त उल्लेखनीय है कि मनुष्य की प्रथम गुरु उसकी मां है। सर्वप्रथम बच्चा जब धरती पर आता है तो वह अपनी भूख मिटाने के लिए रोता है। माता बिना किसी उधारी के तुरंत दुग्धपान कराके केवल बच्चे की भूख ही नहीं मिटातीप्रेम के ढाई आखर का भी पहला पाठ पढ़ा देती है। जब बच्चा ढाई साल के लगभग हो जाता है तो प्रेम के पाठ को आगे बढ़ाते हुए वह उसे गोद में लेकर दूध पिलाते पिलाते मातृभाषा सिखाते हुए कहती है देखो चांद! बच्चा सुनता है। मां फिर उससे पूछती है कि चांद किधर है, बताओ वह परीक्षा लेती है। बच्चा उंगली से बताता है कि चांद उधर है। चा चा-चा-न-द और फिर चां चांद कहता है यानि पहले वस्तु या मॉडल ग्रहण करता है और फिर बोलता है। अतः मां से बढ़कर और दूसरा अतिउत्तम शिक्षक और कौन हो सकता है। शिक्षक सर्वेश यादव राजा कोहिनूर सिंह दीपक सिंह ने आगे कहा कि शिशु शिक्षा से लेकर यूनिवर्सिटी तक की शिक्षा का प्राणाधार यही वात्सल्य भाव है। मैं अपने उक्त विश्लेषण को तार्किकपरिणति इस संश्लेषण के साथ प्रस्तुत कर रहा हूं जिसे महान सुधारक मार्टिन लूथर ने जर्मन अध्यापकों के सम्मेलन में कहा था यदि मैं धर्मोपदेशक (पादरी) न होता, तो मैं अध्यापक बनना चाहता, क्योंकि धर्मोपदेशक के रूप में, मैं ऐसे लोगों को संबोधित करता हूं, जिनकी कमर झुक गई है, जिनके हाथ सूखकर कठोर हो गए हैं, ऐसे लोग, जिनहें जीवन ने अपाहिज और गन्दा बना दिया है वे कूपमंडूक की तरह कुएं के व्यास को सम्पूर्ण जगत मानने के कारण कोई नई बात सुनना ही नहीं चाहते, लेकिन आप, अध्यापकगण, आप पवित्र आत्माओं को संबोधित करते हैं। वह सत्य, जिसका मैं उपदेश देता हूं, भ्रष्ट आत्माओं में जागृता है और कभी- कभी वह स्वयं वहाँ भ्रष्ट हो जाता है या यों ही गतिहीन कंकड़ की तरह व्यर्थ पड़ा रहता है, जो सत्य आप बच्चों की ग्रहणशील और पवित्र आत्माओं को पेश करते हैं वह देदीप्यमान लौ की भांति चमकता रहेगा। अत मैं पुन यह तथ्य आप सभी को आत्मसात कराना चाहता हूं कि वस्तुतः शिक्षक ही समाज का है। इस मौके पर बच्चों ने केक काटकर कलमें गुलदस्ते भेंटकर शिक्षक दिवस मनाया है। इस मौके पर इंजीनियर ऋषभ सविता नौसीन वानो सुषमा सविता शिव दास डोली चौधरी सहित अन्य शिक्षकगण मौजूद रहे ।

### नगर पंचायत ओबरा का अतिक्रमण पर धुंआधार कारवाई अतिक्रमण कारी ने कर्मचारी पर बोला हमला।

**क्राईम ब्यूरो विकास कुमार हलचल। सोनभद्र।** ओबरा नगर पंचायत क्षेत्र के राम मंदिर कालोनी में सार्वजनिक जमीन पर हो रहे अतिक्रमण की शिकायत मिलने पर बुधवार की शाम मौके पर पहुंचे नगर पंचायत कर्मियों द्वारा जेसीबी मशीन चलाकर अतिक्रमण हटवा दिया गया। लेकिन इस दौरान मौके पर पहुंचे अतिक्रमण कारियों द्वारा नगर पंचायत कर्मियों के साथ बत्तमीजी की गई साथ ही हाथा पाई की गई। जिसमें नगर पंचायत के सुपर वाइजर जितेंद्र शुक्ल घायल हो गए। नगर पंचायत कर्मचारियों द्वारा आरोपी के खिलाफ थाने में लिखित शिकायत दी जा चुकी है। घटना के बाद नगर पंचायत ओबरा में चचाओं का बाजार गर्म है। वही नगर पंचायत ओबरा के अधिशासी अधिकारी मधुसूदन जायसवाल ने बताया कि राम मंदिर कालोनी स्थित सार्वजनिक जमीन पर हो रहे अतिक्रमण की शिकायत मिलने पर अतिक्रमणकारियों को पहले नोटिस भेजकर जल्द से जल्द अतिक्रमण हटाने का निर्देश दिया गया था। इसके बावजूद अतिक्रमण नहीं हटाने पर नगर पंचायत कर्मचारी जेसीबी लेकर अतिक्रमण हटाने पहुंचा। जैसे ही अतिक्रमण हटाने का काम शुरू किया गया। वैसे ही नगर पंचायत कर्मियों के साथ गाली गलौज करते हुए मारपीट की घटना घटित हो गई। जिससे मौके पर मौजूद नगर पंचायत कर्मियों में अफरातफरी का माहौल बन गया। इसके बावजूद नगर पंचायत कर्मियों ने सार्वजनिक जमीन पर किये जा रहे अतिक्रमण को जेसीबी मशीन चलाकर गिरा दिया। अधिशासी अधिकारी मधुसूदन जायसवाल ने बताया कि एफआईआर की कार्रवाई के लिए लिखित शिकायत दी जा चुकी है।

# विधायक, डीएम, एसपी द्वारा द्वारा सलैया बुजुर्ग बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को दिये गये आवश्यक दिशा निर्देश

संस्कार उजाला

**क्राईम ब्यूरो विकास कुमार हलचल।** ओबरा सोनभद्र। उरई(जालौन)। माधौगढ़ विधायक मूलचंद निरंजन, जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय व पुलिस अधीक्षक डॉ.दुर्गेश कुमार ने जनपद की कोंच तहसील क्षेत्र के सलैया बुजुर्ग बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण कर सम्बंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान जिलाधिकारी द्वारा तहसील कोंच के संभावित बाढ़ प्रभावित ग्राम सलैया बुजुर्ग का भ्रमण कर निरीक्षण किया तथा ग्रामीणों से स्थिति की जानकारी ली। जिलाधिकारी ने कहा कि संभावित बाढ़ को देखते हुए पर्याप्त संख्या में नावों की व्यवस्था व एसडीआरएफ टीम तैनात कर दी गई है, जिससे आवश्यकता पड़ने पर बाढ़ प्रभावितों को सुगमता से सुरक्षित स्थल पर बनाई गई राहत शिविर उच्च प्राथमिक विद्यालय में विस्थापित किया जा रहा है। जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिए कि ग्रामीणों को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो इसके लिए स्वास्थ्य शिविर लगाया जाए, राहत शिविर पर आवश्यकता अनुसार चिकित्सा टीम तैनात कर दी जाए तथा यहां प्रयाप्त मात्रा में सभी आवश्यक दवाइयां उपलब्ध रहें, आवश्यकतानुसार लोगों को सुविधा उपलब्ध कराई जाए। ग्रामीणों को बेहतर से बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा सरकार द्वारा दी जा रही विभिन्न सेवाओं का सुगमता से पहुंचाना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। गांव के प्रभावित व्यक्तियों को राहत शिविर में पहुंचा जा रहा है उनके खाने-पीने का इंतजाम की व्यवस्था के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। पशुओं को भी सकुशल सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया है उनके समुचित व्यवस्था जैसे भूसा, चारा, घास आदि की व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया। जिलाधिकारी ने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि वह अपने-अपने क्षेत्र में लगातार भ्रमण करते रहें। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व संजय कुमार, उप जिलाधिकारी कोंच ज्योति सिंह, क्षेत्राधिकारी अर्चना सिंह ग्राम प्रधान कल्लू शिवहरे,डी, एन, शिवहरे,सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

### स्थानीय चक्रवात से आधा दर्जन घर के छप्पर उड़े,7 लोग घायल

**माधौगढ़**-कल रात से होने वाली बारिश ने जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया। लोगों का जीना-मुहाल हुआ जा रहा है। लेकिन इस बीच दोपहर के समय स्थानीय चक्रवात आने के कारण माधौगढ़ थाना के खुदातपुरा गांव में कई घरों के छप्पर और टीन उड़ गए जबकि उसमें फंस कर 7 लोग घायल हो गए। चक्रवात के कारण गांव के आसपास तमाम पेड़ उखड़ गए। जिसके कारण गांव का कई मार्गों से संपर्क कट गया। घटना की सूचना पर नायब तहसीलदार वैभव गुप्ता और लेखपाल मंसूर खान ने मौके पर पहुंचकर जांच की। स्थानीय चक्रवात में महक,शिवानी,कमला देवी,करन सहित 7 लोग घायल हो गए। घायलों में 5 बच्चे तो स्कूल में लंच के समय फील्ड में थे,तभी वह चक्रवात में फंस कर जमीन से 3-4 फुट ऊपर आसमान में चक्कर लगाने के बाद नीचे गिरने से घायल हो गए। कई मकानों के टीन शेड और छप्पर उड़ गए। कई पेड़ उखड़ गए। प्रशासन ने घटना की जांच कर सरकारी सहायता के लिए शासन को जानकारी दी है।

# सेमीकंडक्टर निर्माण व विकास के क्षेत्र में भारत की अब तक की यात्रा अकल्पनीय होने के साथ ही अद्भुत गति से बढ़ रही है आगे

संस्कार उजाला

**गाजियाबाद (आशा चौधरी)**

भारत अब दुनिया में केवल ग्लोबल लीडर ही नहीं, बल्कि मार्केट की सबसे प्रमुख जरूरत यानी सप्लाई चेन की दिशा में भी दिग्गज बनने की ओर तेजी से बढ़ चला है। आज पूरी दुनिया भारत को न केवल सेमीकंडक्टर विनिर्माण के क्षेत्र में अग्रणी बनते देखना चाहती है बल्कि वैश्विक सप्लाई चेन में उसकी प्रमुख भूमिका को लेकर न केवल आश्वस्त है बल्कि इसके लिए सभी तरह के समन्वय के लिए भी प्रतिबद्ध है। बुधवार को ग्रेटर नोएडा के एक्सपो मार्ट में आयोजित सेमीकॉन इंडिया 2024 में शिरकत करते हुए सेमीकंडक्टर सेक्टर के ग्लोबल लीडर्स ने इन्हीं विषयों पर सबसे ज्यादा फोकस किया। साथ ही, पूरी दुनिया को ग्रोथ के लिए 'मोदी लॉ' पर फोकस करने की नसीहत दी। ये मोदी लॉ दरअसल प्रधानमंत्री जी की नीतियां हैं जो किसी भी इंडस्ट्री के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण है। सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में एक्सपोनेंशियल ग्रोथ के अवसर हैं और पीएम मोदी का विजन इस पर ही सबसे ज्यादा फोकस करता है। इसी बात को ग्लोबल लीडर्स ने सबसे ज्यादा सराहा और प्राथमिकता दी। मोदी लॉ पूरी दुनिया का मार्ग कर रही प्रशस्त सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री में ग्लोबल कोलैबोरेशन की दिशा में काम करने ग्लोबल एसोसिएशन सेमी के प्रेसीडेंट व सीईओ अजीत मनोचा ने कहा कि यह अकल्पनीय होने के साथ अद्भुत है। सेमीकॉन कई देशों में आयोजित हो चुके हैं मगर भारत में यह पहला संस्करण है और अन्य देशों की तुलना में यह चार से पांच गुना ज्यादा बड़ा आयोजन है। यह भारत की अनप्रेसिडेंटेड कैपेबिलिटीज को दशार्ता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि सभी सीईओ व बिजनेस लीडर्स इस बात पर सहमत हैं कि भारत में सेमीकंडक्टर निर्माण व सप्लाई चेन को बढ़ावा मिलना चाहिए। यह भारत की लीडरशिप और विजन के कारण हो सका जिसने पूरी दुनिया को प्रभावित किया है। हमें मोदी लॉ की बात करनी होगी। मोदी लॉ एक्सपोनेंशियल ग्रोथ पर फोकस करता है। हमें इस विजन को सच बनाना होगा क्योंकि यह न केवल भारत, न केवल विश्व बल्कि पूरी मानवता की उन्नति का

मार्ग है। सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री में होने वाली उपलब्धि पूरे इंडस्ट्री सेक्टर में उपलब्धियों के द्वार खोलने का आधार बनती हैं। 20 वर्ल्ड कप जीतने वाली टीम की तरह मिलकर करना होगा कार्य टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स के सीईओ डॉ. रणधीर ठाकुर ने कहा कि पीएम मोदी ने देश के पहले कॉमर्शियल फैब का धोलेरा गुजरात व देश की पहली इंडीजीनियस ओसीइएट इंडस्ट्री का जागीरोड़ असम में फाउंडेशन स्टोन रखा। यह दोनों प्रोजेक्ट भारत सरकार से रिकॉर्ड समय के अंदर स्वीकृत हुए जिसने एक बेंचमार्क स्थापित किया है। यह भारत के सेमीकंडक्टर मिशन के अंतर्गत संभव हुआ। चिप कंडक्टर के निर्माण से हजारों सोफेस्टिकेटेड सेमीकंडक्टर पार्टनर्स की जरूरत होती है जो टीम की तरह काम करती है। कुल 11 महत्वपूर्ण घटकों के जरिए चिप निर्माण पूरा होता ह जिसमें डिजाइन, सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर्स व लॉजिस्टिक्स महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि आज भारत सरकार की पहल से ये सभी जरूरी 11 इकोसिस्टम के प्रतिनिधि कार्यक्रम में सम्मिलित हैं जो एक बड़ी उपलब्धि है। हम सभी पार्टनर्स के साथ कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमें साथ मिलकर टी20 वर्ल्ड कप जीतने वाली भारतीय टीम की तरह मिलकर कार्य करना होगा। यह पीएम मोदी के ग्लोबल रीच, विजन व सेमीकंडक्टर मिशन के कारण ही संभव हो पाया है। टाटा ही देश में स्टील इंडस्ट्री लेकर आई थी और अब हम देश में सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम विकसित करने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं। इस प्रक्रिया से हम पचास हजार रोजगार उपलब्ध कराने में सक्षम हो सकेंगे। प्रत्येक सेमीकंडक्टर रिलेटेड जॉब अपने साथ 10 अन्य रोजगार के अवसरों का माध्यम भी बनेगा। यही समय है सही समय है, भारत का अनमोल समय है। तीन एट्रीब्यूट्स के जरिए सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री में मिलती है सफलता एनएक्सपी सेमीकंडक्टर्स के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर व सीईओ कर्ट सीवर्स ने कहा कि एंबीशन,ट्रस्ट व कोलैबोरेशन वह तीन एट्रीब्यूट्स हैं जिनके जरिए सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री में सफलता का मार्ग सुनिश्चित होता है। ये स्प्रिंट नहीं मैराथन है। पचास सालों से हमारी भारत में उपस्थिति है और पिछले कुछ वर्षों में हुआ बदलाव अकल्पनीय है। यह भारत को इकॉनमी के लिहाज से बहुत समृद्ध व ताकतवर बना रहा है। इनोवेशन, डेमोक्रेसी और ट्रस्ट वो मैजिक मंत्र है जिसपर चलकर देश के उद्योग प्रगति करते हैं। हम भारत में हैं, भारत के साथ हैं और प्रतिबद्ध हैं। भारत में उपस्थिति बढ़ाने पर रेनेसॉ का जोर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी ऑटोमोटिव सेमीकंडक्टर कंपनी व विश्व की सबसे बड़ी माइक्रोकंट्रोलर सप्लायर के रूप में प्रसिद्ध रेनेसॉ इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन के प्रेसीडेंट व सीईओ हितोशी शिबाता ने कहा कि रेनेसा इलेक्ट्रॉनिक्स जापान, दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इंबेडेड सेमीकंडक्टर सॉल्यूशंस प्रोवाइडर हैं। हमें भारत में पहला प्लांट लगाने में सफलता मिली है। हम बेंगलुरु, दिल्ली, नोएडा व हैदराबाद में अपनी उपस्थिति बढ़ा रहे हैं। दुनिया का पहला 300 मिलीमीटर कॉमर्शियल सेमीकंडक्टर पाथ हमने ही बनाया था। हमें सेमीकंडक्टर टेक्नोलॉजी की जटिलताओं की अच्छे से जानकारी है। हम भारत के इस सपने को साकार करने में अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और मोदी लॉ को वास्तविकता बनाने पर कार्य करेंगे। आईमैक से स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप में दिखाई रुचि सेमीकंडक्टर्स के क्षेत्र में दुनिया के सबसे बड़े रिसर्च एंड डेवलपमेंट हब के तौर पर प्रसिद्ध आईमैक के प्रेसीडेंट व सीईओ, लूकवॉडन हॉल ने कहा कि हम भारत की सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग को बूस्ट करने के लिए तैयार है। आईमैक स्ट्रैटिज साझेदारी के लिए तैयार है। यह केवल भारत नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लिए जरूरी है क्योंकि एक रिलायबल सप्लाई चेन चाहिए जिसकी कमी दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के तौर पर भारत के अलावा कौन प्रस्तुत कर सकता है। सौजन्य से सूचना विभाग गौतम बुद्ध नगर।

# उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने दिया निवेशकों को प्रदेश में हर संभव मदद का भरोसा

## सेमीकॉन इंडिया 2024 के उद्घाटन के अवसर पर मुख्यमंत्री ने इन्वेस्टर्स से की मुलाकात

- मुख्यमंत्री ने सुरक्षित निवेश के साथ प्रदेश में अन्य आवश्यक सुविधाएं देने का दिया आश्वासन
- इन्वेस्टर्स ने माना देश और प्रदेश में बढ़ा रहा है सेमीकंडक्टर का स्कोप
- निवेशकों ने उत्तर प्रदेश को निवेश का बेहतरीन गंतव्य करार दिया

संस्कार उजाला

ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो मार्ट में सेमीकॉन इंडिया 2024 के उद्घाटन के अवसर पर मा0 मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ग्लोबल लीडर्स और इन्वेस्टर्स के साथ वन टू वन मुलाकात भी की। इस दौरान उन्होंने इन्वेस्टर्स को प्रदेश में सुरक्षित निवेश के साथ-साथ हर तरह की सुविधाएं प्रदान करने का भरोसा दिलाया। वहीं इन्वेस्टर्स ने भी इस इवेंट को महत्वपूर्ण बताया, जबकि उन्होंने उत्तर प्रदेश को निवेश का बेहतरीन गंतव्य करार दिया। देशी और विदेशी दोनों इन्वेस्टर्स ने माना कि भारत में सेमीकंडक्टर का काफी स्कोप है और भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में जल्द ही भारत सेमीकंडक्टर का हब बन सकता है। भारत में बढ़ा सेमीकंडक्टर

का स्कोप हमारी साउथ कोरिया की कंपनी है। भारत में सेमी कंडक्टर का स्कोप ज्यादा है। भारत की हाल के वर्षों में तरक्की पूरी दुनिया ने देखी है। यहां लोग उन्नत तकनीक अपना रहे हैं, जिसकी वजह से सेमीकंडक्टर का स्कोप लगातार बढ़ता जा रहा है। डेहून ली, हानयांग इंजीनियरिंग भारत में तेजी से बढ़ेगा सेमीकंडक्टर उद्योग भारत में सेमीकंडक्टर का बिजनेस भले ही अभी छोटा है, लेकिन उम्मीद है कि मोदी के विजन से यह बहुत जल्द बहुत बड़ा हो जाएगा। भारत में पहली बार इस तरह का इवेंट हो रहा है। दुनिया के अलग-अलग देशों से कंपनियां आई हैं। यह प्रभावित करने वाला है। केन उकावा, सिंगापुर यूपी में सुधरी कानून व्यवस्था तो बढ़ रहा निवेश उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के राज में कानून व्यवस्था में बड़ा सुधार हुआ है, जिसके कारण विदेशी कंपनियां भी निवेश के लिए उत्तर प्रदेश आ रही हैं। हमारी कंपनी लगातार साल दर साल यहां निवेश बढ़ा रही है। राहुल, जर्मन कंपनी विस्को टेक के प्रतिनिधि यूपी को लेकर निवेशकों में उत्साह यूपी में निवेश करना अब बहुत अच्छा हो गया है, क्योंकि सरकार यहां जिस तरह सुविधाएं उपलब्ध करा रही है वह निवेश बढ़ाने के लिहाज से बहुत अच्छा कदम है। योगी जी ने जिस तरह सहयोग का भरोसा दिया है, उससे निवेशकों में उत्साह है, जो राज्य में निवेश बढ़ाने को लेकर काफी कारगर साबित होगा। अलंकार ढोब्ले, पिनेटिक्स सौजन्य से सूचना विभाग गौतम बुद्ध नगर।

## संक्षिप्त डायरी

### पांच दिवसीय कोर्स) भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 पर सीडीटीआई गाजियाबाद में चल रही है

संस्कार उजाला

**गाजियाबाद (आशा चौधरी)**

दिनांक 9,9,24 से 13,9,24 तक (पांच दिवसीय कोर्स)भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 पर सीडीटीआई गाजियाबाद में चल रहा है जिसमें 27 अधिकारी ऑफलाइन एवं 61 अधिकारी ऑनलाइन जुड़े हुए हैं।कोर्स में न्यायायिक अधिकारी अभियोजन अधिकारी एनएसजी,आरपीएफ,एस एसबी,आइटीबीपी एवं अलग-अलग राज्यों के पुलिस अधिकारी हैं जिसमे उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड,दिल्ली,पंजाब,राजस्थान मध्य प्रदेश, नागालैंड,आंध्र प्रदेश, झारखंड,महाराष्ट्र,वेस्ट बेंगाल आदि से है। कोर्स कोआर्डिनेटर ब्रह्मपाल सिंह बालियान पुलिस उपाधीक्षक सीडीटीआई गाजियाबाद है। इसके अलावा एक पांच दिवसीय कोर्स दिनांक 9/9/2024 से 13/9/2024 तक कानून व्यवस्था की स्थिति आदि को कैसे नियंत्रण करे जिसमें पुलिस और अर्ध सैनिक बल 24 अधिकारी हैं कोर्स कोआर्डिनेटर अमित कुमार निरीक्षक सीडीटी आई गाजियाबाद है।

# धर्म परिवर्तन कर विवाह करने वाले दंपत्ति के विरुद्ध एफआईआर निरस्त - हाइकोर्ट

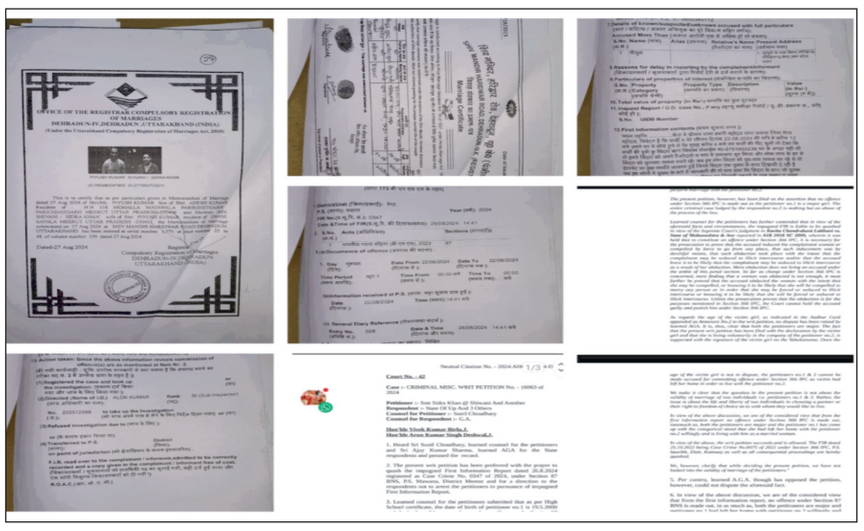

संस्कार उजाला

**मेरठ** जिले के थाना मवाना के अंतर्गत सहिम खान ने अपनी बेटी के रात में गायब होने पर सुबह खोजबीन में पता चला कि उनकी बेटी सिदरा खान ने पीयूष कुमार निवासी किलापरिछतगढ़ के साथ फोटो इंटरनेट में वायरल है तब पिता ने थाना मवाना,मेरठ में बेटी को बहलाफुसला धर्मांतरण कराकर शादी के प्रयोजन से अपहरण करने के संदर्भ में मुकदमा पंजीकृत कराया ।दोनों प्रेमी जोड़ों ने इलाहाबाद हाई कोर्ट में अपने अधिवक्ता सुनील चौधरी के द्वारा एफ आई आर को निरस्त किए जाने की याचिका दाखिल की ।याचिका पर सुनवाई न्यायमूर्ति बी के बिरला व ए के सिंह देशवाल के समक्ष हुई ।याची के अधिवक्ता ने बताया कि दोनों बालिक है दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं सिदरा खान ने अपना धर्म परिवर्तन कर नाम बदलकर शिवानी के नाम से हिंदू धर्म को अपना लिया है कन्वरजन सर्टिफिकेट दिल्ली की संस्था ने दिया है ।फिर दोनो ने भागकर शिवमंदिर हरिद्वार में शादी कर लिया और दोनों ने रजिस्टर्ड मैरिज उत्तराखंड रजिस्टार से भी प्राप्त कर लिया है और पति पीयूष की जान का खतरा बना है ।इसके पश्चात माननीय उच्च न्यायालय ने एक अन्य केस का हवाला देते हुए पीयूष कुमार के विरुद्ध अपहरण का दर्ज मुकदमा को निरस्त कर दिया और लड़की के पिता को छूट दिया है कि अगर कोई गलत तथ्य न्यायालय में दाखिल किया गया है तो 6 सप्ताह में रिकॉल एप्लीकेशन दाखिल कर सकते है। Mob 9335154152

# बिजली चोरी के खिलाफ विभाग का ताबड़तोड़ एक्शन

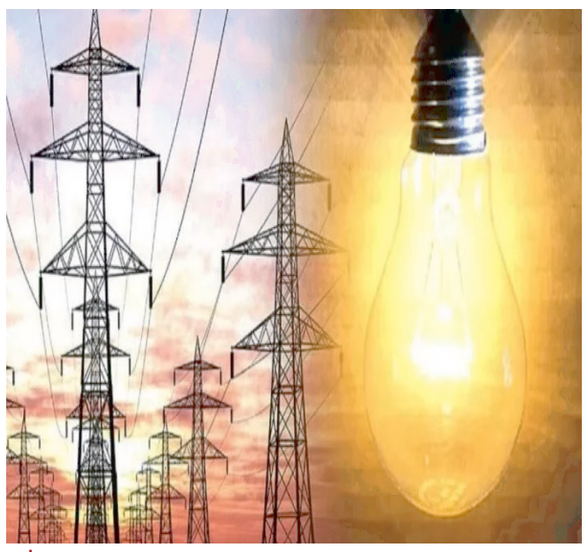

संस्कार उजाला

**साहिबाबाद।** विद्युत निगम ने अगस्त में 371 बिजली चोरों को पकड़ा है। ये विभिन्न तरीकों से बिजली चोरी कर रहे थे। इन पर विद्युत निगम ने करीब 57 लाख रुपये का जुमार्ना लगाया है। विद्युत निगम के अधिकारियों का कहना है कि सुबह में छापेमारी कर कार्रवाई की जा रही है। अधिक चोरी वाले इलाकों में प्राथमिकता के साथ कार्रवाई की जा रही है। जो भी बिजली चोरी करते पाया जा रहा है उस पर मुकदमा दर्ज करते हुए जुमार्ना लगाया जा रहा है।

# महापौर ने CM योगी को लिखा पत्र

संस्कार उजाला

**गाजियाबाद।** डीएम सर्किल रेट बढ़ने के बाद नगर निगम की ओर से संपत्ति कर बढ़ाए जाने को लेकर प्रयास आरंभ कर दिए गए हैं। महापौर सुनीता दयाल ने इस मामले में मुख्यमंत्री और भाजपा संगठन के पदाधिकारियों को पत्र भेजकर कहा है कि इससे शहर की जनता में भय का माहौल है। इससे प्रदेश और केंद्र सरकार के विरुद्ध माहौल बनने की संभावना है। उन्होंने बताया कि नगर निगम की ओर से अधिकारी नियम विरुद्ध संपत्ति कर बढ़ाकर जमा कराने के लिए नोटिस भेज रहे हैं। नगर आयुक्त द्वारा डीएम सर्किल रेट के आधार पर बढ़ी दरों से संपत्ति कर जमा कराने के लिए शहर में रेडियो पर अनाउंसमेंट कराया जा रहा है।

# वैशाली सेक्टर 5 स्थित युवान कराटे स्कूल गाजियाबाद के 11 खिलाड़ियों ने किया बेल्ट परीक्षा पास

संस्कार उजाला

**गाजियाबाद (आशा चौधरी)**

युवान कराटे स्कूल के अध्यक्ष एवं मुख्य कोच कृष्ण रावत ने बताया की यह बेल्ट प्रशिक्षण लगभग 2 घंटे चला जिसमें येलो बेल्ट कियान ताड़ियल ने अच्छे अंक से हासिल की ' रिहान शर्मा, संस्कृति जोशी, विवान चौधरी ने ऑरेंज बेल्ट टेस्ट पास किया ' और वहीं दूसरी तरफ जूनियर ग्रीन फर्स्ट के लिए वैभव, जैत्र शाही, शिवांश झा, नील सिद्धांत और आरव गुप्ता ने बेल्ट परीक्षा अच्छे अंकों से पास की ' इस मौके पर युवान कराटे स्कूल के सभी पदाधिकारी लक्ष्मी वर्मा, डॉक्टर अंकुर गौर, डॉ नितिन मोरल, महेश सोनी, राधा चौधरी ने सभी खिलाड़ियों को बधाई दी एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना की जिससे सभी खिलाड़ियों में हर्षोल्लास है '

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक राजकुमार शर्मा ने वैकुंठ मीडिया प्राइवेट लिमिटेड सी -285, सेक्टर-11, विजय नगर, गाजियाबाद से छपवाकर कार्यालय 178 राहुल विहार विजय नगर,गाजियाबाद से प्रकाशित किया है। किसी खबर या लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सभी विवादों का निस्तारण जिला न्यायालय गाजियाबाद में होगा। प्रबंध संपादक-महेश कुमार - 9911733939, कानूनी सलाह- नरेंद्र सिंह रणोत एडवोकेट, सलाहकार कुशल सिंह, RNI No-UPHIN/2013/50466, Editor R.K. Sharma : 09456278011